मङ्गुलीभिरुपेताभ्यां क्षितितलतारागणमिव नखमणिमण्डलमुद्वहद्भ्यां विद्रुमरस-नदीमिव चरणाभ्यां प्रवर्त्तयन्तीम्, (झ) नूपुर-मणि-किरण-चक्रवालेन गुरु-नितम्ब-भर-खिन्नोरुयुगल-साहाय्यतामिव कर्त्तुमुद्गच्छता स्पृश्यमानजघनभागाम्,(ञ) प्रजापति-कर-दृढ़-निपीड़ित-(१) मध्यभाग-गलितं जघन-शिलातल-प्रतिघाताल्लावण्यस्रोत इव द्विधागतमूरुद्वयं दधानाम्, (ट) सर्वतः प्रसारित-दीर्घ-मयूख-मण्डलेनेर्ष्यया परपुरुषदर्शनमिव निरुन्धता (२) कुतूहलेन विस्तारमिव तन्वता

भूतरक्तसमूहं, उद्वहद्भ्यां धारयद्भ्यां, चरणाभ्यां करणाभ्यां, विद्रुमरसस्य प्रवालद्रवस्य नदीं प्रवर्त्तयन्तीमव-तारयन्तीमिव स्थितां कादम्बरीम्। अत्र क्रियोत्प्रेक्षालङ्कारः।

(ञ) नूपुरेति। गुर्वोर्विशालयोर्नितम्बयोर्भरेण भारेण खिन्नं क्लान्तं यदूरुयुगलं तस्य साहायतां आश्रितनितम्बभारवहनेन साहाय्यं, कर्त्तुमिव उद्गच्छता, नूपुरयोर्मणिकिरणानां चक्रवालेन मण्डलेन स्पृश्य-मानौ जघनभागौ यस्यास्ताम्। अत्र क्रियारूपफलोत्प्रेक्षालङ्कारः।

(ट) प्रजेति। प्रजापतेः स्रष्टुः कराभ्यां पाणिभ्यां दृढ़निपीड़िती निर्माणकाले अतीवकृशताविधा-नाय नितान्तनिर्यातितो यो मध्यभागः कटिदेशस्तस्मात् गलितं, अथ च जघनमेव शिलातलं विशालत्वात् कठिनत्वाच्चेति भावः, तेन प्रतिघाताद्धेतोः द्विधागतं द्विधाविभक्तं लावण्यस्रोत इव, ऊरुद्वयं दधानाम्। अत्र निरङ्गकेवलरूपकसङ्कीर्णा जात्युत्प्रेक्षालङ्कारः। तेन च कटिदेशस्य नितान्तकृशत्वं, जघनदेशस्य विशालत्वं कठिनत्वञ्च, ऊरुयुगलस्य च लावण्यमयत्वं व्यज्यत इत्यलङ्कारेण वस्तुध्वनिः।

(ठ) सर्वत इति। सर्वतः प्रसारितं समन्ताद्विस्तारितं मयूखमण्डलं येन तेन, अतएव ईर्ष्यया परपुरुषदर्शनं निरुन्धतेव स्वावरणादिति भावः, कुतूहलेन विस्तीर्णस्यापि विस्तारं तन्वता कुर्वतेव स्वकिरणै-रिति भावः, तथा स्पर्शसुखेन रोमाञ्चं सृजता त्यजतेव स्वकिरणेषु रोमाञ्चभ्रमं जनयतेत्यर्थः, काञ्चीदाम्ना

ধারা যেন পড়িতেছে এবং পরিহিত রক্তবর্ণ বস্ত্রের দশাগুলির অগ্রভাগ যেন লম্বিত হইয়া রহিয়াছে; আর সেই অঙ্গুলীগুলি, চরণালঙ্কারের রক্তবর্ণ কিরণমালার ভ্রম জন্মাইতেছিল এবং অত্যন্ত কোমল বলিয়া নখরন্ধ্র দ্বারা যেন রুধির-ধারা বমন করিতেছিল। (ঞ) তাহার উরু-যুগল, বিশাল নিতম্বযুগলের ভারে ক্লান্ত হইয়া পড়িয়াছিল; সুতরাং তাহাদের সহায়তা করিবার নিমিত্তই যেন নূপুরমণি হইতে কিরণমণ্ডল উত্থিত হইয়া, জঘন-স্থল স্পর্শ করিতেছিল। (ট) কাদম্বরীকে নির্ম্মাণ করিবার সময়ে বিধাতা, হস্তদ্বারা তাহার কটিদেশটিকে দৃঢ়ভাবে নিপীড়িত করিয়াছিলেন; সুতরাং তাহা হইতে বিগলিত এবং জঘনরূপ শিলাতলের প্রতিঘাতে দুইভাগে বিভক্ত লাবণ্যস্রোতের ন্যায় উরুযুগল তিনি ধারণ করিতেছিলেন। (ঠ) এক ছড়া চন্দ্রহারে কাদম্বরীর নিতম্বমণ্ডল পরিবেষ্টিত ছিল; তাহা হইতে আয়ত কিরণশ্রেণী চতুর্দ্দিকে প্রসারিত হইয়াছিল; সুতরাং সেই চন্দ্রহার যেন ঈর্ষ্যাবশতঃ পরপুরুষের দর্শন নিবারণ করিতে-

---

(১)...নিষ্পীড়িত...। (২) রুন্ধতা।

स्पर्शसुखेन रोमाञ्चमिव मुञ्चता काञ्चीदाम्ना नितम्बविम्बस्य विरचित-परिवेषाम्, (ठ) निपतित-सकल-लोक-हृदय-भरेणेवातिगुरुनितम्बाम्, (ड) उन्नतकुचान्तरित-मुख-दर्शन-दुःखेनेव क्षीयमाण-मध्यभागाम्, (ढ) प्रजापतेः स्पृशतोऽतिसौकुमार्य्यात् (१) अङ्गुलीमुद्रामिव निमग्नां नाभिमण्डलीं (२) आवर्त्तिनीमुद्वहन्तीम्, (ण) त्रिभुवन-विजय-प्रशस्ति-वर्णावलीमिव लिखितां मन्मथेन रोमराजि-मञ्जरीं बिभ्राणाम्, (त) अन्तःप्रविष्ट-कर्ण-पल्लव-प्रतिबिम्बेनातिभर-(३) खिद्यमान-हृदय-करतल-प्रेर्य्यमाणेनेव निष्पतता मकरकेतु-

रशनागुणेन नितम्बविम्बस्य विरचितः कृतः परिवेषः परिवेष्टनं यस्यास्ताम्। अत्र तिस्र एव क्रियोत्प्रेक्षाः, रोमाञ्चमित्यादौ वृत्त्यनुप्रासश्छेकानुप्रासश्चेत्येतेषां मिथो निरपेक्षतया संसृष्टिः।

(ड) निपतितेति। निपतितानि परमसुन्दरत्वादारूढानि सकलानां लोकानां यानि हृदयानि मनांसि तेषां भरेण भारेणेव अतिगरू नितम्बौ यस्यास्ताम्। अत्र हेतूत्प्रेक्षालङ्कारः।

(ढ) उन्नतेति। उन्नताभ्यां कुचाभ्यां अन्तरितं स्वीयत्वाद्व्यवहितं यस्य मुखदर्शनं तस्य दुःखेनेव हेतुना क्षीयमाणो मध्यभागः कटिदेशो यस्यास्ताम्। अत्रापि पूर्ववदेव हेतूत्प्रेक्षालङ्कारः।

(ण) प्रजेति। अतिसौकुमार्य्यात् कादम्बरीशरीरस्य नितान्तकोमलत्वाद्धेतोः, स्पृशतो निर्माणकाले धारयतः प्रजापतेर्विधातुः निमग्नां शरीरे प्रविष्टां अङ्गुल्या अङ्गुष्ठस्य मुद्रां चिह्नमिव आवर्त्तिनीं आवर्त्तवन्मध्यगर्त्तां नाभिमण्डलीं उद्वहन्तीं धारयन्तीम्। अत्र जात्युत्प्रेक्षालङ्कारः।

(त) त्रिभुवनेति। मन्मथेन लिखितां आत्मनस्त्रिभुवनविजयस्य प्रशस्तिवर्णावलीं श्लाघासूचकाक्षरश्रेणीमिव रोमराजिमञ्जरीं बिभ्राणां दधानाम्। जात्युत्प्रेक्षा।

(थ) अन्तरिति। अन्तःप्रविष्टं स्वच्छत्वादन्तर्गतं कर्णपल्लवप्रतिबिम्बं यस्य तेन, एतदेव प्रतिबिम्बं हृदयस्य हस्तस्थानीयमिति कवेरभिप्रायः। अतिभरेण स्तनयोरत्यन्तभारेण खिद्यमानं यत् हृदयं वक्षस्तेन

ছিল; কৌতুকবশতঃ সেই নিতম্বমণ্ডলের আরও যেন বিস্তার জন্মাইতেছিল এবং স্পর্শসুখদ্বারা রোমাঞ্চই যেন উৎপাদন করিতেছিল। (ড) সকল লোকের মন যাইয়া আরোহণ করিয়াছিল বলিয়া সেই ভারেই যেন কাদম্বরীর নিতম্বমণ্ডল, অত্যন্ত ভারী হইয়াছিল। (ঢ) উন্নতস্তনমণ্ডলে মুখদর্শনের ব্যবধান করিয়াছিল বলিয়া, সেই দুঃখেই যেন কাদম্বরীর কটিদেশ ক্ষীণ হইতেছিল। (ণ) কাদম্বরী, নদীর জলাবর্ত্তের ন্যায় যে নাভিমণ্ডল ধারণ করিতেছিলেন; তাহা দেখিয়া, বোধ হইত যে,—তাঁহার শরীর অত্যন্ত কোমল ছিল বলিয়া, বিধাতা যখন তাঁহাকে নির্ম্মাণ করিতেছিলেন, তখন তাঁহার অঙ্গুষ্ঠের চিহ্নই যেন নিমগ্ন হইয়াছিল; (ত) কাদম্বরী, যে লোমশ্রেণী ধারণ করিতেছিলেন; সে গুলিকে বোধ হইত, যেন, কামদেব নিজের ত্রিভুবনবিজয়ের কীর্ত্তিসূচক বর্ণাবলী লিখিয়া রাখিয়াছেন। (থ) কাদম্বরীর স্তনমণ্ডলের ভিতরে, কর্ণপল্লবের প্রতিবিম্ব পড়িয়াছিল, এবং সেই স্তনমণ্ডল, কামদেবের পাদপীঠের

(१) सौकुमार्य्यात्। (२) नाभिमण्डलं, नाभिमण्डलीं। (३)...भर...।

पादपीठेन स्तनभरेण भूषिताम्, (थ) अधोमुख-कर्णाभरण-मयूखाभ्यामिव प्रसृताभ्याममल-लावण्य-जल-मृणाल-काण्डाभ्यां (१) बाहुभ्यां नख-किरण-विसर-वर्षिणा च माणिक्यवलयगौरवश्रमवशात् स्वेदजल-धाराजालकमिव मुञ्चता कर-युगलेन समुद्भासिताम्, (द) स्तनभारावनम्यमानमाननमिवोन्नमयता हारि-णोर्द्ध्वैः (२) करैर्गृहीत-चिबुकदेशाम्, (ध) अभिनवयौवनपवनक्षोभितस्य राग-

---

कर्त्ता करतलेन करणेन प्रेर्य्यमाणेन नोद्यमानेन, अतएव च निष्पतता निर्गच्छता, मकरकेतोर्मदनस्य पादपीठेनेव स्थितेन स्तनभरेण भारवत् कुचमण्डलेन भूषिताम्। अत्र जात्युत्प्रेक्षालङ्कारः। तेन च स्तनयोः स्वच्छत्वं मदनोद्दीपकत्वं गुरुत्वञ्च व्यज्यत इत्यलङ्कारेण वस्तुध्वनिः।

(द) अधोमुखेति। प्रसृताभ्यां बहुदूरं यावद्विस्तृताभ्यां, अधोमुखयोः कर्णाभरणयोः स्वर्णनिर्म्मित-कर्णालङ्कारयोः मयूखाभ्यां स्थूलकिरणाभ्यामिव स्थिताभ्यां। अत्र जात्युत्प्रेक्षालङ्कारः, तेन च बाह्वोः स्वच्छत्वं व्यज्यते। तथा अमलं यत् लावण्यमेव जलं तस्य मृणालकाण्डाभ्यां मृणालदण्डरूपाभ्यां बाहुभ्यां समुद्भासितामित्यन्वयः। अत्र परम्परितरूपकमलङ्कारः। तेन च बाह्वोः कोमलत्वं व्यज्यते। तथा नख-किरणानां विसरं समूहं वर्षतीति तेन, अतएव माणिक्यवलययोर्मणिमयकटकयोः गौरवेण भारेण यः श्रम-स्तद्वशात् एतेन सौकुमार्य्यातिशयो व्यज्यते, स्वेदजलधाराणां जालकं समूहमिव मुञ्चता करयुगलेन च समुद्भासितां शोभिताम्। अत्र नखकिरणविसरे स्वेदजलधाराजालकत्वमुत्प्रेक्षितमिति जात्युत्प्रेक्षा-लङ्कारः।

(ध) स्तनेति। स्तनयोर्भारेणावनम्यमानं आननं वदनं उन्नमयतेव स्थितेन, हारेण कर्त्रा, ऊर्द्ध्वै-रुत्तोलितैः, करैः किरणैरेव हस्तैः करणैः, गृहीतश्चिबुकदेशः अधराधोभागो यस्यास्ताम्। अत्र क्रियोत्-प्रेक्षा करशब्दश्लेषाभेदाध्यवसायमूलातिशयोक्तिश्चानयोरङ्गाङ्गिभावेन सङ्करः।

ন্যায় ভারী ছিল; সুতরাং তাহার অত্যন্ত ভারে পরিশ্রান্ত হইয়া হৃদয় যেন হস্তদ্বারা সেই পাদপীঠ খানাকে ঠেলিয়া দিতেছিল; তাহাতে সেই পাদপীঠ খানা যেন ক্রমে নির্গত হইতেছিল। (দ) কাদম্বরীর বাহু দুইটি যেন, তাহার অধোমুখ কর্ণাভরণের বিস্তৃত দুইটি কিরণপুঞ্জ এবং নির্ম্মল লাবণ্য-জলের দুইটি মৃণালস্বরূপ বোধ হইতেছিল; আর তাহার করযুগল, নখের কিরণ ছড়াইতেছিল; তাহাতে বোধ হইতেছিল যেন মণিময় বলয়ের ভারে যে পরিশ্রম হইয়াছিল, তাহাতেই সেই করযুগল ঘর্ম্মজল বর্ষণ করিতেছে; সেই বাহুযুগল ও করযুগলে কাদম্বরী বিশেষ শোভা পাইতেছিল। (ধ) স্তনযুগলের ভারে কাদম্বরীর মুখমণ্ডল, অবনত হইয়াছিল; সুতরাং তাহার হার ছড়া যেন সেই মুখমণ্ডল পুনরায় উন্নত করিবার নিমিত্ত, কিরণময় হস্ত উত্তোলন করিয়া, তাহার চিবুকদেশ ধারণ করিয়াছিল। (ন) কাদম্বরীর ওষ্ঠযুগল, প্রবালের

---

(१)...मृणालकाण्डाभ्यामिव। (२) ऊर्द्ध्वैः।

सागरस्य तरङ्गाभ्यामिवोद्गताभ्यां विद्रुमलतालोहिताभ्यामधराभ्यां रक्तावदात-स्वच्छकान्तिना च मदिरारसपूर्णमाणिक्य-शुक्तिसम्पुटच्छविना कपोलयुगलेन रति-परिवादिनी-रत्नकोण-चारुणा नासावंशेन च विराजमानाम्, (न) गति-प्रसरनिरोधिश्रवणकोपादिव किञ्चिदारक्तापाङ्गेन निजमुखलक्ष्मीनिवासदुग्धो-दधिना लोचनयुगलेन लोचनमयमिव जीवलोकं कर्त्तुमुद्यताम्, (प) उन्मद-

---

(न) अभीति। अभिनवं यौवनमेव पवनश्चाञ्चल्यहेतुत्वाद्वायुस्तेन क्षोभितस्य उद्वेलितस्य, रागोऽनुराग एव सागरस्तस्य, उद्गताभ्यामुत्थिताभ्यां तरङ्गाभ्यामिव, तथा विद्रुमलतावत् प्रवालवल्लीवत् लोहिताभ्यामधराभ्यां ओष्ठाभ्यां विराजमानामित्यन्वयः। अत्र परम्परितरूपकं गम्योत्प्रेक्षा लुप्तोपमा चैतेषामङ्गाङ्गिभावेन सङ्करः। "रक्तौ च क्रोधरागौ" इति कविसमयादनुरागसागरस्य रक्तत्वेन तत्तरङ्गयोरपि रक्तत्वमवगम्यत-मिति तरङ्गाभ्यामित्यस्य रक्तविशेषणाभावेऽपि न न्यूनपदत्वदोषावकाशः। तथा रक्ता च अवदाता शुभ्रा च स्वच्छा च कान्तिर्यस्य तेन, अतएव मदिरारसेन पूर्णं यन्माणिक्यशुक्तिसम्पुटं मणिमयशुक्तिपुटं तद्वत् छविः कान्तिर्यस्य तेन, कपोलयुगलेन च विराजमानाम्। अत्र लुप्तोपमालङ्कारः। तथा रतिः कामभार्य्या तस्या या परिवादिनी सप्ततन्त्रीविशिष्टा वीणा तस्या रत्नकोणवत् मणिमयवादनदण्डवत् चारुणा मनोहरेण, मदनो-द्दीपनासूचनाय 'रतिपरिवादिनी'त्युक्तम्। नासावंशेन नासिकादण्डेन च विराजमानाम्। अत्रापि लुप्तोपमा-लङ्कारः।

(प) गतीति। गतिप्रसरनिरोधिनोः श्रवणयोः कोपादिव आत्मनो गमनवेगनिरोधजनितो यः कर्ण-युगलं प्रति क्रोधस्तस्मादिवेत्यर्थः, किञ्चिदारक्तौ अपाङ्गौ प्रान्तभागौ यस्य तेन। अत्र हेतूत्प्रेक्षालङ्कारः, तेन च लोचनयुगलस्य कर्णान्तायतत्वं व्यज्यते इत्यलङ्कारेण वस्तुध्वनिः। निजं स्वसम्बन्धि यन्मुखं तत्र या लक्ष्मीः शोभैव श्रीः तस्या निवासे दुग्धोदधिना क्षीरोदसागरेण। अत्र श्लिष्टपरम्परितरूपकमलङ्कारः, तेन च लोचनयोरेव मुखशोभाजनकत्वं व्यज्यते। ईदृशेन लोचनयुगलेन जीवलोकं लोचनमयमिव स्वदर्शनाय केवलनयनव्याप्तमिव कर्त्तुमुद्यताम्। अत्र क्रियोत्प्रेक्षालङ्कारः, तेन च लोचनयुगलस्यातुलनीयसौन्दर्य्यं व्यज्यते, तथा लोचनपदस्य द्विरुपादानात् पुनरुक्ततादोषः, स च लोचनमयमिवेत्यत्र तन्मयमिवेति पाठेन समाधेयः।

ন্যায় রক্তবর্ণ ছিল এবং নবযৌবনরূপ বায়ু-বেগে উদ্বেলিত অনুরাগ-সাগরের দুইটি তরঙ্গের ন্যায় দেখা যাইতেছিল; কাদম্বরীর গণ্ডযুগলের শোভা, নির্ম্মল ও শ্বেতরক্তমিশ্রিত ছিল; সুতরাং সেই গণ্ডযুগল, মদ্যে পরিপূর্ণ মণিময় ঝিনুকের ন্যায় দীপ্তি পাইতেছিল। আর কাদম্বরীর নাসিকাটি, রতিদেবীর বীণাযন্ত্রের রত্নময় ছড়িটির ন্যায় দেখা যাইতেছিল; সুতরাং এই সকলে কাদম্বরী বিশেষ শোভা পাইতেছিলেন। (প) কাদম্বরীর নয়নযুগল, আরও দীর্ঘ হইবার নিমিত্ত বেগে গমন করিতেছিল, কিন্তু কর্ণযুগলে সেই গমন-বেগ রোধ করায়, তাহাদের প্রতি ক্রোধবশতই যেন সেই নয়নযুগলের প্রান্তভাগ ঈষৎ আরক্তবর্ণ হইয়াছিল; আর সেই নয়নযুগল স্বকীয় মুখলক্ষ্মীর বাসস্থান ক্ষীরোদসমুদ্রস্বরূপ ছিল; কাদম্বরী সেই নয়নযুগলদ্বারা সমস্ত জীবলোককে যেন নয়নময় করিতে উদ্যত হইয়াছিলেন।

यौवनकुञ्जरमदराजिभ्यां मनःशिलापङ्कलिखितेन च रागाविष्टेन मन्मथहृदयेनेव वदनलग्नेन तिलकविन्दुना विद्योतितललाटपट्टाम्, (फ) उत्कृष्टहेमतालीपट्टाभरणमयमासुक्तकर्णोत्पलच्युतमधुधारासन्देहकारिणं कर्णपार्श्वं दोलायमानपत्रमकर-(१) माणिक्यकुण्डलं दधतीम्, (ब) पाटलीकृतललाटेन सीमन्तचुम्बिनश्चूड़ामणेः चरतांशुजालेन मदिरारसेनेव प्रक्षाल्यमानदीर्घकेशकलापाम्, (भ) देहार्द्धप्रविष्टहरगर्वित-गौरी-विजिगीषयेव सर्वाङ्गानुप्रविष्ट-मन्मथ-दर्शित-सौभाग्य-

---

(फ) उन्मदेति। यौवनमेव कुञ्जरो दुर्निवारवेगत्वाद्गज इति यौवनकुञ्जरः, उन्मदो यो यौवनकुञ्जरस्तस्य मदराजिभ्यां दानजलरेखारूपाभ्यां भ्रूलताभ्यां। अत्र परम्परितरूपकमलङ्कारः। मनःशिलायाः स्वनामप्रसिद्धस्य धातुविशेषस्य पङ्केन द्रवेण लिखितश्चित्रितस्तेन. रागाविष्टेन अनुरागान्वितेन, मन्मथस्य हृदयेनेव, "अयोगवहाश्च क्षानानां तस्याणत्वमिष्यते" इति भाषापरिच्छेदोक्तेर्हृदयस्यापि विन्दुरूपत्वादिति भावः, वदनलग्नेन तिलकविन्दुना विद्योतित उद्भासितः ललाटपट्टो भालफलकं यस्यास्ताम्। अत्र जात्युत्प्रेक्षालङ्कारः।

(ब) उत्कृष्टेति। उत्कृष्टं यत् हेम्नः स्वर्णस्य तालीपट्टवत् तालीपत्रवत् आभरणं तन्मयं तद्यात्मं अतएव आसुक्तात् परिहितात् कर्णोत्पलात् च्युता गलिता या मधुधारा तस्याः सन्देहं भ्रमं करोतीति यस्य तं, तन्मधुधाराया अपि पीतत्वादिति भावः, तथा दोलायमानं पत्रमकरमाणिक्य, कुण्डलं अंशभेदेन पत्राकारमकराकारकमणिमयकुण्डलं यत्र तं, कर्णपार्श्वं प्रशस्तकर्णं दधतीम्। अत्र भ्रान्तिमानलङ्कारः।

(भ) पाटलीति। सीमन्तं चुम्बति स्पृशतीति तस्मात् चूड़ामणेः चरता पतता, तथा पाटलीकृतमारक्तीकृतं ललाटं येन तेन, मदिरारसेनेव स्थितेन रक्ततासाम्यादिति भावः, अंशुजालेन, प्रक्षाल्यमानः स्पृश्यमानो दीर्घः केशकलापो यस्यास्ताम्। अत्रोपमालङ्कारः।

(म) देहार्द्धेति। देहस्यार्द्धमात्रे प्रविष्टेन हरेण गर्विता या गौरी पार्वती तस्या विजिगीषयेव विजेतुमिच्छयेव, सर्वाङ्गेषु अनुप्रविष्टेन हरविरोधिना मन्मथेन दर्शितः प्रकटितः सौभाग्यविशेषः पार्वतीतः

(ফ) কাদম্বরীর জ্র দুইটি মদমত্তযৌবন-হস্তীর দুইটি মদজল-রেখা-স্বরূপ ছিল ; আর তাহারই প্রতি অনুরক্ত কামদেবের হৃদয়ের ন্যায় ছোট একটি তিলক, তরল মনঃশিলাদ্বারা মুখমণ্ডলে চিত্রিত ছিল ; তাহাতে তাহার ললাটদেশ, বিশেষ শোভা পাইতেছিল। (ব) কাদম্বরীর সুন্দরকর্ণযুগল, তাড়িয়াতের পাতার আকৃতি উৎকৃষ্ট সোণার অলঙ্কারে পরিপূর্ণ ছিল ; সুতরাং সেই কর্ণযুগল, পরিহিত-কর্ণোৎপল হইতে বিগলিত মধুধারার ভ্রম জন্মাইতেছিল ; আর তাহাতে, পত্র ও মকরাকৃতি দুইটি মণিময় কুণ্ডল দুলিতেছিল। (ভ) কাদম্বরীর সীমন্তে একটি মণি ছিল, তাহা হইতে মদিরার ন্যায় রক্তবর্ণ কিরণজাল নির্গত হইয়া ললাটদেশ রক্তবর্ণ করিয়া দীর্ঘকেশকলাপকে বিধৌত করিতেছিল ; (ম) মহাদেব, দেহের কেবল অর্দ্ধাংশে প্রবেশ করিয়াছিলেন বলিয়াই পার্ব্বতীর গর্ব্ব জন্মিয়াছিল ; তাই তাঁহাকে

---

(१)...मरकत...।

विशेषाम्, (म) उरःसमारोपितैकलक्ष्मी-(१) मुदित-नारायणावलेपहरणाय प्रतिविम्बकैर्निजरूपतो लक्ष्मीशतानीव सृजन्तीम्, (य) उत्तमाङ्गनिहितैकचन्द्र-विस्मितहराभिमाननाशाय विलासस्मितैश्चन्द्रसहस्राणीव दिक्षु विक्षिपन्तीम्, (र) निर्दयदग्धैकमन्मथप्रमथनाथरोषेणेव प्रतिहृदयं मन्मथायुतान्युत्पादयन्तीम्, (ल) रजनी-जागरखिन्नस्य परिचितचक्रवाकमिथुनस्य स्वप्तुं क्रीड़ानदिकासु कमल-

---

प्रभाद्दृष्टाधिक्यं यस्यास्ताम्, देहार्द्धप्रविष्टदेवापेक्षया सर्वाङ्गप्रविष्टदेवायाः सर्व्वथैव सौभाग्यविशेषः सम्भवतीति भावः। अत्र हेतूत्प्रेक्षालङ्कारः।

(य) उर इति। उरसि वक्षसि समारोपितया स्थापितया एकया लक्ष्म्या मुदितस्य हृष्टस्य नारायणस्य यः अवलेपस्तल्लक्ष्मीसमारोपणजनितो गर्व्वस्तस्य हरणाय दूरीकरणाय, प्रतिविम्बकैर्भित्त्यादिष्वात्मनः प्रतिमाभिः, निजरूपतः स्वकीयाकारात् लक्ष्मीणां शतानि समूहान् सृजन्तीमिव, एकैकप्रतिविम्बस्यैवैकैकलक्ष्मीरूपत्वादिति भावः। अत्र क्रियोत्प्रेक्षालङ्कारः, तेन चास्या लक्ष्मीतुल्यसौन्दर्य्यं व्यज्यते।

(र) उत्तमेति। उत्तमाङ्गे शिरसि निहितेन एकेनैव चन्द्रेण विस्मितस्य आत्मनस्सन्निधाने विस्मयापन्नस्य हरस्य यः अभिमानश्चन्द्रनिधानजनितोऽहङ्कारस्तस्य नाशाय विलासस्मितैः दिक्षु चन्द्राणां सहस्राणि समूहान् विक्षिपन्तीमिव, एकैकस्यैव स्मितस्य एकैकचन्द्रतुल्यत्वादिति भावः। क्रियोत्प्रेक्षा।

(ल) निर्दयेति। निर्दयं यथा स्यात्तथा दग्ध एको मन्मथो येन तादृशे प्रमथनाथे शिवे यो रोषः क्रोधस्तेनेव हेतुना, एषां प्रतिहृदयं मन्मथानां अयुतानि दशसहस्राणि समूहानित्यर्थः उत्पादयन्तीं, कटाक्षादिनेति शेषः। अत्र हेतूत्प्रेक्षालङ्कारः। एतेन चास्याः सर्व्वेषामेव कामोद्दीपकत्वं सूचितम्।

(व) रजनीति। रजन्यां जागरेण परस्परविरहदुःखाज्जागरणेन खिन्नस्य क्लान्तस्य, परिचितं यच्चक्रवाकमिथुनं तस्य। इयन्तु कर्त्तरि सम्बन्धविवक्षया षष्ठी तुमुन्योगे षष्ठीनिषेधात्। स्वप्तुं निद्रातुं। कमल-

---

জয় করিবার নিমিত্তই যেন কামদেব, কাদম্বরীর সকল অঙ্গে প্রবেশ করিয়া, পার্ব্বতী অপেক্ষায় কাদম্বরীর অতিরিক্ত সৌভাগ্য প্রকাশ করিতেছিলেন। (য) একটি মাত্র লক্ষ্মীকে বক্ষে ধারণ করিয়াই আনন্দিতচিত্ত নারায়ণের যে অহঙ্কার জন্মিয়াছিল, তাহা দূর করিবার নিমিত্ত, কাদম্বরী যেন নিজের আকৃতি হইতে প্রতিবিম্বদ্বারা শত শত লক্ষ্মী সৃষ্টি করিতেছিলেন। (র) একটিমাত্র চন্দ্রকে মস্তকে স্থাপন করিয়া, তাহাতেই বিস্ময়াপন্ন মহাদেবের যে অহঙ্কার হইয়াছিল, তাহা বিনষ্ট করিবার নিমিত্ত, কাদম্বরী যেন বিলাসময় ঈষৎ হাস্যদ্বারা সকল দিকে সহস্র সহস্র চন্দ্র নিক্ষেপ করিতেছিলেন। (ল) মহাদেব, নির্দ্দয়ভাবে একটিমাত্র কামদেবকে দগ্ধ করিয়াছিলেন, তাঁহার প্রতি সেই ক্রোধবশতই যেন কাদম্বরী, প্রত্যেক হৃদয়ে সহস্র সহস্র কামদেব সৃষ্টি করিতেছিলেন। (ব) পরস্পরবিরহনিবন্ধন রাত্রিতে জাগরণ করায় ক্লান্ত পরিচিত চক্রবাকদম্পতির নিদ্রার নিমিত্ত, ক্রীড়ানদীগুলির ভিতরে পদ্মরেণুরূপ বালুকাদ্বারা

---

(१) उरःसमारोपितलक्ष्मी...।

धूलिवालुकाभिर्बालपुलिनानि कारयन्तीम्, (व) "परिजननूपुररवप्रस्थितं वल्लभस्य (१) हंसमिथुनं मृणालनिगड़ेन बद्धानय" इति हंसपालीमादिशन्तीम्, (श) आभरणमरकतमयूखान् लिहति (२) भवनहरिण-(३) शावकाय सखीश्रवणादपनीय यवाङ्कुरप्रसरं-(४) प्रयच्छन्तीम्, (ष) आत्मसंवर्द्धित-(५) लता-प्रथम-कुसुम-निर्गम-निवेदनागतामुद्यानपालीमशेषाभरणदानेन सम्मानयन्तीम्, (स) उपनीत-विविध-वन-कुसुम-फल-पूर्ण-पत्रपुटामविज्ञायमानालापतया हासहेतुं पुनः

धूलयः पद्मपरागा एव वालुकास्ताभिः, बालपुलिनानि क्षुद्रसैकतानि, कारयन्तीं परिचारिकाभिरिति शेषः। एतेन तस्याः परिचितेषु वात्सल्यातिशयः कमलसम्पच्च व्यज्यते।

(श) परीति। परिजनस्य प्रस्थितायाः कस्याश्चित् परिचारिकायाः, नूपुररवेण तदनुसरणेनेत्यर्थः प्रस्थितं इतो गतं, वल्लभं मम प्रियस्य। मृणालनिगड़ेन मृणालात्मकशृङ्खलया। हंसपालीं आत्मनो हंसरक्षिणीं काञ्चित् परिचारिकां। एतेन हंसमिथुनवात्सल्यमस्याः सूचितम्।

(ष) आभेति। आभरणभूता ये मरकतमणयस्तेषां मयूखान् श्यामकिरणान् लिहति तृणभ्रमेण रसनया गमति। यवाङ्कुरप्रसरं आयतयवपल्लवम्। अत्र भ्रान्तिमानलङ्कारो व्यज्यते। आभरणेत्याद्यनुरूपभावः श्लोको यथा शिशुपालवधे—

"तृणवाञ्छया मुहुरवाञ्चिताननान् निचयेषु यत्र हरिताश्मवेश्मनाम्।
रसनायलप्रकिरणाङ्कुरान् जनो हरिणान् गृहीतकवलानिवैक्षत॥"

(स) आत्मेति। आत्मसंवर्द्धितायाः जलसेकादिना स्वयंपरिपोषितायाः लतायाः प्रथमो यः कुसुमनिर्गमस्तस्य निवेदनाय आगतां, उद्यानपालीमुपवनरक्षिकाम्।

(ह) उपेति। उपनीतमानीतं विविधैर्वनकुसुमफलैः पूर्णं पत्रपुटं यया तां, अविज्ञायमाना अति-

---

কাদম্বরী ক্ষুদ্র ক্ষুদ্র পুলিন নির্ম্মাণ করাইতেছিলেন! (শ) 'আমার প্রীতিভাজন হংস দুইটি, কোন পরিচারিকার নূপুরের রব অনুসরণ করিয়া, এস্থান হইতে চলিয়া গিয়াছে; সুতরাং তুমি তাহাদিগকে মৃণালরজ্জুদ্বারা বন্ধন করিয়া আনয়ন কর" এই ভাবে কাদম্বরী, হংসরক্ষিণী পরিচারিকাকে আদেশ করিতেছিলেন। (ষ) গৃহপালিত একটি হরিণ-শাবক, তৃণ মনে করিয়া মরকতমণিময় আভরণের কিরণগুলিকে লেহন করিতেছিল; তাই কাদম্বরী কোন সখীর কর্ণ হইতে একটি যবের পল্লব আনয়ন করিয়া সেই হরিণশাবকটিকে দিতেছিলেন। (স) কাদম্বরী নিজেই যে লতাটিকে পরিবর্দ্ধিত করিয়াছিলেন, সেই লতাটিতে প্রথমপুষ্প নির্গত হইয়াছে, এই সংবাদ বলিবার নিমিত্ত, উদ্যানপালিকা আসিয়াছিল, তাই কাদম্বরী তাহাকে নানাবিধ অলঙ্কার দিয়া সন্তুষ্ট করিতেছিলেন। (হ) ক্রীড়াপর্ব্বত রক্ষা করিবার নিমিত্ত, কাদম্বরী যাহাকে নিযুক্ত করিয়াছিলেন; সেই শবরী (ম্লেচ্ছবিশেষ), নানাবিধ বন্য পুষ্প ও ফলে পরিপূর্ণ একটি

---

(१) दुर्लभस्य। (२) लिहति च। (३) भवनहरिण...। (४)...प्रसवम्। (५) आत्मवर्द्धित।...

पुनः क्रीड़ापर्वत-पाल्य-(१) शवरीमालापयन्तीम्, (ङ) करतलविनिहतैः (२) मुहुर्मुहुरुत्पतद्भिश्च मुखपरिमलान्धैर्नीलकन्दुकैरिव (३) मधुकरैः क्रीड़न्तीम्, (च) पञ्जरहारीतक-रुत-श्रवण-ज्ञात-दुष्ट-स्मितां चामरग्राहिणीं विहस्य लीलाकमलेन शिरसि विघट्टयन्तीम् (छ) मुक्ताफल-खचित-चन्द्रलेखिका-संक्रान्तप्रतिमां स्वेद-जल-(४) विन्दुजाल-चित-नख-पदाभिप्रायेण ताम्बूलकरङ्कवाहिनीं पयोधरे

विसदृशशब्दमयत्वाद्विशेषेणाबुध्यमानार्थका आलापा भाषा यस्यास्तस्या भावस्तया हेतुना, हासहेतुं कौतुकेन हास्यकारणीभूतां, क्रीड़ापर्वतं पाति रक्षतीति क्रीड़ापर्वतपाली सा चासौ शवरी पुलिन्दा चेति तां, पुनः पुनरालापयन्तीं कौतुककरणाय वारं वारं स्वभाषां भाषयन्तीम्। एतेन कादम्बर्या अतीवकौतुकप्रियत्वं व्यज्यते।

(च) करैरिति। नीलकन्दुकैः कृष्णवर्णगेण्डुकैरिव करतलाभ्यां विनिहतैरपसारणाय उत्तोलनाय च ताड़ितैः, अतएव मुहुर्मुहुरुत्पतद्भिरुड्डयमानैः, मुखस्य परिमलेन सौरभेण अन्धैर्मत्तैः, मधुकरैर्भ्रमरैः क्रीड़न्तीम्। अत्र तादृशमधुकरैः क्रीड़नासम्बन्धेऽपि तत्सम्बन्धोक्तेरतिशयोक्तिरूपमया सङ्कीर्यते। तया च तन्मुखस्य परिमलातिशयवत्त्वं व्यज्यते।

(छ) पञ्जरेति। पञ्जरे स्थितो यो हारीतकः पक्षिविशेषस्तस्य रुतश्रवणेन ज्ञातं दुष्टं निन्दाव्यञ्जकं स्मितं यया तां। विघट्टयन्तीम् ताड़यन्तीम्। एतेन परनिन्दया तस्या विरक्तिः सूचिता।

(ज) मुक्तेति। मुक्ताफलैः खचिता उपरिसम्बद्धा या चन्द्रलेखिका क्षुद्रचन्द्ररेखाकार आभरणविशेषस्तस्याः सकाशात् संक्रान्ता पयोधर एव पतिता प्रतिमा प्रतिबिम्बं यस्यास्तां, ताम्बूलकरङ्कवाहिनीं, स्वेदजलविन्दुजालेन चितं व्याप्तं यन्नखपदं नायककृतनखक्षतं तदभिप्रायेण तत्सम्भावनां सूचयित्वेत्यर्थः, पटवासमुष्टिना मुष्टिपरिमितलोहितपिष्टातकचूर्णनिक्षेपेणेत्यर्थः, पयोधरे स्तनमण्डले ताड़यन्तीम्, तच्चिह्नगोपनाशयेनेति भावः। चन्द्रलेखाप्रतिबिम्बं नखचिह्नाकारं क्षुद्रमुक्ताप्रतिबिम्बानि च घर्म्मजलविन्दुजालाकाराणीति कवेराशयः। एतेनाप्यतीव कौतुकप्रियत्वमस्या व्यज्यते।

পত্রপুটক (পাতার ঠোঙা) লইয়া উপস্থিত হইয়াছিল, তাহার কথার অর্থ বুঝা যাইত না বলিয়া সে-ই হাসের কারণ হইয়াছিল, তাই কাদম্বরী জিজ্ঞাসা করিয়া করিয়া বার বার তাহাকে কথা বলাইতেছিলেন। (ক) কতকগুলি ভ্রমর, কাদম্বরীর মুখের সৌরভে তাহার উপরে পড়িতেছিল, তাই কাদম্বরী হস্ত-তাড়ন করায় সেগুলি, আবার বার বার উড়িতেছিল; সুতরাং কাদম্বরী কন্দুকের ন্যায় (গেড়ুয়ার মত) সেই ভ্রমরগুলিদ্বারা খেলা করিতেছিলেন। (খ) পঞ্জরস্থিত হারিতপক্ষীর রব শুনিয়া কোন চামরধারিণী, নিন্দাসূচক হাস্য করিয়াছিল, তাই কাদম্বরীও হাস্য করিয়া লীলাপদ্মদ্বারা তাহার মস্তকে তাড়ন করিতেছিলেন। (গ) তাম্বূলকরঙ্কবাহিনীর স্তনমণ্ডলে তাহারই মুক্তাখচিত চন্দ্রলেখার প্রতিবিম্ব পড়িয়াছিল, তাহাতেই কাদম্বরী, ঘর্ম্মবিন্দুতে

---

(१) ..पत्र...। (२)...विनिहितैः। (३) नीलकन्दुकैरिव। (४)...प्रतिमं स्वेदजल।

पटवासमुष्टिना ताड़यन्तीम्, (ख) रत्नकुण्डलप्रतिविम्ब-सान्द्र-दत्त-नव-नख-पद-मण्डलाशङ्कया चामरग्राहिणीं विहस्य कपोले प्रसादव्याजेन दत्तेन (१) आत्मकर्णपूरपल्लवेनाच्छादयन्तीम्, (ग) पृथिवीमिव समुत्सारित-महाकुल-भूभृद्वरव्यतिकर-शेषभोगनिषण्णाम्, (२) (घ) मधुमासलक्ष्मीमिव षट्पद-पट-

---

(ग). रत्नेति। रत्नकुण्डलस्य प्रतिविम्बे चामरग्राहिण्या एव कपोलपतिते तदीयलोहितमणिमयकर्ण-कुण्डलप्रतिविम्ब इत्यर्थः, सान्द्रं गाढ़ं यथा तथा दत्तं रमणसमये नायकेन अर्पितं नवं यन्नखपदमण्डलं वर्त्तुलाकारनखचिह्नं तस्य आशङ्कया तत्संदर्थं सूचयितुमित्यर्थः, विहस्य, प्रसादव्याजेन अनुग्रहच्छलेन, दत्तेन स्वयमर्पितेन, आत्मनः कर्णपूरपल्लवेन, कपोले चामरग्राहिणीं आच्छादयन्तीं चामरधारिण्या गण्डदेशमाच्छादयन्ती-मित्यर्थः, परिवामवगतिभिया तद्गोपनाभिप्रायिणेति भावः। वास्तविकभ्रमाभावादनयोर्न भ्रान्तिमानलङ्कारः। "कक्षस्थले च कर्णान्ते कपोले बाहुमूलके। ग्रीवायां कण्ठदेशे च नखाघातं समाचरेत्।" इति कामशास्त्रप्रसिद्धत्वात् "अधरे करजक्षतं मृगाक्ष्याः" इति दर्पणोदाहृतवन्नात्र विद्याविरुद्धतादोषः।

(घ) पृथिवीमिति। पृथिवीमिव, समुत्सारितो दूरीकृतः "नाहं कथञ्चिदपि सखीकायां महाश्वेतायामात्मनः पाणिं ग्राहयिष्यामि" इति पूर्व्वोक्तप्रतिज्ञयेति भावः, महाकुलभूभृद्वरस्य उच्चवंशोत्पन्नस्य कस्यचित् राजरूपस्य पत्युर्यो व्यतिकरः संसर्गसुखं तस्मात् शेषेषु अवशिष्टेषु भोगेषु स्रक्चन्दनधारणादिमात्रजनितसुखेषु निषण्णां स्थिताम्, पूर्वोक्तप्रतिज्ञावशात् पतिसंसर्गसुखेतरसुखभोगिनीमिति सरलार्थः। पृथिवीपक्षे तु समुत्सारितः सम्प्राप्तः महद्भिः प्रशस्तैः कुलभूभृद्वरैर्महेन्द्रादिकुलपर्वतश्रेष्ठैः व्यतिकरः सम्बन्धो यया सा तथोक्ता चासौ शेषभोगेषु अनन्तनागफणासु निषण्णा स्थिता चेति सा तथोक्ता ताम्। अत्र पूर्णोपमालङ्कारः। नच "सृ गतौ" इति धात्वर्थानुसरणेऽपि समुत्सारितपदस्य प्राप्तयें प्रयोगाभावादप्रयुक्ततादोष इति वाच्यं "स्यातामदोषौ श्लेषादौ निहतार्थाप्रयुक्तते।" इति साहित्यदर्पणात्।

(ङ) मध्विति। मधुमासलक्ष्मीं चैत्रमासश्रियमिव, षट्पदपटलेन भ्रमरगणेन अपक्रियमाणानि स्वकीयमालादिभ्यो नीयमानानि यानि कुसुमरजांसि पुष्परेणवस्तेषां तत्पतनैरित्यर्थः, धूसरः पादयोः पराग उपरागो

পরিপূর্ণ নখের চিহ্ন মনে করিয়া আবীরচূর্ণ নিক্ষেপ করিয়া তাহার স্তনমণ্ডলে তাড়ন করিতেছিলেন। (গ) চামরধারিণীর গণ্ডদেশে, তাহারই মণিময় কুণ্ডলের প্রতিবিম্ব পড়িয়াছিল; কাদম্বরী সেই প্রতিবিম্বকেই, নায়কদত্ত গোলাকার নখচিহ্ন ভাবিয়া হাস্য করিয়া, অনুগ্রহচ্ছলে নিজের কর্ণপল্লবদ্বারা তাহার গণ্ডদেশ আচ্ছাদন করিতেছিলেন। (ঘ) পৃথিবী যেমন বৃহৎ বৃহৎ কুলপর্ব্বতগণের সহিত, অনন্তনাগের ফণাসমূহে অবস্থান করিতেছে, কাদম্বরীও তেমনি পতি-সংসর্গ-সুখ ভিন্ন অন্যান্য সুখভোগে অবস্থান করিতেছিলেন। (ঙ) চৈত্রমাসে ভ্রমরগণ যখন পুষ্পের রেণু অপহরণ করে, তখন তাহা পতিত হইয়া বৃক্ষ সকলের বর্ণ যেমন ধূসর করে, সেখানেও তেমন ভ্রমরগণ যখন কাদম্বরীর মালা হইতে পুষ্পের রেণু সকল অপহরণ করিতেছিল, তখন তাহা

---

(१)...व्याजदत्तेन। (२)...भूभृद्व्यतिकरा,...भूभृद्वरव्यतिकरा शेष...।

लापक्रियमाण-कुसुम-रजोधूसर-पादपरागाम्, (ङ) शरदमिवोत्पादितमानस-जन्मपक्षिरवापनीतनीलकण्ठमदाम्, (च) गौरीमिव श्वेतांशुकरचितोत्तमाङ्गाभरणाम्, (छ) उदधिवेलावन-(१) लेखामिव मधुकरकुलनीलतमालकाननाम्, (ज) इन्दुमूर्त्तिमिवोद्दाम-मन्मथ-विलास-गृहीत-गुरु-कलत्राम्, (झ)

यस्यास्ताम्। अन्यत्र तु तादृशरजोभिर्धूसराः पादपानां वृक्षाणां रागा वर्णा यस्यास्ताम्। पूर्णोपमा। "परागश्चन्दने रेणौ गिरौ ख्यात्युपरागयोः।" इति हैमः।

(च) शरदमिति। शरदं शरत्कालमिव, उत्पादितस्य आत्मसौन्दर्य्येणैव पुनर्जनितस्य मानसजन्मनो मनोभुवः कामस्य पक्षिणां कङ्कपत्रान्वितानां बाणानां रवेण ध्वनिना अपनीतो दूरीकृतो नीलकण्ठस्य शिवस्य मदः कामदाहजनितोऽहङ्कारो यया ताम्। अन्यत्र तु उत्पादितैः शरदैव जनितैः, मानसजन्मपक्षिणां हंसानां रवैरपनीतो नीलकण्ठानां मयूराणां मदः स्वरमाधुर्य्याहङ्कारो यया ताम्। पूर्णोपमा।

(छ) गौरीमिति। गौरीं पार्वतीमिव, श्वेतमंशुकं वसनं यस्याः सा चासौ रचितं धृतं उत्तमाङ्गाभरणं मस्तकभूषणं यया सा चेति ताम्। गौरीपक्षे तु श्वेतांशोः शिवशिरःस्थितचन्द्रस्य करैः किरणैः चितं अर्द्धनारीश्वरतया एकशरीरत्वात् व्याप्तं उत्तमाङ्गाभरणं मस्तकभूषणं यस्यास्ताम्। पूर्णोपमा।

(ज) उदधीति। उदधेः समुद्रस्य वेलावनलेखा तीरस्थवनश्रेणी तामिव, मधुकरकुलवद्भ्रमरसमूहवत् नीलतमा अतीवकृष्णा अलकायूर्णकुन्तला यस्मिन् तत्तादृशमाननं यस्यास्ताम्। अन्यत्र तु मधुकरकुलवत् नीलं तमालकाननं तमालवनं यस्यां ताम्। पूर्णोपमा।

(झ) इन्द्विति। इन्दुमूर्त्तिं चन्द्रदेहमिव, उद्दाममन्मथविलासैरत्यन्तकामविभ्रमैः गृहीतमाश्रितं गुरु विशालं कलत्रं नितम्बमण्डलं यस्यास्ताम्। अन्यत्र तु उद्दाममन्मथविलासैन उत्कटकामचेष्टितेन गृहीतमपहृतं गुरोर्बृहस्पतेः कलत्रं भार्य्या यया ताम्। पूर्णोपमा। "कलत्रं श्रोणिभार्य्ययो"रित्यमरः। पुरा किल चन्द्रो राजसूययज्ञं विधाय बलद्दृप्तस्तारां नाम बृहस्पतिभार्य्यामपहृतवानिति हरिवंशपञ्चविंशाध्यायवार्त्ता।

পতিত হইয়া কাদম্বরীর চরণের বর্ণ ধূসর করিয়াছিল। (চ) শরৎকাল যেমন হংসগণের রবে, ময়ূরের স্বরমাধুর্য্যের অহঙ্কার দূর করে, কাদম্বরীও তেমন পুনরুজ্জীবিত মদনের বাণের শব্দে, মহাদেবের অহঙ্কার দূর করিয়াছিল। (ছ) পার্ব্বতীর মস্তকের অলঙ্কার যেমন অর্দ্ধনারীশ্বর শিবের মস্তকস্থিত চন্দ্রের কিরণে ব্যাপ্ত থাকে; কাদম্বরীরও তেমন পরিধানে পরিষ্কৃত বস্ত্র ছিল এবং মস্তকের অলঙ্কার সজ্জিত ছিল। (জ) সমুদ্রতীরস্থ বনশ্রেণীর ভিতরে যেমন ভ্রমরগণের ন্যায় নীলবর্ণ তমালবন থাকে; কাদম্বরীরও তেমন ভ্রমরগণের ন্যায় অত্যন্ত কৃষ্ণবর্ণ-কেশকলাপে শোভিত মুখমণ্ডল ছিল। (ঝ) চন্দ্র যেমন কামাবেশবশতঃ বৃহস্পতির ভার্য্যাকে গ্রহণ করিয়াছিলেন; কাদম্বরীর নিতম্বদেশকেও তেমন মদনবিভ্রমে গ্রহণ করিয়া-

---

(१)...घन...।

वनराजिमिव पाण्डुश्यामलवलीलतालङ्कृतमध्याम्, (ञ) दिनमुखलक्ष्मीमिव (१) भास्वन्मुक्तांशु-भिन्न-पद्मराग-प्रसाधनाम्, (ट) आकाशकमलिनीमिव स्वच्छाम्बर-दृश्यमान-मृणाल-कोमलोरुमूलाम्, (ठ) मयूरावलीमिव नितम्ब-चुम्बि-शिखण्ड-भार-विस्फुरच्चन्द्रकान्ताम्, (ड) कल्पतरुलतामिव कामफलप्रदाम्, (ढ)

(ञ) वनेति। वनराजिमिव, पाण्डुरपरिभागे पाण्डुवर्णा श्यामला गर्त्तांशे च श्यामवर्णा तथैव दृश्यमानत्वादिति भावः, या वलीलता त्रिवलीलता तया अलङ्कृतो मध्यः शरीरमध्यभागो यस्यास्ताम्। अन्यत्र तु पाण्डुः श्यामा च या लववलीलता तया अलङ्कृतो मध्यो देशो यस्यास्ताम्। पूर्णोपमा।

(ट) दिनेति। दिनमुखलक्ष्मीमिव प्रभातश्रियमिव, भास्वतीनां दीप्तिमतीनां मुक्तानां मौक्तिकानां अंशुभिः किरणैः भिन्नानि सम्मिश्राणि पद्मरागप्रसाधनानि पद्मरागमणिनिर्म्मिताभरणानि यस्यास्ताम्। अन्यत्र तु भास्वता सूर्य्येण मुक्तैर्विक्षिप्तैरंशुभिः किरणैः भिन्नानि प्रकाशितानि यानि पद्मानि तेषां रागो लौहित्यमेव प्रसाधनं भूषणं यस्यास्ताम्। पूर्णोपमा।

(ठ) आकाशेति। आकाशकमलिनीमिव मन्दाकिनीस्थपद्मिनीमिव, स्वच्छाम्बरेण निर्म्मलवसनाभ्यन्तरेण दृश्यमानं मृणालवत् कोमलं ऊरुमूलं यस्यास्ताम्। अन्यत्र तु स्वच्छाम्बरे निर्म्मलाकाशे दृश्यमानं मृणालस्य कोमलं उरु विशालञ्च मूलं प्रप्रदेशो यस्यास्ताम्। पूर्णोपमा।

(ड) मयूरेति। मयूरावलीमिव, नितम्बचुम्बी नितम्बस्पर्शी शिखण्डभारः केशपाशो यस्याः सा चासौ विस्फुरच्चन्द्रवत् दीप्यमानशशिवत् कान्ता मनोहरा चेति ताम्। अन्यत्र तु नितम्बचुम्बिनि शिखण्डभारे पिच्छ-समूहे विस्फुरन्तो देदीप्यमानाश्चन्द्रकाणां मेचकानामन्ताः प्रान्तदेशा यस्यास्ताम्। पूर्णोपमा।

(ढ) कल्पेति। कल्पतरुलतामिव, कामफलं मदनविकारफलं अभिलषितपदार्थञ्च प्रददातीति सा तथोक्ता ताम्। पूर्णोपमा।

ছিল। (ঞ) বনশ্রেণীর অভ্যন্তর যেমন শ্বেত ও শ্যামবর্ণ লবলীলতাতে শোভিত থাকে, কাদম্বরীর দেহের মধ্যভাগও তেমন পাণ্ডু ও শ্যামবর্ণ ত্রিবলীতে (থরে) শোভিত ছিল। (ট) সূর্য্যকিরণে প্রস্ফুটিত পদ্মের রক্তিমাই যেমন প্রভাতকালীন শোভার অলঙ্কার; কাদম্বরীরও তেমন দীপ্যমান মুক্তার কিরণ-মিশ্রিত পদ্মরাগমণিময়ই অলঙ্কার ছিল। (ঠ) স্বর্গগঙ্গাতে উৎপন্ন পদ্মিনী-মৃণালের কোমল ও বিস্তৃত মূলদেশ যেমন নির্ম্মল আকাশে দেখা যায়, কাদম্বরীরও তেমন মৃণালের ন্যায় কোমল উরুযুগলের মূলদেশ, নির্ম্মল বস্ত্রের বিতর দিয়া দেখা যাইতেছিল। (ড) ময়ূরগণের নিতম্বস্পর্শী পুচ্ছদেশে যেমন চন্দ্রাকৃতি চিহ্নগুলির প্রান্তভাগ শোভা পাইতে থাকে, কাদম্বরীর মনোহর আকৃতিও তেমন চন্দ্রের ন্যায় শোভা পাইতেছিল এবং কেশকলাপ, নিতম্ব পর্য্যন্ত লম্বিত ছিল। (ঢ) কল্পতরুর লতা যেমন অভিলষিত ফল দান করে, কাদম্বরীও তেমন কামফল দান করিত। (ণ) এবং কেয়ূরক

---

(१) दिनमुखमिव।

शयनसमीपे (१) सम्मुखोपविष्टम् "कोऽसौ, कस्य वापत्यम्, किमभिधानो वा, कीदृशमस्य रूपम्, कियद्वा वयः, किमभिधत्ते, भवता किमभिहितः,(२) कियच्चिरं दृष्टस्त्वया, कथञ्चास्य महाश्वेतया सह परिचय उपजातः, किमयमत्रागमिष्यति" इति मुहुर्मुहुश्चन्द्रापीड़सम्बन्धमेवालापं तद्रूपवर्णनामुखरं केयूरकं पृच्छन्तीं कादम्बरीं ददर्श। (ण)

तस्य तु दृष्टकादम्बरीवदनचन्द्रलेखालक्ष्मीकस्य सागरस्येवामृतमुल्ललास हृदयम् (त)। आसीच्चास्य मनसि—'शेषेन्द्रियाण्यपि मे वेधसा किमिति लोचनमयान्येव न कृतानि! किंवानेन कृतमवदातं कर्म्म चक्षुषा, यदनिवारितमेनां पश्यति (थ)। अहो चित्रमेतदुत्पादितं वेधसा सर्वरमणीयानामेकं

(ण) शयनेति। शयनस्य शय्यायाः समीपे, सम्मुखमभिमुखं यथा स्यात्तथा उपविष्टम्, केयूरकमिति वक्ष्यमाणस्य विशेषणमेतत्। असौ युवा। तस्य चन्द्रापीड़स्य रूपवर्णनायां मुखरं अश्रान्तवक्तारम्।

(त) तस्येति। कादम्बर्य्या वदनं चन्द्रलेखेवेत्युपमितसमास एव सागरस्येवेत्युपमासाहचर्य्यात्। दृष्टा कादम्बरीवदनचन्द्रलेखाया लक्ष्मीः शोभा येन तस्य, तस्य चन्द्रापीड़स्य हृदयं कर्त्तृ, दृष्टचन्द्रलेखालक्ष्मीकस्य सागरस्य, अमृतं जलमिव, उल्ललास उच्छ्वसितं बभूव। अत्र लुप्तोपमाश्रौतोपमयोरङ्गाङ्गिभावेन सङ्करः, तथा सागरस्यामृतमुल्लसति तस्य हृदयन्तु उल्ललासेति कालभेदाद्भग्नप्रक्रमतादोषः, स च 'सागरस्यामृतं यथोल्लसति तथोल्ललास हृदय'मिति पाठेन समाधेयः।

(थ) आसीदिति। न कृतानीति, तथा सति दर्शनस्य पूर्णता भवेदिति भावः। अनेन मम चक्षुषा। अवदातं कर्म्म पुण्यं कार्य्यम्। एतेनातुलनीयं सौन्दर्य्यं व्यज्यते।

(द) अहो इति। चित्रमाश्चर्य्यम्। धाम आश्रयः। रूपातिशयस्य असाधारणसुन्दराकृतेः परमाश्रय

কাদম্বরীর শয্যার নিকটে সম্মুখীন হইয়া উপবিষ্ট ছিল ; আর কাদম্বরী, চন্দ্রাপীড়-সম্বন্ধীয় কথাই বার বার তাহাকে জিজ্ঞাসা করিতেছিলেন যে,—"উনি কে ? কাহারই বা পুত্র ? উহার নামই বা কি ? উহার রূপ টা কেমন ? বয়সই বা কত ? উনি কি বলিলেন ? তুমিই বা কি বলিলে ? তুমি কত কাল উঁহাকে দেখিয়াছ ? মহাশ্বেতার সহিত উঁহার পরিচয় হইল কি ভাবে ? এবং উনি কি এখানে আসিবেন ?"—এই জিজ্ঞাসায় কেয়ূরক কেবল চন্দ্রাপীড়ের রূপের বর্ণনাই বেশী করিতেছিল।

(ত) চন্দ্র দেখিয়া সমুদ্রের জল যেমন উচ্ছ্বসিত হয়, কাদম্বরীর মুখ দেখিয়া চন্দ্রাপীড়ের হৃদয়ও তেমন আনন্দে উচ্ছ্বসিত হইয়াছিল। (থ) তখন চন্দ্রাপীড়ের মনে হইতে লাগিল যে,—'বিধাতা, আমার অবশিষ্ট ইন্দ্রিয়গুলিকেও কেন নয়নময় করিলেন না ? আমার এই নয়নেই বা কি পুণ্য কার্য্য করিয়াছিল যে, অবাধে ইঁহাকে দেখিতে পারিতেছে। (দ) বিধাতা,

(१) पुरःसमीपे। (२) अभिहितम्।

धाम। कुत एते रूपातिशयपरमाणवः समासादिताः (द)। तन्नूनमेनामुत्पादयतो विधेः करतल-परामर्शक्लेशेन ये विगलिता लोचनयुगलादश्रुबिन्दवस्तेभ्य एतानि जगति कुमुद-कमल-कुवलय-सौगन्धिकवनान्युत्पन्नानि' इत्येवं चिन्तयत एवास्य तस्या नयनयुगले निपपात चक्षुः (ध)। तदा तस्या अपि 'नूनमयं स केयूरकेणावेदित' इति चिन्तयन्त्या रूपातिशयविलोकनविस्मयस्मेरं निश्चलनिबद्धलक्ष्यं (१) चक्षुस्तस्मिन् सुचिरं पपात (न)। लोचनप्रभाधवलितस्तु कादम्बरीदर्शनविह्वलो बल इव (२) तत्क्षणमराजत चन्द्रा-

---

उपादानीभूतान्द्रव्याणि। परमाणुतो द्व्यणुकादिक्रमेण स्थूलोत्पत्तिरिति न्यायवैशेषिकमतमवलम्ब्येदमुक्तमिति बोध्यम्।

(ध) तदिति। करतलपरामर्शक्लेशेन निर्माणकालीनहस्तामर्शनकष्टेन। अश्रुबिन्दवः कादम्बर्या एवेत्यर्थः। अस्य चन्द्रापीडस्य चक्षुः। तस्याः कादम्बर्याः। अत्र नूनमित्युपादानाद्वाच्या भावाभिमानिनी क्रियोत्प्रेक्षा, तया च कादम्बर्याः सौकुमार्यातिशयो व्यज्यत इत्यलङ्कारेण वस्तुध्वनिः।

(न) तदेति। रूपातिशयविलोकनेन यो विस्मय आश्चर्यं तेन स्मेरं प्रफुल्लं, तथा निश्चलं यथा स्यात्तथा निबद्धं गृहीतं लक्ष्यं येन तत्ताद्दशम्।

(प) लोचनेति। लोचनप्रभया कादम्बर्याः स्वस्य च नयनालोकेन धवलितः शुभ्रीकृतश्चन्द्रापीडः, तत्क्षणं बलो बलराम इव, कादम्बर्यास्तस्याः कन्यायाः मदिरायाश्च दर्शनेन विह्वलो मदनाकुलः पानायाधीरश्च सन् अराजत। बलरामो मदिरापरायण आसीदिति पुराणप्रवादः। अत्र पूर्णोपमालङ्कारः।

এই একটি আশ্চর্য্য, সমস্ত সৌন্দর্য্যের আধার সৃষ্টি করিয়াছেন; তিনি কোথা হইতে, এই সৌন্দর্য্য-নির্মাণের পরমাণু সকল আনয়ন করিলেন। (ধ) অতএব বিধাতা যখন ইহাকে নির্ম্মাণ করিতেছিলেন, তখন তাঁহার হস্তের ঘর্ষণে নিশ্চয়ই ইহার কষ্ট হইতেছিল; সুতরাং তখন ইহার নয়নযুগল হইতে যে সকল অশ্রুবিন্দু পতিত হইয়াছিল; তাহা হইতেই জগতে এই সকল শ্বেতোৎপল, পদ্ম, নীলোৎপল ও রক্তোৎপল উৎপন্ন হইয়াছে,'—চন্দ্রাপীড় এইরূপ চিন্তা করিতেছিলেন, এমন সময়ে তাঁহার নয়নযুগল, কাদম্বরীর নয়নযুগলের উপরে পতিত হইল। (ন) তখন কাদম্বরীও, ভাবিতেছিলেন যে, 'কেয়ূরক যাঁহার কথা বলিয়াছে, নিশ্চয়ই ইনিই সেই যুবা পুরুষ', তখন চন্দ্রাপীড়ের অত্যন্ত সৌন্দর্য্য দেখিয়া বিস্ময়বশতঃ কাদম্বরীর নয়নযুগল বিস্ফারিত হইয়া উঠিল এবং নিশ্চলভাবে লক্ষ্য করিয়া বহুকাল যাবৎ চন্দ্রাপীড়ের উপরেই রহিল। (প) স্বকীয়-নয়ন-প্রভায় শুভ্রবর্ণ বলরাম, যেমন মদিরা দেখিয়া বিহ্বল হইয়া পড়িতেন, তখন চন্দ্রাপীড়ও তেমন কাদম্বরীর নয়ন-প্রভায় শুভ্রবর্ণ হইয়া তাহাকে দেখিয়া একেবারে

---

(१)...लक्ष्यं। (२) अचल इव।

पीड़ः (प)। दृष्ट्वा च तं (१) प्रथमं रोमोद्गमः, ततो भूषणरवः, तदनु कादम्बरी समुत्तस्थौ (फ)।

अथ तस्याः कुसुमायुध एव स्वेदमजनयत्, ससम्भ्रमोत्थानश्रमो व्यपदेशोऽभवत् (ब)। ऊरुकम्प एव (२) गतिं रुरोध, नूपुररवाकृष्टहंसमण्डलमयशो लेभे (भ)। निश्वासप्रवृत्तिरेव (३) अंशुकं चलं चकार, चामरानिलो निमित्ततां ययौ (म)। अन्तःप्रविष्ट-चन्द्रापीड़-स्पर्श-लोभेनेव निपपात हृदये हस्तः, स एव (४) स्तनावरणव्याजो बभूव (य)। आनन्द एवाश्रुजलमपातयत्,

(फ) दृष्ट्वेति। किञ्च, तं चन्द्रापीड़ं दृष्ट्वा विद्यमानायाः कादम्बर्य्याः प्रथमं रोमोद्गमो रोमाञ्चः समुत्तस्थौ, कामविकारोदयादिति भावः, ततो भूषणरवः समुत्तस्थौ, उत्थानवेगादित्याशयः, तदनु च कादम्बरी समुत्तस्थौ, अभ्यागतस्य सम्मानप्रदर्शनार्थमित्यभिप्रायः। अत्र समुत्तस्थावित्येकया क्रियया बहूनां कर्त्तृ तयाभिसम्बन्धात्तुल्ययोगितालङ्कारः।

(ब) अथेति। स्वेदं घर्म्मं। व्यपदेशश्छलं। अत्रायमभिप्रायः—कामविकारवशादेव कादम्बर्य्या घर्म्मोऽभवत्, किन्तु सा समुत्थानपरिश्रमादेवायं मम घर्म्म इति छलेन सखीनां पुरः कारणगोपनं कृतवतीति। अतएवात्र व्याजोक्तिरलङ्कारः।

(भ) ऊर्व्विति। ममायं गतिरोधो नोरुकम्पात्, अपि तु नूपुररवाकृष्टेन हंसगणेन चरणनिरोधादिति भावः। पूर्व्ववदत्रापि व्याजोक्तिः कार्य्यकारणयोर्वैयधिकरण्यादसङ्गतिश्चानयोरङ्गाङ्गिभावेन सङ्करः।

(म) निश्वासेति। निश्वासप्रवृत्तिरेव प्रमाणाधिकश्वासारम्भ एव, अंशुकं स्तनवसनं, चलं चपलं। चामरानिल एवेदं वसनं चालयति न पुनः श्वासारम्भ इति कृत्वा प्रकृतकारणगोपनं कृतवतीति भावः। व्याजोक्तिः।

(य) अन्तरिति। अन्तःप्रविष्टस्य अतुलनीयसौन्दर्य्यात्तत्क्षणादेव हृदयं गतस्य चन्द्रापीड़स्य स्पर्शलोभेनेव। स एव हस्त एव। तथा च अकस्मादुत्थानेन स्तनयोरावरणापसरणात् पुनस्तयोरावरणार्थमेव हृदये हस्तो दत्तः, न पुनरस्य हृदयं गतस्य स्पर्शलोभेनेति छलेन सखीनां पुरः प्रकृतकारणगोपनं कृतवतीत्याशयः। व्याजोक्तिः।

বিহ্বল হইয়া পড়িলেন। (ফ) এ দিকে চন্দ্রাপীড়কে দেখিয়া প্রথমতঃ কাদম্বরীর রোমাঞ্চ উৎপন্ন হইল, তাহার পর অলঙ্কারের শব্দ উঠিল এবং তাহার পর কাদম্বরী গাত্রোত্থান করিলেন।

(ব) তদনন্তর কামদেবই কাদম্বরীর ঘর্ম্ম জন্মাইলেন, কিন্তু সখীগণের নিকট, সত্বর গাত্রোত্থান করার পরিশ্রম তাহার ছল হইল। (ভ) উরুকম্পনেই কাদম্বরীর গতিরোধ করিল, কিন্তু নিন্দাভাজন হইল— নূপুরের রবে আকৃষ্ট হংসগণ। (ম) শ্বাস-আরম্ভই স্তনের বস্ত্র কম্পিত করিতে লাগিল, কিন্তু অন্যের নিকট নিমিত্ত হইল—চামরের বায়ু। (য) হৃদয়ে প্রবিষ্ট চন্দ্রাপীড়ের স্পর্শের ইচ্ছাতেই হৃদয়ের উপরে হাতখানা পড়িল, কিন্তু সেই হাতখানাই

(१) क्वचित्तु तमिति नास्ति। (२) ऊरुस्तम्भ एव। (३) निश्वासप्रवृत्तिरेव। (४) हस्तपल्लवः, स एव कारः।

चलितकर्णावतंसकुसुमरजो व्याज आसीत् (१) (र)। लज्जैव वक्तु न ददौ, मुखकमलपरिमलागतालिवृन्दं द्वारतामगात् (२) (ल)। मदनशरप्रथम-प्रहारवेदनैव सीत्कारम् (३) अकरोत्, कुसुमप्रकरकेतकोकण्टकक्षतिः साधारण-तामवाप (व)। वेपथुरेव करतलमकम्पयत्, निवेदनोद्यतप्रतीहारीनिवारणं कपटमभूत्। (श)

तदा च कादम्बरीं विशतो मन्मथस्यापि मन्मथ इवाभूद्द्वितीयः, तया सह

(र) आनन्द इति। चलितस्य चामरानिलेन उत्थानवेगेन वा कम्पितस्य कर्णावतंसकुसुमस्य रजः परागः। कुसुमरज एव ममाश्रुजलमपातयत्, नत्वानन्द इति भावः। व्याजोक्तिः।

(ल) लज्जेति। मुखकमलस्य परिमलेन सौरभेण आगतञ्च तत् अलिवृन्दं भ्रमरगणश्चेति तत्। द्वारतां गोपनसाधनतां। भ्रमरगण एव वक्तुं प्रतिबध्नाति न पुनर्लज्जेति भावः। व्याजोक्तिः।

(व) मदनेति। अकरोदजनयत्। कुसुमप्रकरेषु उपहारपुष्पसमूहेषु मध्ये या केतकी केतकीपुष्पं तस्याः कण्टकक्षतिः कण्टकेन चरणविदारणं साधारणतां सीत्कारसाधारणहेतुताम्। केतकीकण्टकक्षतिरेव मे सीत्कारमिममजनयत्, नतु मदनशरप्रहारवेदनेति व्याजीकृत्य प्रकृतगोपनं कृतवतीति भावः। व्याजोक्तिः।

(श) वेपथुरिति। वेपथुरेव कामावेशजनितकम्प एव। निवेदनाय विषयविशेषविज्ञापनाय उद्यता या प्रतीहारी तस्या निवारणं करकम्पनेन निषेधनम्। प्रतीहारीनिवारणव्याजेनोद्भिन्नमपि वेपथुमगोपयदिति भावः। व्याजोक्तिः।

(ष) कादम्बर्य्यां भावावेशमभिधाय चन्द्रापीडस्यापि तमभिधातुमाह तदेति। कादम्बरीं विशतो मन्मथस्यापि द्वितीयः स्वसमानोऽपरः मन्मथ इवाभूत्, यस्तया कादम्बर्य्या सह चन्द्रापीडहृदयं विवेशेत्यन्वयः। अन्यथैकस्यैव युगपदुभयत्र प्रवेशासम्भवादिति भावः। तथा च यथा चन्द्रापीडदर्शनानन्तरमेव तेन सह मन्मथः कादम्बरीहृदयं विवेश, तथैव कादम्बरीदर्शनानन्तरमपि तया सह मन्मथश्चन्द्रापीडहृदयमपि विवेशेति सरलार्थः।

স্তনযুগলের আবরণের ছল হইয়া দাঁড়াইল। (র) আনন্দই বাস্তবিক অশ্রুপাত করাইল, কিন্তু বাহিরে, কম্পিত-কর্ণাভরণ-পুষ্পের রেণু, তাহার ছল হইল। (ল) লজ্জাই বাস্তবিক বলিতে দিল না, কিন্তু মুখপদ্মের সৌরভে আগত ভ্রমরগণ, তাহার কারণ হইয়া দাঁড়াইল। (ব) প্রথম মদন-শর-প্রহারে কাদম্বরীর যে বেদনা হইয়াছিল, বস্তুতঃ সেই বেদনাই সীৎকার জন্মাইল, কিন্তু ভূতল-বিক্ষিপ্ত পুষ্পসমূহের মধ্যে যে কেতকীপুষ্প ছিল, তাহার কণ্টকের আঘাত, বাহিরে সেই সীৎকারের কারণ হইল। (শ) বেপথু (কামকম্প) উপস্থিত হইয়া কাদম্বরীর হস্ত কম্পিত করিল, কিন্তু কোন বিষয় জানাইবার জন্য উদ্যত প্রতীহারীকে নিবারণ করা সেই হস্ত-কম্পনের ছল হইল।

(ষ) তখন কাদম্বরীর সহিত যে কন্দর্প চন্দ্রাপীড়ের হৃদয়ে প্রবেশ করিয়াছিলেন, তিনিই

---

(१) व्याजमासीत्, व्यपदेशतामयासीत्। (२) द्वारपालतां। (३) शीत्कारं।

यो विवेश चन्द्रापीड़हृदयम् (ष)। तथाहि असावपि तस्या रत्नाभरणद्युतिमपि तिरोधानममंस्त, हृदयप्रवेशमपि परिग्रहमगणयत्, भूषणरवमपि सम्भाषणममन्यत, सर्वेन्द्रियाहरणमपि प्रसादमचिन्तयत्, देहप्रभासम्पर्कमपि सुरतसमागमसुखमकल्पयत्। (स)

कादम्बरी तु कृच्छ्रादिव दत्तकतिपयपदा महाश्वेतां स्नेहनिर्भरं चिरदर्शनजातोत्कण्ठा (१) सोत्कण्ठं कण्ठे जग्राह (ह)। महाश्वेतापि दृढ़तरदत्त-

अत्र द्रव्योत्प्रेक्षालङ्कारः, तथा "आत्मा जानाति यत् पाप" मित्यादिवत् यच्छब्दस्य परवाक्यगतत्वेन तच्छब्दानपेक्षणान्न विधेयाविमर्शदोषः।

(स) उक्तमर्थं समर्थयितुमाह तथाहीति। असौ चन्द्रापीड़ोऽपि तस्याः कादम्बर्य्याः, रत्नाभरणद्युतिमपि तिरोधानं व्यवधानसाधनममंस्त। अत्र प्रकाशरूपया द्युत्या व्यवधानासम्भवाद्विरोधः, नयनावरकत्वेन च तत्सम्भवात् समाधानमिति विरोधाभासोऽलङ्कारः। परिग्रहं पतित्वेन ग्रहणरूपमगणयत्, "कामः स्वतां पश्यति" इति न्यायादिति भावः। अत्र निरङ्गं केवलरूपकमलङ्कारः। सम्भाषणं अभ्यर्थनालापरूपं। अत्रापि पूर्ब्बवद्रूपकम्। सर्वेषामिन्द्रियाणां मनोनयनादीनां आहरणमाकर्षणमपि, प्रसादमनुग्रहमचिन्तयत्। अत्र स्ववस्तुहरणस्यानिष्टत्वेन प्रसादत्वासम्भवाद्विरोधः, भावाभिव्यक्तिपूर्ब्बकेन्द्रियहरणस्य परमाभीष्टत्वेन तत्सम्भवात् समाधानमिति पूर्ब्बवद्विरोधाभास एवालङ्कारः। सुरतसमागमसुखं रमणाय सम्मेलनजनितसुखरूपं। अत्रापि पूर्ब्बवद्रूपकम्।

(ह) कादम्बरीति। स्नेहनिर्भरं प्रेम्णा गाढ़ं, चिरदर्शनात् बहुकालात् परं साक्षात्कारात् जाता उत्कण्ठा यस्याः सा सोत्कण्ठं सौत्सुक्यं, कण्ठे जग्राह आलिङ्गनं चकारेत्यर्थः। अत्र हेतूत्प्रेक्षावृत्त्यनुप्रासयोः संसृष्टिः, तथा उत्कण्ठाशब्दस्य द्विरुपादानात् पुनरुक्ततादोषः, स च सोत्कण्ठमित्यस्य परित्यागेनैव समाधेयः।

যেন কাদম্বরী-হৃদয়-প্রবিষ্ট কন্দর্পের দ্বিতীয় হইয়া দাঁড়াইলেন। (স) কারণ—চন্দ্রাপীড়ও, কাদম্বরীর রত্নালঙ্কারের কিরণগুলিকেও, তাহার ব্যবধানের কারণ বলিয়া মনে করিতে লাগিলেন; কাদম্বরী, যে নিজের হৃদয়ে প্রবেশ করিয়াছিল, তাহাই পতিত্বে বরণ করাস্বরূপ গণনা করিলেন; অলঙ্কারের শব্দকেও, সম্ভাষণ বলিয়া মনে করিলেন; নিজের সকল ইন্দ্রিয় হরণ করাটাকেও অনুগ্রহ বলিয়া ভাবিলেন এবং কাদম্বরীর দেহের প্রভামাত্র লাভ করাটাকেও সম্মেলনসুখস্বরূপ মনে মনে কল্পনা করিলেন।

(হ) বহুকালের পর মহাশ্বেতাকে দেখিয়া কাদম্বরীর উৎকণ্ঠা জন্মিল, তাই তিনি, কষ্টবশতই যেন কতিপয় পদক্ষেপ করিয়া যাইয়া, স্নেহবশতঃ উৎকণ্ঠার সহিত মহাশ্বেতার কণ্ঠে গাঢ় আলিঙ্গন করিলেন। (ক্ষ) মহাশ্বেতাও, আবার কাদম্বরীকে গাঢ়তর আলিঙ্গন

(१) ...जातोत्कण्ठं।

कण्ठग्रहा तामवादीत्—"सखि! कादम्बरि! भारते वर्षे राजा अनेक-वर-तुरग-खुर-मुखोल्लेखदत्त-चतुः-समुद्र-मुद्रो रचितप्रजापीड़स्तारापीड़ो नाम, (च) तस्यायं निज-भुज-शिलास्तम्भ-विश्रान्त-विश्व-विश्वम्भरापीड़ः (१) चन्द्रापीड़ो नाम सूनुर्दिग्विजयप्रसङ्गेनागतः (२) भूमिमिमाम् (क)। एष च दर्शनात् प्रभृति प्रकृत्या मे निष्कारणबन्धुतां गतः, परित्यक्तसकलासङ्गनिष्ठुरामपि मे सविशेष-स्वभावसरलैर्गुणैराकृष्य चित्तवृत्तिं वर्त्तते, दुर्लभो हि दाक्षिण्यपरवशो निर्निमित्त-मित्रमकृत्रिमहृदयो विदग्धजनः (ख)। यतो दृष्टैवेमं (३) अहमिव त्वमपि

(च) मद्येति। दृढ़तरं यथा स्यात्तथा दत्तः कण्ठग्रह आलिङ्गनं यया सा। अनेके बहवः, वरा उत्तमाः, ये तुरगा घोटकाः, तेषां खुरमुखैः उल्लेखेन भूमिविदारणेन दत्ताश्चतुर्षु समुद्रेषु मुद्रा जयचिह्नानि येन सः। रचिता सुशासनादिभिर्निवारिता प्रजानां पीड़ा येन सः। अत्र छेकानुप्रासोऽलङ्कारः।

(क) तस्येति। अयं तस्य सूनुरिति सम्बन्धः। निजौ भुजाविव दृढत्वसाम्यात् शिलास्तम्भौ तत्र विश्रान्ता सुखेनावस्थिता विश्वा सर्वा विश्वम्भरा धरैव पीड़ा अनायासधार्य्यत्वसाम्यादुत्तंसो भूषणविशेषो यस्य सः। अत्र निरङ्गकेवलरूपकद्वयच्छेकानुप्रासयोः संसृष्टिः। "पीड़ार्त्तिमद्दं मोत्तंसकृपासु सरलद्रुमे।" इति हेमः।

(ख) एष इति। प्रकृत्या स्वभावेन। सविशेषाः सातिरेका लोकोत्तरा इत्यर्थः ते च ते स्वभाव-सरलाश्चेति तैः, गुणैर्दाक्षिण्यादिभिः करणैः, परित्यक्तैः सकलासङ्गैः सर्वसंसर्गैः निष्ठुरा कठिना तां तथाविधा-मपि मे मम चित्तवृत्तिं आकृष्य वर्त्तते। हि यस्मात्, दाक्षिण्यपरवशः सर्वेषामेवानुकूलव्यवहारीत्यर्थः, निर्निमित्तमित्रं अकारणबन्धुः, अकृत्रिमहृदयः प्रतारणाहीनचित्तः, विदग्धजनो विचक्षणलोको दुर्लभः। अतएवैष विदग्धो मम चित्तवृत्तिमाकृष्य वर्त्तत इति भावः। अत्र सामान्येन विशेषसमर्थनरूपोऽर्थान्तरन्यासो-ऽलङ्कारः।

করিয়া বলিল—"সখি! কাদম্বরি! ভারতবর্ষে তারাপীড় নামে এক রাজা আছেন। তিনি বহুতর উৎকৃষ্ট অশ্বের খুরাগ্রের বিদারণে চারি সমুদ্রের তীরেই নিজের বিজয়চিহ্ন স্থাপন করিয়াছেন এবং সুশাসনের গুণে প্রজাগণের সমস্ত কষ্টই নিবারণ করিয়াছেন; (ক) ইনি তাঁহারই পুত্র; ইঁহার নাম চন্দ্রাপীড়; ইঁহার বাহুযুগলরূপ শিলাস্তম্ভের উপরে সমগ্র পৃথিবীরূপ ভূষণ সুখে অবস্থান করিতেছে; ইনি দিগ্বিজয়প্রসঙ্গে এই স্থানে আসিয়াছেন। (খ) সাক্ষাৎকার হইতে স্বভাবতই ইনি আমার অকারণ বন্ধু হইয়াছেন এবং সকল আসক্তি পরিত্যাগ করায় আমার চিত্তবৃত্তি নিষ্ঠুর হইলেও, ইনি, লোকাতীত ও স্বভাব-সরল গুণগ্রামে আমার সেই চিত্তবৃত্তিকে আকর্ষণ করিয়া অবস্থান করিতেছেন; কারণ—সকলেরই আনুকূল্যে নিরত, অকারণ-বন্ধু ও অকৃত্রিমচিত্ত এইরূপ বিচক্ষণলোক জগতে দুর্লভ। (গ) যে হেতু—আমার

(१)...विश्रान्तविश्वम्भरापीड़ः। (२) अनुगतः। (३) दृष्ट्वा चेमं, दृष्टेमं।

निर्म्माणकौशलं प्रजापतेः, निःसपत्नताञ्च रूपस्य, स्थानाभिनिवेशित्वञ्च लक्ष्म्याः, सद्भर्त्तृतासुखञ्च पृथिव्याः, सुरलोकातिरिक्तताञ्च मर्त्त्यलोकस्य, सफलताञ्च मानुषीलोचनानाम्, एकस्थानसमागमञ्च सर्व्वकलानाम्, ऐश्वर्य्यञ्च सौभाग्यस्य, अग्राम्यताञ्च मनुष्याणां ज्ञास्यसीति बलादानीतोऽयम् (ग)। कथिता चास्य मया बहुप्रकारं (१) प्रियसखी। तदपूर्व्वदर्शनोऽयमिति विमुच्य लज्जाम्, अनुपजातपरिचय इत्युत्सृज्य अविस्रम्भताम्, अविज्ञातशील इत्यपहाय शङ्काम्, यथा

(ग) यत इति। यतस्त्वमपि ज्ञास्यसीति सम्बन्धः। रूपस्य सौन्दर्य्यस्य निःसपत्नतां प्रतिस्पर्द्धिराहित्यं अतुलनीयतामित्यर्थः। लक्ष्म्या राजश्रियः स्थाने यथास्थले अभिनिवेशित्वं स्थातुमाग्रहवत्त्वं। पृथिव्याः सद्भर्त्ततया उत्कृष्टाधिपतिकतया सुखं। मर्त्त्यलोकस्य सुरलोकात् स्वर्गात् अतिरिक्ततामुत्कर्षं अस्याधिष्ठानादिति भावः। एतेनेन्द्रादपि चन्द्रापीड़स्योत्कर्षो व्यज्यते। मानुष्यो मनुष्यजातीयाः स्त्रियस्तासां लोचनानां सततमस्यावलोकनादिति भावः। सर्व्वकलानां सकलकलाविद्यानां नृत्यगीतादीनां, एकस्थाने समागमं सम्मेलनं। एतेन सकलकलाविद्यावत्त्वं सूच्यते। सौभाग्यस्य भाग्यवत्तायाः, ऐश्वर्य्यं महासम्पदम्, अस्य लाभादिति भावः। एतेनायं सर्व्वस्यैव दुर्ल्लभ इति ध्वन्यते। अग्राम्यताममन्दतां। एतेनास्य देवादिभ्योऽपि वैचक्षण्यं द्योत्यते। अत्र निर्म्माणकौशलमित्यादीनां ज्ञास्यसीत्येकया क्रियया कर्म्मतयाऽभिसम्बन्धात्तुल्ययोगितालङ्कारः।

(घ) कथितेति। अस्य कुमारस्य समीपे, प्रियसखी त्वम्, बहवः प्रकारा यस्मिन् कर्म्मणि तद्यथा तथा कथिता वर्णिता। अयं कुमारः, अपूर्व्वं नूतनं दर्शनं यस्य स तादृश इति कृत्वेत्यं सर्व्वत्र योजना। न विद्यते विस्रम्भो विश्वासो यस्मिन् सः, तस्य भावस्ताम्। अत्रापि अस्मिन् कुमारेऽपि वर्त्तितव्यं त्वया व्यवहर्त्तव्यम्, सर्व्वगुणाकरत्वान्न तव दोष आशङ्कनीय इति भावः।

যায়, তুমিও, ইঁহাকে দেখিয়াই বিধাতার নির্ম্মাণ-নৈপুণ্য, সৌন্দর্য্যের অতুলনীয়তা, রাজলক্ষীর যথাস্থানে থাকিবার আগ্রহ, উৎকৃষ্ট পতিলাভনিবন্ধন পৃথিবীর সুখ, স্বর্গলোক অপেক্ষা মর্ত্ত্যলোকের উৎকর্ষ, মনুষ্যরমণীগণের নয়নের সার্থকতা, একস্থানে সমস্ত কলাবিদ্যার সম্মেলন, সৌভাগ্যের সম্পদ এবং মনুষ্যদিগের ভদ্রতা—এই সমস্তই জানিতে পারিবে; এই জন্যই ইঁহাকে আমি বলপূর্ব্বক আনয়ন করিয়াছি। (ঘ) এবং ইঁহার নিকট আমি বহু রকমে তোমার পরিচয় দিয়াছি; অতএব, 'ইঁহার সহিত এই প্রথম সাক্ষাৎ' এই ধারণাবশতঃ যে লজ্জা হইতে পারে, তাহা ত্যাগ করিয়া, পরিচয় হয় নাই বলিয়া যে অবিশ্বাস আসিতে পারে, তাহাও পরিত্যাগ করিয়া এবং অজ্ঞাত-স্বভাব বলিয়া যে আশঙ্কা জন্মিতে পারে, তাহাও না করিয়া, তুমি আমার সঙ্গে যেরূপ ব্যবহার কর, ইঁহার সঙ্গেও সেইরূপ ব্যবহারই করিবে। (ঙ) ইনি

---

(१) बहुधा ।

मयि तथाचापि वर्त्तितव्यम्, (१) (ङ)। एष ते मित्रञ्च बान्धवश्च परिजनश्च" इत्यावेदिते तया, चन्द्रापीड़ः प्रणाममकरोत्। (ङ)

कृतप्रणामञ्च तं तदा कादम्बर्य्यास्तिर्य्यग्विलोकयन्त्याः सस्नेहमतिदीर्घलोचनापाङ्गभागं गच्छतस्तारकस्य (२) श्रम-सलिल-लव-विसर इवानन्दवाष्पजल-बिन्दुनिकरो निपपात (च)। त्वरितमभिप्रस्थितस्य धूलिरिव सुधाधवला स्मित-ज्योत्स्ना विससार (छ)। सम्मान्यतामयं हृदयरुचिरो जनः प्रतिप्रणामेनेति शिरो वक्तुमिवैका भ्रू लता समुन्ननाम (ज)। अङ्गुलिविवरविनिःसृतमरकता-

(ङ) एष इति। मित्रञ्चेत्यादिना सर्व्वथैवायमेव पतित्वेन वरणीय इति व्यज्यते। तया महाश्वेतया, इति पूर्व्वोक्तविषये आवेदिते सति। गन्धर्व्वाणां देवयोनित्वेन तत्कन्यायै कादम्बर्य्यै मानुषस्य चन्द्रापीड़स्य नमस्कारो युज्यत एवेति बोध्यम्।

(च) कृतेति। तदा कृतप्रणामञ्च तं चन्द्रापीड़ं सस्नेहं सानुरागं तिर्य्यक् विलोकयन्त्याः कादम्बर्य्याः, अतिदीर्घलोचनस्य अपाङ्गभागं प्रान्तदेशं गच्छतस्तारकस्य तारायाः, श्रमस्तावद्गमनेनापि यः खेदस्तस्य ये सलिल-लवास्तज्जनिता घर्म्मबिन्दवस्तेषां विसरः समूह इव। अत्रोपमालङ्कारः। "कनीनिकायां नक्षत्रे तारकं तारकेति च।" इति विश्वः।

(छ) त्वरितमिति। अभिप्रस्थितस्य सुखवर्त्मना चन्द्रापीड़ं प्रति चलितस्य हृदयस्य कादम्बर्य्या मनसः, धूलिः पादरज इव, सुधाधवला स्मितज्योत्स्ना मन्दहास्यप्रभा, विससार विसृता बभूव। भावावेशेन कादम्बरी स्मितमकरोदिति भावः। अत्र लुप्तोपमाजात्युत्प्रेक्षयोरङ्गाङ्गिभावेन सङ्करः।

(ज) सम्मान्यतामिति। रुचिं राति ददातीति रुचिरः, हृदयरुचिरः अतुलनीयसौन्दर्य्यान्मनसो रुचिजनकः सर्व्वथैव मनोमत इत्यर्थः। शिरो वक्तुमिव शिरसा कथयितुमिव। अत्र फलोत्प्रेक्षालङ्कारः।

তোমার সুহৃৎ, বন্ধু ও পরিজন বলিয়া জানিবে" মহাশ্বেতা এইরূপ জানাইলে চন্দ্রাপীড় কাদম্বরীকে নমস্কার করিলেন।

(চ) তখন কাদম্বরী কটাক্ষপাত করিয়া স্নেহের সহিত চন্দ্রাপীড়কে দেখিতে লাগিলেন, তাঁহার নয়নের তারা সুদীর্ঘ নয়নের প্রান্তভাগে যাইয়া উপস্থিত হইল এবং তাহা হইতে পরিশ্রম-বশতঃ ঘর্ম্মবিন্দু-সমূহের ন্যায় আনন্দাশ্রুবিন্দুসমূহ পতিত হইতে লাগিল। (ছ) কাদম্বরীর হৃদয়, চন্দ্রাপীড়ের প্রতি দ্রুত প্রস্থান করিয়াছিল; সুতরাং সেই হৃদয়ের চরণধূলির ন্যায় অমৃততুল্য শুভ্রবর্ণ ঈষৎ হাস্যের প্রভা ছড়াইয়া পড়িল। (জ) "প্রতিনমস্কার করিয়া এই মনোমত লোকটিকে সম্মানিত কর" এই কথা মস্তককে বলিবার জন্যই যেন কাদম্বরীর একটি ভ্রূ, উপরের দিকে উঠিল। (ঝ) হাই তুলিতে আরম্ভ করায় কাদম্বরীর মুখমণ্ডল কথা

(१) प्रवर्त्तितव्यं।

(२) अतिदीर्घलोचनाया अपाङ्गभागं गच्छतस्तारतारकस्य लोचनस्य अतिदीर्घलोचनयोरपाङ्गभागं।

ङ्गुलीयकमयूखलेखो विभ्रमगृहीतताम्बूलवीटिक इव (१) करो जृम्भारम्भमन्थरं मुखमुत्ससर्प (झ)। स्रवत्स्वेदजलधौतलावण्यनिर्म्मलेषु चास्याः संक्रान्त-(२) प्रतिबिम्बतया सञ्चरन्मूर्त्तिर्मकरकेतुरिवावयवेष्वदृश्यत चन्द्रापीड़ः (ञ)। तथाहि शिञ्जन्मणिनूपुरपटेन भुवं (३) आलिखताङ्गुष्ठेनाहूत इव चरणनखेषु निपपात (ट)। दर्शनातिरभसप्रधावितेन गत्वा हृदयेनानीत इव स्तनाभ्यन्तरे

(झ) अङ्गुलीति। अङ्गुलीविवरेभ्यो विनिःसृता मरकताङ्गुलीयकानां मयूखलेखा किरणराजिर्यस्य सः, अतएव विभ्रमेण विलासेन गृहीता ताम्बूलवीटिका येन सः, मरकतमणिनिर्म्मिताङ्गुरीयकाणां मयूखलेखायास्ताम्बूलवीटिकावत् श्यामवर्णत्वादिति भावः। करो हस्तः। जृम्भाया आरम्भेण मन्थरं जडं मुखं उत्ससर्प उज्जगाम। अत्र पदार्थहेतुकं काव्यलिङ्गं, तन्मयूखलेखायास्ताम्बूलवीटिकात्वेनोत्प्रेक्षणाच्चोत्प्रेक्षा चानयोरङ्गाङ्गिभावेन सङ्करः।

(ञ) स्रवदिति। किञ्च, स्रवता भावोदयादुद्गलता स्वेदजलेन धौतं यल्लावण्यं तेन निर्म्मलेषु। एतेन प्रतिबिम्बपतनयोग्यत्वं सूचितम्। अस्याः कादम्बर्य्यां अवयवेषु अङ्गेषु, चन्द्रापीडः संक्रान्तप्रतिबिम्बतया स्वस्यैव सञ्चरितप्रतिमूर्त्तिकतया हेतुना, सञ्चरन्मूर्त्तिर्मकरकेतुर्मदन इवादृश्यत सखीभिरिति शेषः। अत्र द्रव्योत्प्रेक्षालङ्कारः, तेन च कादम्बर्य्याः कामातुरत्वं चन्द्रापीडस्य च मदनतुल्यसौन्दर्यं व्यज्यत इत्यलङ्कारेण वस्तुध्वनिः।

(ट) उक्तमेवार्थं विवृण्वन्नाह तथाहीति। भुवं आलिखता किञ्चित् किञ्चित् कर्षता, अतएव शिञ्जत् अव्यक्तशब्दं कुर्वत् मणिनूपुरपटं यत्र तादृशेन अङ्गुष्ठेन आहूत इव नूपुररवेणामन्त्रित इव चन्द्रापीडः कादम्बर्य्याश्चरणनखेषु निपपात। तेषु तस्य प्रतिबिम्बं पपातेत्यर्थः। अत्र क्रियोत्प्रेक्षालङ्कारः।

(ठ) दर्शनेति। दर्शनाय चन्द्रापीडस्यावलोकनाय अतिरभसमतिद्रुतं प्रधावितेन हृदयेन गत्वा आनीत इव चन्द्रापीडः कादम्बर्य्याः स्तनाभ्यन्तरे सखीभिः समदृश्यत। क्रियोत्प्रेक्षा।

বলিতে অক্ষম হইল, দক্ষিণ হস্ত যাইয়া তাহার উপরে উঠিল; সেই দক্ষিণ হস্তের অঙ্গুলীবিবর হইতে মরকতমণিময় অঙ্গুরীয়কসমূহের কিরণশ্রেণী নির্গত হইতে লাগিল; তাহাতে বোধ হইতেছিল যেন, সেই দক্ষিণহস্ত একটি তাম্বূল-বীটিকা (পানের বীড়ি) ধারণ করিয়াছে। (ঞ) ঘর্ম্মজল নির্গত হইয়া কাদম্বরীর অঙ্গ-লাবণ্যকে প্রক্ষালন করিতেছিল, তাহাতে তাহার অঙ্গগুলি আরও নির্ম্মল হইয়াছিল; সুতরাং সেই অঙ্গে চন্দ্রাপীড়ের প্রতিবিম্ব পতিত হওয়ায় দেখা যাইতে লাগিল যেন কাদম্বরীর সমস্ত অঙ্গে কামদেব বিচরণ করিতেছেন। (ট) কাদম্বরী চরণাঙ্গুষ্ঠদ্বারা একটু একটু করিয়া ভূতল কর্ষণ করিতেছিল, তাহাতে মণিময় নূপুর বাজিতেছিল, সুতরাং বোধ হইতেছিল যে, সেই চরণাঙ্গুষ্ঠকর্ত্তৃক আহূত হইয়াই যেন চন্দ্রাপীড় তাহার চরণের নখসমূহে পতিত হইয়াছেন। (ঠ) কাদম্বরীর হৃদয়, চন্দ্রাপীড়কে দেখিবার জন্য অতিক্রত যাইয়া তাঁহাকে যেন আনয়ন করিল, তাই কাদম্বরীর স্তনযুগলের ভিতরে চন্দ্রাপীড়কে

(१) ...लेखाविभ्रम...। ...अङ्गुलीयकलेख:...। (२) सम्भ्रसंक्रान्त...। (३) मणिमयं।

समदृश्यत (ठ)। विकचकुवलयदामदीर्घया च दृष्ट्या निपीत इव कपोलतले समलक्ष्यत (ड)। सर्वासामिव च तदा तासां कन्यकानां तिर्य्यक् पश्यन्तीनां तं कुतूहलादपाङ्गचुम्बिन्यो निर्गन्तुकामा इव (१) कर्णपूरमधुकरैः समं बभ्रमुस्तरलास्तारकाः (ढ)।

कादम्बरी तु सविभ्रमकृत-प्रतिप्रणामा (२) महाश्वेतया सह पर्य्यङ्के निषसाद (ण)। ससम्भ्रमं परिजनोपनीतायाञ्च (३) शयनशिरोभागनिवेशितायां धवलांशुकप्रच्छदपटायां हेमपादाङ्कितायां (४) पीठिकायां चन्द्रापीडः समुपाविशत् (त)। महाश्वेतानुरोधेन च विदितकादम्बरीचित्ताभिप्रायाः

(ड) विकचेति। विकचकुवलयदामवत् प्रस्फुटितनीलोत्पलमालावत् दीर्घया अनवरतकटाक्षपातादिति भावः, दृष्ट्या निपीतो निगीर्ण इव चन्द्रापीडः कादम्बर्य्याः कपोलतले। क्रियोत्प्रेक्षा।

(ढ) सर्वासामिति। कुतूहलात्तं चन्द्रापीडं तिर्य्यक् पश्यन्तीनां सर्वासामेव तासां कन्यकानां अपाङ्गचुम्बिन्यो नयनप्रान्तवर्त्तिन्यः, तरलाश्चञ्चलास्तारकाः, निर्गन्तुकामा इव सत्यः, कर्णपूरमधुकरैः समं कर्णाभरणीभूतपुष्पगतभ्रमरैः सह बभ्रमुः। अत्र गुणोत्प्रेक्षासहोक्त्योरङ्गाङ्गिभावेन सङ्करः।

(ण) कादम्बरीति। सविभ्रमं सविलासं कृतः प्रतिप्रणामश्चन्द्रापीडाय प्रतिनमस्कारो यया सा।

(त) ससेति। किञ्च, चन्द्रापीडः ससम्भ्रमं सत्वरं परिजनेन उपनीतायामुपस्थापितायां, शयनस्य शय्यायाः शिरोभागे निवेशितायां, धवलांशुकमिव प्रच्छदपट आस्तरणवस्त्रं यस्यास्तस्यां, हेमपादैः स्वर्णनिर्मितपादैरङ्कितायां पीठिकायां क्षुद्रपीठे समुपाविशत्।

(थ) महेति। किञ्च, विदितकादम्बरीचित्ताभिप्रायाः प्रतीहार्य्यः, महाश्वेताया अनुरोधेन, संवृतेषु

দেখা যাইতে লাগিল। (ড) এবং প্রস্ফুটিত নীলোৎপলমালার ন্যায় সুদীর্ঘ কাদম্বরীর নয়নযুগল চন্দ্রাপীড়কে যেন পান করিল, সুতরাং তিনি কাদম্বরীর কপোলমণ্ডলেও দৃষ্টিগোচর হইতে লাগিলেন। (ঢ) আর তখন সমস্ত কন্যাগণই কৌতুকবশতঃ চন্দ্রাপীড়কে বক্র দৃষ্টিতে দর্শন করিতেছিল, তাই তাহাদের চঞ্চল নয়ন-তারা, প্রান্ত-ভাগে যাইয়া নির্গত হইতে ইচ্ছা করিয়াই যেন কর্ণাভরণ-কুসুমের ভ্রমরগণের সহিত ঘুরিতে লাগিল।

(ণ) কাদম্বরীও, নানাবিধ বিলাসের সহিত চন্দ্রাপীড়কে নমস্কার করিয়া, মহাশ্বেতার সহিত পর্য্যঙ্কের উপরে যাইয়া উপবেশন করিল। (ত) এদিকে কোন পরিচারিকা তাড়াতাড়ি একখানি ক্ষুদ্র পীঠ আনিয়া কাদম্বরীর শয্যার শিয়রের দিকে সংস্থাপন করিল, তাহার উপরে শুভ্রবর্ণ একখানি আস্তরণ বস্ত্র পাতা ছিল এবং তাহার পায়াগুলি সুবর্ণময় ছিল; চন্দ্রাপীড় তাহার উপরে উপবেশন করিলেন। (থ) প্রতীহারীরা কাদম্বরীর মনের অভিপ্রায়

(१) अपाङ्गचुम्बिन्या दृष्ट्या निर्गन्तुकामा इव। (२)...कृतप्रणामा।
(३) ससम्भ्रमपरिजनोपनीतायाञ्च। (४) अत्र विविधरत्नप्रभाभासितायामिति क्वचित् पाठः।

संवृत-मुख-न्यस्त-हस्त-दत्त-शब्द-निवारण-संज्ञा: प्रतीहार्य्यो वेणुरवान् वीणाघोषान् गीतध्वनीन् मागधीजयशब्दांश्च सर्वतो निवारयाञ्चक्रु: (थ)। त्वरितपरिजनोपनीतेन च सलिलेन कादम्बरी स्वयमुत्थाय महाश्वेतायाश्चरणौ प्रक्षाल्योत्तरीयांशुकेनापमृज्य पुन: पर्य्यङ्कमारुरोह। चन्द्रापीड़स्यापि कादम्बर्य्या: सखी रूपानुरूपा जीवितनिर्विशेषा सर्वविस्रम्भभूमिर्मदलेखेति नाम्ना बलादनिच्छतोऽपि प्रक्षालितवती चरणौ (द)। महाश्वेता तु कर्णाभरणप्रभावर्षिण्यंसदेशे (१) सप्रेम पाणिना स्पृशन्ती, मधुकर-भर-पर्य्यस्तञ्च कर्णावतंसमुत्क्षिपन्ती, चामरपवन-विधुति-(२) पर्य्यस्ताञ्च (३) अलकवल्लरीमनुष्वजमाना कादम्बरीमनामयं

मुद्रितेषु मुखेषु न्यस्तैर्हस्तै:, दत्ता शब्दनिवारणसंज्ञा शब्दकरणनिवृत्तिसङ्केतो याभिस्तास्तथाभूता: सत्य:। मागधीनां स्तुतिपाठिकानां ये जयशब्दास्तांश्च।

(द) त्वरितेति। रूपेण सौन्दर्य्येण अनुरूपा स्वसदृशी। जीवितनिर्विशेषा अतीवस्नेहभाजनमित्यर्थ:, सर्वविस्रम्भभूमि: सकलप्रकारविश्वासपात्रम्। मदेन स्वसौन्दर्य्योन्मत्ततया लिखति अङ्कयति यूनां चित्तमिति मदलेखा लिखते: पचादित्वादच्।

(ध) महेति। कर्णाभरणप्रभाया वर्षं वृष्टिरस्यास्तीति तस्मिन्, अंसदेशे कादम्बर्य्या: स्कन्धदेशे। मधुकराणां भरेण पर्य्यस्तं स्खलितं कर्णावतंसं कादम्बर्य्या: कर्णाभरणीभूतं पुष्पं, उत्क्षिपन्ति पुनर्यथास्थानमुत्तोलयन्ती। तथा चामरपवनेन या विधुति: सञ्चालनं तेन पर्य्यस्ताम् इतस्ततो विकीर्णाम्, अलकवल्लरीं कादम्बर्य्या: कुन्तलकलापाग्रदेशमित्यर्थ:, अनुष्वजमाना हस्तेनामर्शन्ती। अनामयमारोग्यम्। प्रच्छधातुर्द्विकर्म्मक:।

বুঝিয়া এবং মহাশ্বেতার অনুরোধে, মুদ্রিত মুখমণ্ডলের উপরে হস্ত সংস্থাপন পূর্ব্বক, শব্দ করিতে নিষেধের সঙ্কেত জানাইয়া, সকল দিকের বংশীর রব, বীণার ঝঙ্কার, গীতের শব্দ ও স্তুতিপাঠিকাদিগের জয়ধ্বনি নিবারণ করিল। (দ) কোন পরিচারিকা তাড়াতাড়ি জল আনিয়া দিল, কাদম্বরী নিজেই উঠিয়া তাহা দ্বারা মহাশ্বেতার চরণযুগল প্রক্ষালনপূর্ব্বক উত্তরীয় বসনদ্বারা মার্জ্জনা করিয়া পুনরায় যাইয়া পর্য্যঙ্কের উপর উঠিলেন। এদিকে সৌন্দর্য্যে কাদম্বরীর অনুরূপ, ভালবাসায় তাহার জীবনের তুল্য এবং সকলপ্রকার বিশ্বাসের পাত্র মদলেখা নামে কাদম্বরীর কোন সখী, চন্দ্রাপীড় ইচ্ছা না করিলেও, বলপূর্ব্বক তাঁহারও চরণযুগল প্রক্ষালন করিয়া দিল। (ধ) তাহার পর মহাশ্বেতা হস্তদ্বারা, কর্ণালঙ্কারের প্রভায় আলোকিত কাদম্বরীর স্কন্ধদেশে স্নেহের সহিত স্পর্শ করিতে লাগিল; ভ্রমরের ভরে কাদম্বরীর কাণের ফুলটি পড়িয়া গিয়াছিল, মহাশ্বেতা তাহা আবার তুলিয়া দিল; চামরের বায়ুতে

---

(१)...अपाङ्गदेशे। (२)...विधूति...। (३)...पर्य्यस्तालक...।

पप्रच्छ (ध)। सा तु सखीप्रेम्णा गृहनिवासेन कृतापराधेवानामयेनैव लज्जमाना कृच्छ्रादिव कुशलमाचचक्षे (न)। (१) समुपजातशोकापि च तस्मिन् काले महाश्वेतामुखनिरीक्षणतत्परापि मुहुर्मुहुरपाङ्ग-विक्षेप-प्रचलित-तरल-तर-तार-शारोदरं (२) चक्षुर्मण्डलितचापेन भगवता कुसुमधन्वना बलान्नीयमानं चन्द्रापीड़पीड़नायेव (३) न शशाक निवारयितुम् (प)। तेनैव क्षणेन तेनासन्नसखी-कपोलसंक्रान्तेनेर्ष्यां, (४) रोमाञ्च-भिद्यमान-कुच-तट-नश्यत्-प्रतिबिम्बेन विरह-

(न) सेति। सा कादम्बरी। अनामयेनैव अनामयावस्थानेनैव लज्जमाना, सखित्वे न समानसुखदुःख-भोगौचित्यादिति भावः।

(प) समुपेति। किञ्च, कादम्बरी समुपजातशोकापि, महाश्वेताया दर्शनेन तच्छोकस्मरणादिति भावः। अपाङ्गे प्रान्तभागे विक्षेपेण चन्द्रापीड़ं प्रति कटाक्षपातवेलायां सञ्चालनेन प्रचलिता अतएव तरल-तरा अत्यन्तचञ्चला तारा यस्य तत्तथोक्तञ्च तत्, तत एव च शारं विचित्रं उदरमभ्यन्तरं यस्य तत्तथोक्तञ्चेति तत्ताद्दृशम्। मण्डलितचापेन आकृष्टकार्मुकेण भगवता कुसुमधन्वना मदनेन चन्द्रापीड़पीड़नायेव, बलात् प्रति-नीयमानं चक्षुः, निवारयितुं न शशाक। अत्र फलोत्प्रेक्षालङ्कारः।

(फ) तेनेति। सा कादम्बरी, तेन चन्द्रापीड़ेन, आसन्नायाः सख्याः कपोले संक्रान्तेन प्रतिबिम्बितेन हेतुना ईर्ष्यामभजत, स्वप्राणनाथस्य युवत्यन्तरगामित्वादिति भावः। रोमाञ्चैर्भिद्यमाने युज्यमाने कुचतटे आत्मनः स्तनमण्डले नश्यत् रोमाञ्चैरन्तरावचीभूतत्वादिव लोपं गच्छत् प्रतिबिम्बं यस्य तेन तादृशेन चन्द्रापीड़ेन हेतुना, विरहव्यथामभजत, प्रतिबिम्बाभावादिति भावः। स्वेदार्द्रं घर्म्माक्तं वक्षःस्थले घटिता स्वेदैरेव

কাদম্বরীর কেশকলাপ আলুলায়িত হইয়াছিল, মহাশ্বেতা তাহা আবার সমান করিয়া দিল, এই অবস্থায় সে, কাদম্বরীকে তাহার মঙ্গল জিজ্ঞাসা করিল। (ন) কাদম্বরী কিন্তু গৃহে বাস করায় মহাশ্বেতার নিকট যেন অপরাধ করিয়াছিলেন, সুতরাং নিজে মঙ্গলে থাকায় লজ্জিত হইয়া, তাহার প্রতি প্রণয়বশতঃ কষ্টেই যেন নিজের মঙ্গল সংবাদ বলিলেন। (প) মহাশ্বেতাকে দেখিয়া কাদম্বরীরও শোক উপস্থিত হইয়াছিল এবং তিনি, মহাশ্বেতার মুখের দিকেই নিরীক্ষণ করিয়া রহিয়াছিলেন; তথাপি ভগবান্ কামদেব, নিজের ধনুক মণ্ডলীকৃত করিয়া চন্দ্রাপীড়কে পীড়ন করিবার জন্যই যেন কাদম্বরীর নয়নযুগলকে বলপূর্ব্বক চন্দ্রাপীড়ের দিকে লইয়া যাইতেছিলেন, সুতরাং বারংবার তারা দুইটিকে নয়নযুগলের প্রান্তভাগে প্রেরণ করায় তাহারা অত্যন্ত চঞ্চল হইয়াছিল, তাহাতে নয়নযুগলের মধ্যস্থান বিচিত্র হইয়াছিল; কিন্তু কাদম্বরী সেই নয়নযুগলকে নিবারণ করিতে সমর্থ হইয়াছিলেন না। (ফ) সেই সময়েই নিকটবর্ত্তিনী কোন সখীর কপোলমণ্ডলে চন্দ্রাপীড়ের প্রতিমূর্ত্তি পতিত হওয়ায় কাদম্বরীর ঈর্ষ্যা জন্মিল; রোমাঞ্চ উৎপন্ন হইয়া কাদম্বরীর স্তনমণ্ডলকে উচু-নীচু করিয়াছিল, সুতরাং সে স্থান হইতে

(१)...तदा समुप...। (२)...सारोदरं। (३)...पीड़नयेव। (४) ईर्ष्यया।

व्यथां, स्वेदार्द्र-(१) वक्ष:स्थल-घटित-शालभञ्जिका-प्रतिमेन सपत्नीरोषं (२) निमिषता दौर्भाग्यशोकं, आनन्दजलतिरोहितेनान्धतादु:खमभजत सा (फ)।

मुहूर्त्तापगमे च ताम्बूलदानोद्यतां महाश्वेता तामभाषत—"सखि! कादम्बरि! सम्प्रतिपन्नमेव (३) सर्वाभिरेवास्माभि: (४) अयमभिनवागतश्चन्द्रापीड़ आराधनीय:, तदस्मै तावद्दीयतां ताम्बूलम्" इत्युक्ता च किञ्चिद्विवर्त्तितावनमित-मुखी (५) शनैरव्यक्तमिव "प्रियसखि! लज्जेऽहमनुपजातपरिचया प्रागल्भ्येनानेन, गृहाण, त्वमेवास्मै प्रयच्छ" इत्युवाच (६) (ब)। (७) पुन:पुनरभिधीयमाना

रचिता या शालभञ्जिका पुत्तलिका तस्यां प्रतिमा प्रतिबिम्बं यस्य तेन तादृशेन चन्द्रापीड़ेन हेतुना, सपत्नी-रोषमभजत, चन्द्रापीड़प्रतिबिम्बग्राहिण्या: शालभञ्जिकाया अपि स्त्रीत्वादिति भाव:। निमिषता आत्मानं पश्य-तापि नयनयोर्निमेषं कुर्वता चन्द्रापीड़ेन हेतुना, दौर्भाग्यशोकं आत्मनो दुर्भगतादु:खमभजत, निमेषकरणेन स्वदर्शने तादृशीत्सुक्याभावप्रत्यायनादिति भाव:। तथा आनन्दजलेन स्वनयनस्य एवानन्दाश्रुपातेन तिरोहितो नयनावरणादिवावृतस्तेन चन्द्रापीड़ेन हेतुना, अन्धतादु:खमभजत, दर्शनव्याघातादिति भाव:। एतेनानुरागा-तिशयो व्यज्यते। अत्र अभजतेत्येकया क्रियया व्यथामित्यादीनामनेकेषां कर्म्मतयाभिसम्बन्धात्तुल्ययोगितालङ्कार:।

(ब) मुहूर्त्तेति। महाश्वेताय ताम्बूलदानायोद्यतां तां कादम्बरीम्। सम्प्रतिपन्नमेव युक्तियुक्तमेव यथा स्यात्तथा आराधनीय:, "सर्वत्राभ्यागतो गुरु"रिति स्मृतेरिति भाव:। इत्युक्ता महाश्वेतया इत्थमभिहिता च कादम्बरी, किञ्चिद्विवर्त्तितमवनमितञ्च मुखं यया सा तादृशी सती, अव्यक्तमिवास्फुटमिव इत्युवाचेत्यन्वय:।

চন্দ্রাপীড়ের প্রতিবিম্ব লুপ্ত হইয়া গিয়াছিল, তাহাতেই কাদম্বরীর বিরহবেদনা উপস্থিত হইল; কাদম্বরীর বক্ষঃস্থলে ঘর্ম্মজল উৎপন্ন হইয়া একটি পুত্তলিকা আকারে পরিণত হইয়াছিল, তাহার উপরে চন্দ্রাপীড়ের প্রতিবিম্ব পড়িয়াছিল, তাহাতেই কাদম্বরীর সপত্নীবিদ্বেষ জন্মিল; কাদম্বরীকে দেখিবার সময়ে চন্দ্রাপীড় নয়নের নিমেষ দিতেছিলেন, ইহাতেই কাদম্বরীর নিজের দৌর্ভাগ্যশোক উপস্থিত হইল; কাদম্বরীর নয়ন হইতে আনন্দাশ্রু পতিত হইতে থাকিয়া দর্শনের ব্যাঘাত জন্মাইতেছিল, তাই তখন কাদম্বরী অন্ধতার দুঃখ অনুভব করিতেছিলেন।

(ব) এই ভাবে কিছু কাল অতীত হইলে, কাদম্বরী মহাশ্বেতাকে তাম্বূল দান করিতে উদ্যত হইলেন, তখন মহাশ্বেতা তাঁহাকে কহিল—"সখি! কাদম্বরি! চন্দ্রাপীড় নূতন আসিয়াছেন, সুতরাং আমাদের সকলেরই উঁহাকে আদর করা উচিত; অতএব তুমি উঁহাকেই তাম্বূল দান কর" এই কথা বলিলে কাদম্বরী, মুখখানা কিছু ফিরাইয়া ও অবনত করিয়া ধীরে ধীরে অব্যক্তভাবে বলিলেন—"প্রিয়সখি! উঁহার সহিত আমার পরিচয় হয় নাই, সুতরাং এই জাতীয় ধৃষ্টতা আচরণে আমি লজ্জিত হইতেছি; অতএব ধর, তুমিই উঁহাকে তাম্বূল দান কর।"

(१) विरहव्यथास्वेदार्द्र...। (२) सपत्नीरोषात्। (३) क्वचिदिदं पाठो नास्ति। (४) सर्वाभिरस्माभि:। (५)...वानमितमुखी। (६) सा ताम्। (७) कादम्बरी तु।

च तयां कथमपि ग्राम्येव चिराद्दानाभिमुखं मनश्चक्रे। महाश्वेतामुखादनाकृष्ट-दृष्टिरिव (१) वेपमानाङ्गयष्टिराकुललोचना (२) स्थूलस्थूलं निश्वसती (३) निजशर-प्रहारमूर्च्छिता मन्मथेन स्नपितेव स्वेदजलविसरैः, स्वेदजलविसरनिमज्जनभयेन च हस्तावलम्बनमिव याचमाना, साध्वस-परवशा, पतामीति लगितुमिव (४) कृत-प्रयत्ना प्रसारयामास ताम्बूलगर्भं हस्तपल्लवम् (भ)। चन्द्रापीड़स्तु जयकुञ्जर-कुम्भ-स्थलास्फालन-संक्रान्त-सिन्दूरमिव स्वभावपाटलम्, (म) धनुर्गुणाकर्षणकृत-

---

(भ) पुनरिति। किञ्च, तया महाश्वेतया, चन्द्रापीड़ाय ताम्बूलं दातुं पुनः पुनरभिधीयमाना कादम्बरी, ग्राम्येव ग्रामभवा रमणीव। सा हि नागरिकवदुचितमनुचितं वा नावबुध्यते। अत्रोपमालङ्कारः। आकुले अधीरे लोचने यस्याः सा। मन्मथेन कर्त्रा स्वेदजलविसरैर्घर्म्मवारिसमूहैः करणैर्निजशराणां प्रहारैः मूर्च्छिता सुतरां स्नपितेव, मूर्च्छापनोदनार्थेति भावः। अन्योऽपि हितैषी जनो मूर्च्छितमात्मीयं स्नपयति। अत्र क्रियोत्प्रेक्षालङ्कारः। किञ्च, तस्मिन्नेव स्वेदजलविसरे निमज्जनभयेन हस्तावलम्बनं याचमानेव। अन्योऽपि निमज्जनभयेन हस्तं प्रसारयन् कस्यचित् हस्तावलम्बनं याचते। अत्रापि क्रियोत्प्रेक्षालङ्कारः। तथा साध्वसपरवशा भयाधीनाहं पतामि इति हेतोः लगितुम् चन्द्रापीड़देहे संसक्तुं कृतप्रयत्नेव। अन्योऽपि पतन् हस्तं प्रसार्य कस्मिंश्चिल्लगति। अत्रापि क्रियोत्प्रेक्षालङ्कारः। ताम्बूलगर्भं हस्तपल्लवं प्रसारयामास कादम्बरीति सम्बन्धः।

(म) चन्द्रेति। चन्द्रापीड़स्तु पाणिं प्रसारितवानित्यन्वयः। अत्र द्वितीयैकवचनान्तपदानि पाणिमिति वक्ष्यमाणस्य विशेषणानि। स्वभावपाटलं स्वभावत एव श्वेतरक्तं, अतएव जयकुञ्जरस्य विजयसाधनहस्तिनः कुम्भस्थले आस्फालनेन प्रोत्साहनाय सम्मर्द्दनेन संक्रान्तं संलग्नं सिन्दूरं यस्मिन् तमिव। अत्र सिन्दूर-संक्रमणोत्प्रेक्षणात् क्रियोत्प्रेक्षालङ्कारः।

(ভ) তখন মহাশ্বেতা বার বার বলিতে লাগিল, তাই কাদম্বরী গ্রাম্য রমণীর ন্যায় বহু কালের পর কোন রকমে তাম্বূল দান করিতে মনকে অভিলাষী করিলেন। তাহার পর কাদম্বরী মহাশ্বেতার মুখ হইতে দৃষ্টি আকর্ষণ না করিয়াই, তাম্বূলযুক্ত হস্তপল্লব প্রসারিত করিলেন; তখন তাঁহার শরীর কাঁপিতেছিল, নয়নযুগল অধীর হইয়াছিল, এবং বড় বড় নিশ্বাস নির্গত হইতেছিল; আর নিজের শরপ্রহারেই কাদম্বরী মূর্চ্ছিত হইয়াছেন—এই জন্যই কামদেব যেন তাঁহাকে ঘর্ম্মজলে স্নান করাইতেছিলেন; এবং কাদম্বরী ঘর্ম্মজলে নিমগ্ন হইবার ভয়েই যেন হস্ত প্রসারণ করিয়া কাহারও হস্তাবলম্বন প্রার্থনা করিতেছিলেন; 'আর আমি ভয়বশতঃ পড়িয়া যাইতেছি' এই জন্যই যেন হস্ত প্রসারণ করিয়া চন্দ্রাপীড়ের দেহে সংলগ্ন হইবার জন্য যত্ন করিতেছিলেন। (ম) এ দিকে চন্দ্রাপীড়ও সেই তাম্বূল গ্রহণ করিবার জন্য হস্ত প্রসারণ করিলেন; তাঁহার সেই হাতখানি স্বভাবতই আরক্তবর্ণ ছিল; সুতরাং বোধ হইতেছিল যে, বিজয়-হস্তীর কুম্ভস্থল আমর্দ্দন করায় তাহার সিন্দূর যেন তাহাতে লাগিয়া রহিয়াছে।

---

(१) अनाकर्षितदृष्टिरिव। (२) आकुञ्चितलोचना, आकुलितलोचना। (३) निःश्वसन्ती।
(४) लम्बितुमिव।

किणश्यामलम्, कचग्रहाकृष्टि-रुदितारिलक्ष्मी-लोचन-परामर्श-लग्नाञ्जनविन्दु-मिव, (य) विसर्पन्नख-किरणतया अतिरभसेन प्रधाविताभिरिव विवर्द्धिताभिरिव प्रहसिताभिरिवाङ्गुलीभिरुपेतम्, (र) स्पर्शलोभाच्च तत्कालकृत-सन्निवेशाः सरागाः पञ्चापीन्द्रियवृत्तीरपरा इवाङ्गुलीरुद्वहन्तम्, (१) प्रसारितवान् पाणिम् (ल)। तत्र च सा तत्काल-सुलभ-विलास-दर्शन-कुतूहलिभिरिव कुतोऽ-

(य) धनुरिति। धनुर्गुणाकर्षणेन कृतो यः किणचिह्नं तेन श्यामलं, अतएव 'कचग्रहाकृष्ट्या केश-ग्रहणपूर्वकाकर्षणेन रुदिता या अरिलक्ष्मीः शत्रुश्रीस्तस्या लोचनयोः परामर्शेन दयया अश्रु मार्जयितुं पुन-रामर्शनेन लग्ना अञ्जनविन्दवः कज्जलकणा यत्र तमिव। अत्रापि पूर्ववदुत्प्रेक्षा।

(र) विसर्पदिति। विसर्पन्तः प्रसरन्तो नखकिरणा यस्य तस्य भावस्तया हेतुना। अतिरभसेन नितान्तवेगेन। नखकिरणैरेव विवर्द्धिताभिरित्यर्थः। प्रहसिताभिरिव, प्रसृतनखकिरणानां हासस्य च समानधर्मत्वादिति भावः। अत्र तिसृणामेव क्रियोत्प्रेक्षाणां मिथोनिरपेक्षतया संसृष्टिः।

(ल) स्पर्शेति। किञ्च, कादम्बर्य्याः स्पर्शलोभात्, तस्मिन् काले कृतः सन्निवेश उपस्थितिर्याभिस्ताः, सरागाः सानुरागाः सलौहित्याश्च, अपराः पञ्च अङ्गुलीरिव, पञ्चापि इन्द्रियवृत्तीः तद्दर्शन-तत्कथाश्रवण-तद्वदन-घ्राण-तदधररसन-तत्स्पर्शलक्षणान् चक्षुरादीनां पञ्चानां ज्ञानेन्द्रियाणां व्यापारान् तासामिच्छामित्यर्थः; उद्वहन्तं जनकतासम्बन्धेन धारयन्तम् जनयन्तमिति तात्पर्य्यम्। अत्र जात्युत्प्रेक्षालङ्कारः।

(व) तत्रेति। किञ्च, तत्र ताम्बूलदानसमये, तस्मिन् काले सुलभा अनायासप्राप्या ये विलासाः कादम्बर्य्या विभ्रमास्तेषां दर्शने कुतूहलमेषामस्तीति तैरिव सर्वरसैः सकलप्रकारानुरागैः, कुतोऽप्यागत्य, सा कादम्बरी अधिष्ठिता आश्रिता। अत्र गुणोत्प्रेक्षालङ्कारः। "शृङ्गारादौ विषे वीर्य्ये गुणे रागे द्रवे रसः।" इत्यमरः। केचित्तु "सर्वरसैः शृङ्गारादिभि"रिति व्याचक्षते, तदसत् रसस्य स्वशब्दोक्तिदोषप्रसङ्गात् तदानीं कादम्बर्य्यां वीरवीभत्सादिरसानां सर्वथैवाधिष्ठानासम्भवाच्च।

(য) ধনুর গুণ আকর্ষণ করায় কতকগুলি চিহ্ন হইয়া সেই হাতখানি আবার শ্যামবর্ণ করিয়াছিল ; তাহাতে প্রতীতি হইতেছিল, যে—কেশধারণপূর্ব্বক আকর্ষণ করায় শত্রুপক্ষের লক্ষ্মী রোদন করিতেছিলেন, তাই আবার দয়া করিয়া তাঁহার অশ্রু মার্জ্জনা করিবার জন্য নয়নে হস্তামর্শন করায় তাহাতে সেই নয়নের কাজল লাগিয়া রহিয়াছে। (র) নখের কিরণ ছড়াইয়া পড়িয়াছিল বলিয়া বোধ হইতেছিল যে, অঙ্গুলীসমূহ যেন হাসিতেছে, অতিবেগে ধাবিত হইয়াছে এবং সেই নখের কিরণেই তাহাদিগকে যেন বর্দ্ধিত করিতেছে। (ল) এবং চন্দ্রাপীড়ের সেই হাতখানি কাদম্বরীকে স্পর্শ করিবার লোভে, অপর পাঁচটি আঙ্গুলের ন্যায়, অনুরাগের সহিত সেই সময়ে উপস্থিত পাঁচটি ইন্দ্রিয়বৃত্তিকেই ধারণ করিতেছিল। (ব) এবং তখন সকলপ্রকার অনুরাগ, সেই সময়ে অনায়াসলভ্য কাদম্বরীর বিলাস দেখিবার জন্য কৌতুকী

(१) अपराङ्गुलीः;...इन्तीरिवाङ्गुलीः...।

प्यागत्य सर्वरसैरधिष्ठिता (ब)। तेनानिबद्धलक्ष्यतया शून्यप्रसारितेन, चन्द्रापीड़हस्तान्वेषणायेव पुरःप्रवर्त्तित-नखांशुनिवहेन, वेपथुवलितवलयावलीवाचालेन सम्भाषणमिव कुर्वता हस्तेन, स्वेदसलिलपातपूर्वकं "गृह्यतामयं मन्मथेन दत्तो दासजनः" इत्यात्मानमिव प्रतिग्राहयन्ती, "अद्य प्रभृति भवतो हस्ते वर्त्तते" इति जीवितमिव स्थापयन्ती, ताम्बूलमदात् (श)। आकर्षन्ती च करकिसलयं भुजलतानुसारेण स्पर्शलुब्धागतमनङ्गशरभिन्नमध्यं हृदयमिव पतितमपि रत्नवलयं नाज्ञासीत्। गृहीत्वा चापरं ताम्बूलं महाश्वेतायै प्रायच्छत् (घ)।

(श) तेनेति। न निबद्धं न कृतं लक्ष्यं स्थाननिश्चयो येन तस्य भावस्तया हेतुना शून्ये चन्द्रापीड़हस्तव्यतिरिक्तस्थाने प्रसारितेन, अतएव चन्द्रापीड़हस्तस्य अन्वेषणायेव पुरःप्रवर्त्तितः अग्रतः प्रेरितो नखांशुनिवहो नखकिरणसमूहो येन तेन। अत्र क्रियोत्प्रेक्षालङ्कारः। वेपथुना कम्पेन चलितया स्पन्दितया वलयावल्या कङ्कणश्रेण्या वाचालेन शब्दायमानेन, अतएव सम्भाषणं कुर्वतेव स्थितेन तेन हस्तेन। अत्रापि क्रियोत्प्रेक्षा। स्वेदसलिलपातपूर्वकं, सम्प्रदानकाले जलपातस्य शास्त्रीयत्वादिति भावः। मन्मथेन दत्तः अयं मल्लक्षणो दासजनस्त्वया गृह्यतां इतीत्थं आत्मानं प्रतिग्राहयन्तीव। क्रियोत्प्रेक्षा। तथा 'अद्य प्रभृति मम जीवितं भवतो हस्ते वर्त्तते' इतीत्थं जीवितं स्थापयन्तीव कादम्बरी ताम्बूलमदात्। क्रियोत्प्रेक्षा।

(ष) आकर्षन्तीति। किञ्च, करकिसलयं हस्तपल्लवं आकर्षन्ती प्रत्यानयन्ती कादम्बरी, भुजलतानुसारेण प्रसारितां स्वभुजलतामनुसृत्य तया सहेत्यर्थः, चन्द्रापीड़स्य स्पर्शलुब्धया गतं प्रस्थितं, अनङ्गशरैव भिन्नं विदीर्णं मध्यं यस्य तत्ताहृशं आत्मनो हृदयमिव पतितमपि हस्तात् प्रभ्रष्टमपि रत्नवलयं नाज्ञासीत्। एतेन तन्मयता सूचिता। अत्र भ्रान्त्युत्प्रेक्षालङ्कारः।

হইয়াই যেন কোন অনির্দ্দিষ্ট স্থান হইতে আসিয়া তাহার হৃদয়ে অধিষ্ঠান করিল। (শ) এই অবস্থায় কাদম্বরী হস্ত প্রসারণ করিয়া চন্দ্রাপীড়ের হস্তে তাম্বূল দান করিলেন; তখন কাদম্বরী লক্ষ্য না করিয়া শূন্য স্থানে হস্ত প্রসারণ করিয়াছিলেন; তাহাতে বোধ হইতেছিল যে,—সেই হস্ত চন্দ্রাপীড়ের হস্তকে অন্বেষণ করিবার জন্যই যেন সম্মুখে নখের কিরণগুলিকে প্রেরণ করিয়াছে। কম্প উপস্থিত হওয়ায় কঙ্কণগুলি চলিতেছিল, তাই হস্ত হইতে শব্দ হইতেছিল, তাহাতে প্রতীতি হইতেছিল যে—সেই হাতখানা যেন চন্দ্রাপীড়কে সম্ভাষণ করিতেছে। 'কামদেব দান করিয়াছেন, অতএব আপনি এই দাসীকে গ্রহণ করুন" এই ভাবে কাদম্বরী যেন ঘর্ম্মজলপাতপূর্ব্বক আপনাকে আপনি প্রতিগ্রহ করাইতেছিলেন, এবং 'আজ হইতে আপনার হাতে আমার জীবন রহিল' এই ভাবে চন্দ্রাপীড়ের হাতে নিজের জীবনই যেন স্থাপন করিতেছিলেন। (ষ) কাদম্বরী তাম্বূল দান করিয়া করপল্লব আকর্ষণ করিয়া আনিলেন বটে, কিন্তু পূর্ব্বেই তাঁহার হৃদয়, চন্দ্রাপীড়কে স্পর্শ করিবার লোভে বাহুলতা অনুসরণ করিয়া গিয়াছিল, মদনশর-বিদীর্ণ সেই হৃদয়ের ন্যায় একটি রত্নবলয় পড়িয়া গিয়াছিল, তাহা তিনি বুঝিতে পারিয়াছিলেন না। তাহার পর কাদম্বরী আর একটি পান ধরিয়া মহাশ্বেতাকে দিলেন।

अथ सहसैव त्वरितगतिः, त्रिवर्णरागमिन्द्रायुधमिव कुण्डलीकृतं कण्ठेन वहता विद्रुमाङ्कुरानुकारिचञ्चुपुटेन (१) मरकतद्युतिपक्षतिना मन्थरगतिना शुकेनानुबध्यमाना, कुमुदकेसर-पिञ्जरतया चरणयुगलस्य, चम्पककलिकाकारतया च मुखस्य, कुवलयदलनीलतया च पक्षद्युतीनां, कुसुममयोवागत्य सारिका सक्रोधमवादीत्—(स) "भर्तृदारिके! कादम्बरि! कस्मान्न निवारयस्येनमलीकसुभगाभिमानिनमतिदुर्विनीतं (२) मामनुबध्नन्तं विहङ्गापसदम्। यदि मामनेन परिभूयमानामुपेक्षसे ततोऽहं नियतमात्मानमुत्सृजामि। सत्यं शपामि ते पादपङ्कजस्पर्शेन" इत्येवमभिहिता च तया कादम्बरी स्मित-

(स) अथेति। अथानन्तरं त्वरिता गतिर्यस्याः सा सारिका सहसैवागत्य सक्रोधमवादीदित्यन्वयः। कण्ठेन गलदेशेन इन्द्रायुधं शक्रधनुरिव कुण्डलीकृतं वर्तुलीकृतं, त्रयाणां वर्णानां नीलपीतलोहितानां रागं रञ्जनं रेखामिति यावत् वहता। विद्रुमाङ्कुरानुकारि प्रवालखण्डसदृशं लोहितमित्यर्थः चञ्चुपुटं यस्य तेन। मरकतस्य द्युतिरिव द्युतिर्ययोस्तादृश्यौ पक्षती पक्षयोर्मूलद्वयं यस्य तेन। मन्थरगतेन मन्दगामिना, शुकेन पक्षिणा अनुबध्यमाना अनुगम्यमाना सारिका। अत्र प्रथमा श्रौतोपमा, द्वितीया आर्थोपमा, तृतीया च लुप्तोपमा इत्येतासां मिथोनिरपेक्षतया संसृष्टिः। तथा चरणयुगलस्य कुमुदकेशरवत् श्वेतोत्पलकिञ्जल्कवत् पिञ्जरतया पिङ्गलवर्णतया, मुखस्य च चम्पककलिकाकारतया, पक्षद्युतीनाञ्च कुवलयदलवन्नीलतया हेतुना, कुसुममयीव पुष्पनिर्म्मितेव सारिका। अत्र तिसृभिरुपमाभिः सङ्कीर्णा क्रियोत्प्रेक्षालङ्कारः।

(ह) भर्त्तेति। अलीकं मिथ्या सुभगं भार्य्यावल्लभमात्मानं अभिमन्यत इति तं। एतेनात्मनस्तस्मिन् वाल्लभ्यं नास्तीति सूचितम्। अनुबध्नन्तमनुसरन्तं। विहङ्गापसदं विहगाधमम्। परिभूयमानां स्तुं बलादाक्रम्यमाणां। नियतं निश्चितं। उत्सृजामि परित्यजामि। तया सारिकया।

(স) তদনন্তর সহসাই দ্রুতগতিতে একটি সারিকা আসিয়া উপস্থিত হইল; তাহার পশ্চাৎ পশ্চাৎ অপেক্ষাকৃত মন্দগতিতে একটি শুকও উপস্থিত হইল; সেই শুকটির কণ্ঠদেশে ইন্দ্রধনুর ন্যায় মণ্ডলাকারে নীল, পীত ও লোহিতবর্ণের তিনটি রেখা ছিল; চঞ্চুপুট প্রবালখণ্ডের অনুকরণ করিতেছিল এবং মরকতমণির ন্যায় পক্ষযুগলের প্রভা প্রকাশ পাইতেছিল; আর সেই সারিকাটিরও চরণযুগল শ্বেতোৎপলের কেশরের ন্যায় পিঙ্গলবর্ণ, মুখভাগ চম্পকপুষ্পের কলিকার ন্যায় পীতবর্ণ এবং পক্ষের প্রভা নীলোৎপলপত্রের ন্যায় নীলবর্ণ ছিল বলিয়া, তাহাকে যেন বিধাতা পুষ্পদ্বারা নির্ম্মাণ করিয়াছিলেন; সেই সারিকাটি ক্রোধের সহিত বলিল,—(হ) "রাজকন্যে! কাদম্বরি! পক্ষীর মধ্যে অধম এই শুকটা, আপনাকে আপনি ভাগ্যবান্ বলিয়া মিথ্যা মনে করে এবং অত্যন্ত দুর্বিনীত-স্বভাব; তাই আমার পশ্চাৎ পশ্চাৎ আসিয়াছে; কিন্তু আপনি ইহাকে বারণ করিতেছেন না কেন? এ, আমাকে আক্রমণ করিলে আপনি

(१)...अनुकारिणा चञ्चुपुटेन। (२) दुर्विनीतं।

मकरोत् (छ)। अविदितवृत्तान्ता तु महाश्वेता "किमियं वदति" इति मदलेखां पप्रच्छ। सा चाकथयत्—"एषा भर्त्तृदुहितुः सखी (१) कादम्बर्याः कालिन्दीति नाम्ना सारिका, एतस्य परिहासनाम्नः शुकस्य भर्त्तृदारिकयैव पाणिग्रहणपूर्वकं जायापदं ग्राहिता। अद्य चायमनया प्रत्यूषसि कादम्बर्यास्ताम्बूलकरङ्कवाहिनीमिमां तमालिकामेकाकिनीं किमपि पाठयन् दृष्टो यतः, ततः प्रभृति सञ्जातेर्ष्या कोपपराङ्मुखी नैनमुपसर्पति, नालपति, न स्पृशति, न विलोकयति, सर्वाभिरस्माभिः प्रसाद्यमानापि न प्रसीदतीति।" (२) (च)

एतदाकर्ण्य स्फुटस्फुरितकपोलोदरश्चन्द्रापीड़ो मन्दं मन्दं विहस्याब्रवीत्—"अस्त्येषा कथा, श्रूयत एवैतद्राजकुले कर्णपरम्परया, परिजनोऽप्येवं मन्त्रयते (३),

(च) अविदितेति। इयं सारिका। भर्त्तृदुहितुः कादम्बर्याः सखीत्यन्वयः। पाणिग्रहणं पूर्वं यस्मिन् कर्म्मणि तद्यथा तथा, जायापदं भार्य्यास्थानं भार्य्यात्वमिति यावत्। अद्य यतः कालात् प्रभृति। अनया सारिकया, अयं शुकः। तमालिका तमालिकानाम्नीं। पाठयन् मन्त्रयन्।

(छ) एतदिति। स्फुटं स्पष्टं स्फुरितं हास्यागमात् स्पन्दितं कपोलयोरुदरमभ्यन्तरं यस्य सः। न वेत्ति तन्मयत्वादिति भावः। अयं शुकः। वामः स्वभार्य्यां प्रति प्रतिकूलः, आचारो व्यवहारो यस्य सः। निस्त्रपया

যদি উপেক্ষা করেন, তাহা হইলে আমি নিশ্চয়ই প্রাণ পরিত্যাগ করিব; আপনার পাদপদ্ম স্পর্শ করিয়া আমি এই যথার্থই প্রতিজ্ঞা করিলাম" সেই সারিকাটি এই কথা বলিলে কাদম্বরী ঈষৎ হাস্য করিলেন। (ছ) কিন্তু মহাশ্বেতা, বৃত্তান্ত জানিত না বলিয়া মদলেখাকে জিজ্ঞাসা করিল,—"এ, বলিতেছে কি?" তখন মদলেখা কহিল,—"এই সারিকাটি, রাজকন্যা কাদম্বরীর সখী এবং ইহার নাম কালিন্দী; আর এই শুকটির নাম পরিহাস। কাদম্বরীই বিবাহ করাইয়া কালিন্দীকে পরিহাসের ভার্য্যা করিয়াছেন। কিন্তু আজ প্রাতঃকালে কাদম্বরীর তাম্বূলকরঙ্ক-বাহিনী এই তমালিকাকে একাকিনী অবস্থায় পরিহাস কোন কথা বলিতেছিল, ইহা কালিন্দী যে সময় হইতে দেখিয়াছে, তদবধি ইহার ঈর্ষ্যা জন্মিয়াছে এবং এ, মান করিয়া পরিহাসের প্রতি বিমুখ হইয়াছে; তাই পরিহাসের নিকট যাইতেছে না, উহার সঙ্গে আলাপ করিতেছে না, উহাকে স্পর্শ করিতেছে না, এমন কি, উহার প্রতি দৃষ্টিপাতও করিতেছে না; কিন্তু আমরা সকলেই উহাকে প্রসন্ন করিবার জন্য চেষ্টা করিয়াছিলাম, তথাপি, ও প্রসন্ন হয় নাই।"

(চ) এই কথা শুনিয়া চন্দ্রাপীড়ের হাস্য উপস্থিত হওয়ায় কপোলযুগলের মধ্যস্থান স্পষ্টতই স্পন্দিত হইয়া উঠিল; তখন তিনি অল্প অল্প হাস্য করিয়া বলিলেন—"এ কথা সত্য বটে, কারণ—এই রাজবাটীতেই কর্ণপরম্পরায় এ কথা শুনা যায়, পরিজনবর্গও এইরূপ বলিয়া

(१) क्वचित् सखीति नास्ति। (२) क्वचित् इतिशब्दो न दृश्यते। (३) आमन्त्रयते।

वहिरपि जनाः कथयन्ति, एवं दिगन्तरेष्वप्ययमालापो वर्त्तत एव, (१) अस्माभिरप्येतदाकर्णितमेव, 'यथा किल देव्याः कादम्बर्य्यास्ताम्बूलदायिनीं तमालिकां कामयमानः परिहासनामा शुको मदनपरवशो गतान्यपि दिनानि न वेत्तीति'। तदयमास्तां तावद्वामाचारः, परित्यक्तनिजकलत्रो निस्त्रपया (२) अनया सह, देव्यास्तु कादम्बर्य्याः कथमेतद् युक्तं यन्न निवारयतीमां चपलां दुष्टदासीम् (क)। अथवा देव्यापि कथितैव निःस्नेहता (३) प्रथममेव वराकीमिमां कालिन्दीमीदृशाय दुर्विनीताय विहङ्गाय प्रयच्छन्त्या (ख)। किमिदानीमियं करोतु, यदेतत् सापत्न्यकरणं नारीणां प्रधानं कोपकारणम्, अग्रणीर्विरागहेतुः, परं परिभवस्थानम् (ग)। इयमेव केवलमतिधीरा, यदनयानेन दौर्भाग्यगरिम्णा जातवैराग्यया विषं वा नास्वादितं, अनलो वा नासादितः, अनशनं वा नाङ्गी-

निर्लज्जया पक्षिणं प्रत्यपि कामावेशादिति भावः। अनया तमालिकया। दुष्टदासीं तमालिकाम्। कथमेतद् युक्तं, अपि तु न युक्तमेवेत्यर्थः। अत्र यच्छब्दान्वितवाक्यस्य परपाठात् "न्यक्कारो ह्ययमेव मे यदरयः" इत्यादिदर्शितोदाहृतवदाक्यगतविधेयाविमर्शदोषः, स तु तस्य प्राक्पाठेन समाधेयः।

(ख) अथवेति। वराकीं शोच्यां। देव्यापि कादम्बर्य्या, प्रथममेव निःस्नेहता कालिन्दीं प्रति वात्सल्यहीनता कथितैव सूचितैव, अन्यथेनामीदृशाय न प्रयच्छेदिति भावः।

(ग) किमिति। इयं कालिन्दी, परिहासं प्रति कोपं विना किं करोत्वित्यर्थः। एतदेव समर्थयितुमाह यदेतदिति। यदेतत् सापत्न्यकरणं तदिति शेषः। अग्रणीः श्रेयान्। परं अत्यन्तम्।

(घ) इयमिति। अनया कालिन्द्या, अनेन स्वयमनुभूयमानेन, पत्या अवज्ञाता स्त्री दुर्भगा तस्याः भावो

থাকে, বাহিরেও লোকে কহিয়া থাকে এবং দিগ্‌দিগন্তরেও এ আলোচনা হইয়া থাকে, আর আমরাও ইহা শুনিয়াছি যে, 'পরিহাসনামক শুক, কাদম্বরী দেবীর তাম্বূলকরঙ্কবাহিনী তমালিকাকে ইচ্ছা করতঃ কামার্ত্ত হইয়া, দিনগুলি যে চলিয়া যাইতেছে, তাহাও বুঝিতেছে না।' অতএব প্রতিকূলস্বভাব এই পরিহাস, নিজের ভার্য্যাকে পরিত্যাগ করিয়া এই নির্লজ্জা তমালিকার সহিত থাকে, থা'ক; কিন্তু দেবী কাদম্বরীর ইহা সঙ্গত হইতেছে কিরূপে, যে, উনি এই চঞ্চলা দুষ্ট দাসীকে নিবারণ করিতেছেন না। (খ) অথবা দেবী কাদম্বরীও, এই ভাগ্যহীনা কালিন্দীকে এইরূপ দুর্বিনীতস্বভাব পক্ষীর হস্তে প্রদান করিয়া ইহার প্রতি নিজের স্নেহের অভাব পূর্ব্বেই জানাইয়াছেন। (গ) "এখন এ করিবে কি? কারণ—এই যে সপত্নী করা, এটা, রমণীগণের পক্ষে ক্রোধের প্রধান কারণ, গুরুতর বিরাগের হেতু এবং অত্যন্ত অবজ্ঞার স্থান। (ঘ) এই কালিন্দীই কেবল অত্যন্ত ধীরপ্রকৃতি; যে হেতু—এ, এই গুরুতর দৌর্ভাগ্যবশতঃ বৈরাগ্য অবলম্বন করিয়া বিষপান করে নাই, কিংবা অগ্নিতেও প্রবেশ করে নাই, অথবা

(१) एवं। (२) निस्त्रपः। (३) निःस्नेहता।

ज्ञातम्। न ह्येवंविधं (१) अपरमस्ति योषितां लघिम्नः कारणम् (घ)। यदि चेयमीदृशेऽप्यपराधे अनुनीयमाना अनेन प्रत्यासत्तिमेष्यति, तदा धिगिमाम्, अलमनया, दूरतो वर्जनीयेयम्, अभिभवनिरास्या (२) (ङ)। क एनां पुनरालापयिष्यति, को वावलोकयिष्यति, को वास्या नाम ग्रहीष्यति" इत्येवमभिहितवति तस्मिन् सर्वास्ताः सह कादम्बर्य्या क्रीड़ालापभाविताः (३) जहसुरङ्गनाः। (च)

परिहासस्तु तस्य नर्म्मभाषितमाकर्ण्य जगाद—"धूर्त्त! राजपुत्र! निपुणेयम्, न त्वयान्येन वा लोलापि प्रतारयितुं शक्यते। एषापि बुध्यत एवैतावतीर्वक्रोक्तीः, इयमपि जानात्येव परिहासजल्पितानि, अस्या अपि राजकुलसम्पर्क-चतुरा मतिः। विरम्यताम्, अभूमिरेषा भुजङ्ग-भङ्गि-भाषितानाम्, इयमेव हि

दौर्भाग्य' तस्य गरिम्णा गुरुत्वेन अतिरिक्तेण हेतुना, जातवैराग्यया अनया कालिन्द्या। अनलो वा नासादितः अग्नौ वा न प्रविष्ट इत्यर्थः। अनशनं अनशनेन मरणम्।

(ङ) यदीति। अनेन शुकेन सह, प्रत्यासत्ति' पुनःसमागमं, एष्यति प्राप्स्यति। अभिभवेन तिरस्कारेण निरास्या दूरीकरणीया।

(च) क इति। एनां कालिन्दीं। क्रीड़ालापेन नर्म्मभाषणेन भाविता वासिता आनन्दिता इत्यर्थः।

(छ) परीति। परिहासः परिहासनामा शुकः। लोलापि चपलापि अगभीर-बुद्धिरपि। वक्रोक्तीः कूटकथाः प्रतारणवचनानि। राजकुले सम्पर्केण चतुरा विदग्धा। एषा सारिका, भुजङ्गा नागरिकास्तेषां

অনশনে আত্মহত্যা করে নাই। স্ত্রীলোকদের পক্ষে এইরূপ আর লঘুতার কারণ নাই। (ঙ) এইরূপ অপরাধ সত্ত্বেও, কেবল অনুনয় করাতেই কালিন্দী যদি পুনরায় এই পরিহাসের সহিত সম্মিলিত হয়, তাহা হইলে ইহাকে ধিক্, ইহা দ্বারা কোনই প্রয়োজন নাই, দূর হইতেই ইহাকে পরিত্যাগ করা উচিত এবং তিরস্কার করিয়া ইহাকে তাড়াইয়া দেওয়া সঙ্গত। (চ) এবং তাহা হইলে কালিন্দীর সঙ্গে কে আলাপ করিবে? কেই বা উহার প্রতি দৃষ্টিপাত করিবে? এবং কোন্ ব্যক্তিই বা উহার নাম লইবে।" চন্দ্রাপীড় এইরূপ বলিলে কাদম্বরীর সহিত সমস্ত কন্যাগণই, সেই পরিহাসবাক্যে আনন্দিত হইয়া হাস্য করিল।

(ছ) কিন্তু পরিহাস (শুক), চন্দ্রাপীড়ের পরিহাসবাক্য শুনিয়া বলিল,—"ধূর্ত্ত! রাজপুত্র! এও, চতুরা; সুতরাং চপলা হইলেও, তুমি বা অন্যে ইহাকে প্রতারণা করিতে পারিবে না। কারণ—এও, এই সকল ব্যঙ্গোক্তি অবশ্যই বুঝিয়াছে; এও পরিহাসের কথা বলিতে জানে এবং রাজকুলে সম্পর্ক থাকায় ইহার বুদ্ধিও সমস্ত বিষয়েই নিপুণ। অতএব তুমি বিরত হও; এ নাগরিকদের ব্যঙ্গোক্তির পাত্র নহে; আর মধুরভাষিণী এই সারিকাও, কিসে

---

(১) नह्येवं। (२) अभिभवनिरास्या, अभिभवनिरस्या। (३)···भाषिताः।

वेत्ति मञ्जुभाषिणी कालञ्च कारणञ्च प्रमाणञ्च विषयञ्च प्रस्तावञ्च कोपप्रसादयोः" इति। (छ)

अत्रान्तरे चागत्य कञ्चुकी महाश्वेतामवोचत्—"आयुष्मति! देवश्चित्ररथो देवी च मदिरा त्वां द्रष्टुमाह्वयति"। एवमभिहिता च गन्तुकामा "सखि! चन्द्रापीड़ः क्वास्ताम्" इति कादम्बरीमपृच्छत्। असौ तु "न पर्य्याप्तमनेकस्त्रीहृदयसहस्रावस्थानेन?" (१) इति मनसा विहस्य प्रकाशमवदत्—"सखि! महाश्वेते! किं त्वमेवमभिदधासि, दर्शनादारभ्य शरीरस्याप्ययमेव प्रभुः, किमुत भवनस्य विभवस्य परिजनस्य वा, यत्रास्मै रोचते (२) प्रियसखीहृदयाय वा, तत्रायमास्ताम्" इति (ज)। तच्छ्रुत्वा महाश्वेतावदत्—"अत्रैव त्वत्प्रासाद-

---

भङ्गिभाषितानि कूटकथास्तेषां, अभूमिरपात्रम्। कोपप्रसादयोः, कालं समयं, कारणं हेतुं, प्रमाणमियत्तां, विषयं स्थानं, प्रस्तावं प्रसङ्गञ्च।

(ज) अत्रेति। एवमभिहिता च महाश्वेतेति शेषः। असौ कादम्बरी। अनेकं बहुतरं यत् स्त्रीहृदयसहस्रं नारीचित्तसमूहस्तदेव अवस्थानं अवस्थितियोग्यं स्थानं तेन, न पर्य्याप्तं नास्य यथेष्टं जातं किमिति काकुः, येनावस्थानाय स्थानान्तरचिन्ता क्रियत इति भावः। अयं राजपुत्र एव प्रभुः, सौजन्येन वशीकरणादिति बहिर्भावः, चिराय जीवितेश्वरकरणादिति त्वान्तरिकभावः। एतेनात्मनापि सौजन्यातिशयो ध्वनितः। विभवस्य धनसम्पत्तेः। यत्रावस्थानं कर्त्तुं, अस्मै राजपुत्राय रोचते, प्रियसख्यास्तव हृदयाय वा रोचत इति सम्बन्धः।

ক্রোধ হয়, কিসেই বা প্রসন্নতা জন্মে—তাহার অবসর, কারণ, পরিমাণ, স্থান ও প্রসঙ্গ—এ সমস্তই জানে।"

(জ) এই সময়ে কঞ্চুকী আসিয়া মহাশ্বেতাকে বলিল—"আয়ুষ্মতি! মহারাজ চিত্ররথ এবং মহারাণী মদিরা আপনাকে দেখিবার জন্য ডাকিয়াছেন।" এই কথা বলিলে মহাশ্বেতা সেখানে যাইতে ইচ্ছা করিয়া কাদম্বরীকে জিজ্ঞাসা করিল—"সখি! চন্দ্রাপীড় কোথায় থাকিবেন?।" তখন কাদম্বরী হাস্য করিয়া মনে মনে বলিলেন,—"অসংখ্য স্ত্রীলোকের হৃদয়ে অবস্থান করিয়াও ইহার আশা মিটে নাই?" তাহার পর প্রকাশ্যে বলিলেন—"সখি! মহাশ্বেতে! তুমি এরূপ বলিতেছ কেন? দর্শন হইতে আরম্ভ করিয়াই ইনি সৌজন্যগুণে আমার শরীরেরও প্রভু হইয়াছেন, সুতরাং গৃহ, ধনসম্পত্তি ও পরিজনদিগের কথা আর বলিব কি। অতএব যেখানে ইহার অভিরুচি হয়, অথবা তোমার যেখানে অভিপ্রায় হয়, সেইখানেই ইনি থাকুন।" (ঝ) তাহা শুনিয়া মহাশ্বেতা বলিল,—"তবে তোমার অট্টালিকার

---

(१) ननु पर्य्याप्तमेवानेकस्त्रीहृदयसहस्रावस्थानमनेन।

(२)...शरीरस्याप्ययं न विभुः किमुत भवनस्य परिजनस्य वा। यत्रासौ रोचते...।

समीपवर्त्तिनि प्रमदवने क्रीड़ापर्व्वतकमणिवेश्मन्यास्ताम्" इत्यभिधाय गन्धर्वराजं द्रष्टुं ययौ। चन्द्रापीड़ोऽपि तथैव सह निर्गत्य विनोदनार्थं वीणावादिनीभिश्च वेणुवाद्यनिपुणाभिश्च गीतकलाकुशलाभिश्च दुरोदरक्रीड़ारागिणीभिश्च अष्टापद-परिचयचतुराभिश्च चित्रकर्म्मकृतश्रमाभिश्च सुभाषितपाठिकाभिश्च (१) कादम्बरी-समादिष्ट-प्रतिहारी-प्रेषिताभिः कन्याभिरनुगम्यमानः पूर्वदृष्टेन केयूरकेणोपदिश्यमानमार्गः क्रीड़ापर्वतमणिमन्दिरमगात्। (भ)

गते च तस्मिन् गन्धर्वराजपुत्री विसर्ज्य सकलं सखीजनं परिजनञ्च (२) परिमित-परिचारिकाभिरनुगम्यमाना प्रासादमारुरोह। तत्र च शयनीये निपत्य दूर-(३) स्थिताभिर्विनयनिभृताभिः परिचारिकाभिर्विनोद्यमाना कुतोऽपि प्रत्यागतचेतना चैकाकिनी तस्मिन् काले 'चपले! किमिदमारब्धम्' इति निगृहीतेव

(भ) तदिति। दुष्टं खं समन्तादुदरमभ्यन्तरं यस्य तद्दुरोदरं द्यूतं तत्-क्रीड़ायां रागिणीभिरभिरुचिशालिनीभिः। अष्टापदं शारिफलं तस्य परिचये विज्ञाने चतुराभिर्निपुणाभिः। चित्रकर्म्मसु कृतः श्रमः शिक्षार्थायासो याभिस्ताभिः कादम्बर्य्या समादिष्टा या प्रतिहारी तया प्रेषिताभिः।

(ञ) गत इति। गन्धर्वराजपुत्री कादम्बरी। शयनीये शय्यायां निपत्य स्रस्ताङ्गी सती स्थित्वा। विनयेन निभृताभिस्तूष्णीम्भूताभिः। प्रत्यागता पुनरुपस्थिता चेतना चैतन्यं यस्याः सा। चन्द्रापीड़दर्शनचपलेव एवासीदिति भावः। हे चपले! कादम्बरि!। निगृहीतेव निर्यातितेव। उपालब्धेव तिरस्कृतेव।

নিকটবর্ত্তী এই প্রমদবনে ক্রীড়াপর্ব্বতের মণিমন্দিরে অবস্থান করুন" এই কথা বলিয়া গন্ধর্ব্ব-রাজের সহিত সাক্ষাৎ করিবার নিমিত্ত চলিয়া গেল। চন্দ্রাপীড়ও, তাহারই সহিত নির্গত হইয়া সেই ক্রীড়াপর্ব্বতস্থিত মণিমন্দিরে চলিয়া গেলেন; পূর্ব্বপরিচিত কেয়ূরক পথ বলিয়া দিতে দিতে চন্দ্রাপীড়ের সঙ্গে গিয়াছিল এবং কাদম্বরী চন্দ্রাপীড়ের চিত্তবিনোদনের নিমিত্ত, কতকগুলি কন্যাকে পাঠাইবার জন্য প্রতিহারীকে আদেশ করিয়াছিলেন; তাই প্রতিহারী বীণাবাদক, বংশীবাদ্যে নিপুণ, গানবিদ্যায় দক্ষ, দ্যূতক্রীড়ায় অনুরাগী, পাশার ছক্ বুঝিতে সুচতুর, চিত্রকার্য্যে শিক্ষিত এবং সুন্দরপ্রবন্ধ পাঠ করিতে নিপুণ—এইরূপ কতকগুলি কন্যাকে পাঠাইয়াছিল, তাহারাও চন্দ্রাপীড়ের পশ্চাৎ পশ্চাৎ গিয়াছিল।

(ঞ) চন্দ্রাপীড় চলিয়া গেলে কাদম্বরী সকল সখীজন ও পরিজনকে বিদায় দিয়া, কতিপয় পরিচারিকার সঙ্গে যাইয়া অট্টালিকায় আরোহণ করিলেন। সেখানে যাইয়া শয্যার উপরে পতিত হইলে, সেই পরিচারিকারা বিনয়বশতঃ নীরব হইয়া দূরে থাকিয়াই তাঁহার চিত্তবিনোদন করিতে লাগিল, তখন কোথাও হইতে তাঁহার চৈতন্য আসিয়া উপস্থিত হইল;

---

(१) दुरोदरेत्यादिः पाठिकाभिश्चेत्यन्तः पाठः क्वचिन्नास्ति। (२) सकलसखीजनञ्च। (३) अदूर...।

लज्जया, 'गन्धर्वराजपुत्रि! कथमेतदयुक्तम्?' इत्युपालब्धेव विनयेन, 'अय-मसावव्युत्पन्नो बालभावः क्व गतः' इत्युपहसितेव मुग्धतया, 'स्वैरिणि! मा कुरु यथेष्टमेकाकिन्यविनयम्' इत्यामन्त्रितेव कुमारभावेन, 'भीरु! नायं कुलकन्य-कानां क्रमः' इति गर्हितेव महत्त्वेन, 'दुर्विनीते! रक्षाविनयम्' इति तर्जितेवा-चारेण, 'मूढे! मदनेन (१) लघुतां नीतासि' इत्यनुशासितेवाभिजात्येन, 'कुतस्तवेयं तरल-हृदयता' इति (२) धिक्कृतेव धैर्य्येण, 'स्वच्छन्दचारिणि! अप्रमाणी-कृताहं त्वया' इति निन्दितेव कुलस्थित्या, अतिगुर्वीं लज्जामुवाह। (अ)

अयमसौ सोऽयमित्यर्थः, अव्युत्पन्नो यौवनकालीनशृङ्गाररसानभिज्ञः, बालभावः शिशुस्वभावस्तव क्व गतः, इति कृत्वा मुग्धतया नवागतेन मुग्धाख्यनायिकाविशेषभावेन उपहसितेव, मुग्धाभावेन बालभावनिरासादिति भावः। मुग्धामाह साहित्यदर्पणः—"प्रथमावतीर्णयौवनमदनविकारा रतौ वामा। कथिता मृदुश्च माने समधिकलज्जावती मुग्धा।" हे स्वैरिणि! स्वेच्छाचारिणि!। अविनयं अशिष्टव्यवहारं। नायकेन सहाविनयं कर्त्तुमर्हसि न तत्र दोष इति द्योतयितुमेकाकिनीपदं प्रयुक्तम्। कुमारभावेन कन्यकावस्थया, आमन्त्रितेव आमन्त्र्य उपदिष्टेव। क्रमो रीतिः। महत्त्वेन औदार्य्येण। अविनयं अशिष्टव्यवहारं, रक्ष निवारय। आचारेण सदाचारेण। आभिजात्येन कौलिन्येन, अनुशासितेव शिक्षितेव। तरलहृदयता चपलचित्तता। अहं कुलस्थितिः, अप्रमाणीकृता अवज्ञाता। कुलस्थित्या वंशमर्य्यादया। अत्र निग्रहीतेवेत्यादितः प्रत्येक-वाक्य एव क्रियोत्प्रेक्षालङ्कारः।

তাই সেই সময়ে তিনি একাকিনী গুরুতর লজ্জা অনুভব করিতে লাগিলেন; কারণ—'চঞ্চলে! তুমি, এ, কি আরম্ভ করিয়াছ' এই কথা বলিয়া লজ্জা যেন তাঁহাকে যাতনা দিতে লাগিল; 'গন্ধর্ব্বরাজকন্যে! ইহা কি তোমার সঙ্গত হইয়াছে?' এই কথা বলিয়া বিনয় যেন কাদম্বরীকে তিরস্কার করিতে লাগিল। 'তোমার সেই অনভিজ্ঞ বালকস্বভাব কোথায় গেল?' এই কথা বলিয়া মুগ্ধতা যেন তাঁহাকে তিরস্কার করিতে লাগিল। 'হে স্বেচ্ছাচারিণি! তুমি কেবল একাকিনী ইচ্ছানুসারে অশিষ্ট ব্যবহার করিও না' সম্বোধনপূর্ব্বক এই কথা বলিয়া কন্যাবস্থা যেন তাঁহাকে উপদেশ দিতে লাগিল। 'ভয়শীলে! কুলকন্যাগণের এই রীতি নহে' এই কথা বলিয়া ঔদার্য্য যেন নিন্দা করিতে লাগিল। 'দুর্ব্বিনীতে! নিজের অশিষ্ট ব্যবহার নিবারণ কর' এই কথা বলিয়া আচার যেন ভর্ৎসনা করিতে লাগিল। 'হে মূঢ়ে! কামদেব তোমাকে হাল্কা করিয়া ফেলিয়াছেন' এই কথা বলিয়া কৌলীন্য যেন শাসন করিতে লাগিল। 'তোমার এই চপলতা আসিল কোথা হইতে?' এই কথা বলিয়া ধৈর্য্য যেন ধিক্কার দিতে লাগিল। 'হে স্বচ্ছন্দচারিণি! তুমি আমাকে অবজ্ঞা করিলে' এই কথা বলিয়া বংশমর্য্যাদা যেন নিন্দা করিতে লাগিল।

---

(१) मूढे! निग्रहीता मदनेन। (२) तरलता।

समचिन्तयच्चैवम्—'अगणितसर्वशङ्कया तरलहृदयतां दर्शयन्त्या अद्य मया किं कृतमिदं मोहान्धया (१) (ट)। तथाहि, अदृष्टपूर्वोऽयमिति साहसिकया (२) मया न शङ्कितम्। लघुहृदयां मां लोकः (३) कलयिष्यतीति निर्लज्जया नाकलितम्। कास्य चित्तवृत्तिरिति मूढ़या (४) न परीक्षितम्। दर्शनानुकूला-स्मस्य नेति वा तरलया न कृतो विचारक्रमः (ठ)। प्रत्याख्यानवैलक्ष्याच्च भीतम्, गुरुजनाच्च त्रस्तम्, लोकापवादाच्चोद्विग्नम्। तथा च महाश्वेताति-दुःखितेति (५) निर्दाक्षिण्यया (६) नापेक्षितम्, आसन्नवर्त्तिसखीजनोऽप्युपलक्ष-यतीति मन्दया न लक्षितम्, पार्श्वस्थितः परिजनः पश्यतीति नष्टचेतनया न

(ट) समिति। न गणिता सर्वेभ्यः पित्रादिभ्यः शङ्का यया तया।

(ठ) तथाहीति। साहसिकया हठकारिण्या अविमृष्यकारिण्येत्यर्थः। अयं कुमारः अदृष्टपूर्व इति न शङ्कितं अदृष्टपूर्वत्वेन स्वभावापरिचयात् प्रतारयितुमपि शक्नोतीति न चिन्तितमित्यर्थः कलयिष्यति निरू-पयिष्यति, इति निर्लज्जया निर्लज्जया मया नाकलितं न विभावितम्। का कीदृशी। दर्शनानुकूला दृष्टि-सुभगा। विचारक्रमो विवेचनपरम्परा।

(ड) प्रत्याख्यानेति। प्रत्याख्यानेन कुमारकर्त्तृकमत्प्रणयनिराकरणेन यद् वैलक्ष्यं व्याकुलीभावस्तस्मात्। तथा च अपि च। अतिदुःखिता वैधव्यादिति भावः। निर्दाक्षिण्यया औदार्यहीनया मया। "महाश्वेतायां सखीकार्य्यं नाहमात्मनः पाणिं ग्राहयिष्यामी"ति प्रतिज्ञया यदौदार्य्यं जातमिदानीं पाणिग्राहकी तु तन्नश्यतीति भावः। मन्दया मूढ़या मया। नष्टचेतनया विलुप्तविवेकयेत्यर्थः।

(ট) তাহার পর কাদম্বরী এইরূপ চিন্তা করিতে লাগিলেন—'আমি আজ মোহান্ধ হইয়া, সকলের আশঙ্কা অগ্রাহ্য করিয়া, মনের চঞ্চলতা দেখাইয়া, এ কি করিলাম। (ঠ) আমি অবিবেচকতানিবন্ধন 'ইঁহাকে পূর্ব্বে দেখি নাই' এ আশঙ্কাও করিলাম না। 'লোকে আমাকে লঘুচিত্ত মনে করিবে' নির্লজ্জতাবশতঃ এ বিবেচনাও করিলাম না। ইঁহার চিত্তবৃত্তি কিরূপ' মূঢ়তাবশতঃ তাহাও পরীক্ষা করিলাম না। 'আমি উঁহার দৃষ্টিতে ভাল লাগিব কি না' চঞ্চলতাবশতঃ ইহারও বিবেচনা করিলাম না। (ড) 'উনি প্রত্যাখ্যান করিলে একেবারে আকুল হইয়া পড়িব' এ ভয়ও করিলাম না, গুরুজন হইতেও ভীত হইলাম না এবং লোকাপ-বাদেরও আশঙ্কা করিলাম না।' আর মহাশ্বেতা অত্যন্ত দুঃখিত হইয়া কালযাপন করিতেছে, অনুদারতানিবন্ধন তাহারও অপেক্ষা করিলাম না, নিকটবর্ত্তী সখীগণও লক্ষ্য করিতেছে, মূঢ়তাবশতঃ আমি তাহাও লক্ষ্য করিলাম না এবং পার্শ্ববর্ত্তী পরিজনেরা যে দেখিতেছে, চৈতন্য-লোপ হওয়ায় আমি তাহাও দেখিলাম না। (ঢ) যাহারা স্থূলবুদ্ধি, তাহারাও আমার সেই

(१) मोहान्धया हताशया। (२) साहसिकतया। (३) अयं (४) मया।
(५) दुःखितेति। (६) दाक्षिण्यया।

दृष्टम् (ड)। स्थूलबुद्धयोऽपि तादृशीं विनयच्युतिं विभावयेयुः, किमुतानुभूत-मदनवृत्तान्ता महाश्वेता सकलकलाकुशलाः सख्यो वा राजकुलसञ्चारचतुरो वा नित्यमिङ्गितज्ञः परिजनः (ढ)। ईदृशेष्वतिनिपुणतरदृष्टयोऽन्तःपुरदास्यः (ण)। सर्वथा हतास्मि मन्दपुण्या, मरणं मेऽद्य श्रेयो न लज्जाकरं जीवितम्। श्रुत्वेतं वृत्तान्तं किं वक्ष्यत्यम्बा, तातो वा, गन्धर्वलोको वा। किं करोमि, कोऽत्र प्रतीकारः, केनोपायेन स्खलितमिदं प्रच्छादयामि, कस्य वा चापलमिदमेतेषां दुर्विनीतानामिन्द्रियाणां कथयामि, क्व वानेन दग्धहृदयेन पञ्चशरेण न खलु जानामि गृहीता गच्छामि (१) (त)। तथा महाश्वेताव्यतिकरेण प्रतिज्ञा कृता, तथा प्रियसखीनां पुरो मन्त्रितम्, तथा च केयूरकस्य हस्ते सन्दिष्टम् (थ)।

(ढ) स्थूलेति। विनयच्युतिं मम धैर्यस्खलनमित्यर्थः, विभावयेयुर्बुध्येरन्। इङ्गितं मनोभावसूचक-कटाक्षादिशरीरचेष्टां जानातीति इङ्गितज्ञः। अर्थापत्तिरलङ्कारः।

(ण) ईदृशेष्विति। अन्तःपुरदास्यः, ईदृशेषु प्रेमचेष्टितेषु, अतिनिपुणतरा प्रकृतभावं बोधयितु-मतिदक्षा दृष्टिर्यासां ताः। सुतरां ता अपि मदीयं तं भावमवगता एवेति भावः।

(त) सर्वथेति। स्खलितं धैर्यच्युतिं, प्रच्छादयामि गोपयामीत्यर्थः। दग्धं हृदयं येन तेनानेन पञ्चबाणेन मदनेन गृहीता आविष्टा, क्व गच्छामि, इति न खलु जानामीत्यन्वयः। अत्र वितर्काख्यभावो विषादभाव-स्याङ्गमिति प्रेयोनामालङ्कारः, तथा 'न खलु जानामि' इति वाक्यस्य वाक्यान्तरे प्रवेशेऽपि न गर्भिततादोषः, प्रत्युत चमत्कारातिशयद्योतनाद्गुण एव "गर्भितत्वं गुणः क्वापि" इति साहित्यदर्पणात्।

(थ) तथेति। महाश्वेताया व्यतिकरेण सखित्वसम्बन्धेन, तथा "सत्यीकार्यां महाश्वेतायां नाह-मात्मनः पाणिं ग्राहयिष्यामि" इत्येवंरूपा, प्रतिज्ञा कृता। प्रियसखीनां पुरोऽपि तथा तत्प्रतिज्ञावत् मन्त्रित-

---

ধৈর্য্যচ্যুতি বুঝিতে পারে; সুতরাং যে নিজে কামবৃত্তান্ত অনুভব করিয়াছে, সেই মহাশ্বেতা, সকল কলাবিদ্যায় নিপুণ সখীগণ এবং সর্ব্বদা রাজকুলে বিচরণ করায় সকল বিষয়ে সুচতুর পরিজনগণ—ইহাদের কথা আর বলিব কি। (ণ) বিশেষতঃ অন্তঃপুরস্থ দাসীগণের দৃষ্টি, এইরূপ ঘটনায় বিশেষ নিপুণ। (ত) আমার পুণ্য অল্প, তাই আমি সকল রকমেই গোল্লায় গিয়াছি; আজ আমার মরণই মঙ্গল, কিন্তু লজ্জাকর জীবন ধারণ নহে; কারণ—এই বৃত্তান্ত শুনিয়া মা কি বলিবেন, বাবাই বা কি বলিবেন আর গন্ধর্ব্বগণই বা কি বলিবে। এখন আমি কি করি, ইহার প্রতীকার কি, কোন্ উপায়ে এই দোষ ঢাকি, কাহার নিকটেই বা এই দুরন্ত ইন্দ্রিয়গণের এই চপলতার কথা বলি, এবং হৃদয়দাহকারী এই কন্দর্পকর্তৃক ধৃত হইয়া কোথায় যাই—ইহার কিছুই ত বুঝিতে পারিতেছি না। (থ) মহাশ্বেতার সহিত সম্পর্ক থাকায় সেইরূপ প্রতিজ্ঞা করিয়াছি, সখীদের নিকটেও সেইরূপ বলিয়াছি এবং কেয়ূরকের

---

(१)…दग्धहृदयेन गृहीता गच्छामि,…दग्धहृदया पञ्चबाणेन गच्छामि।

न खलु जानामि मन्दभागिनी शठविधिना वा, उत्सन्नमन्मथेन वा, पूर्वकृता-पुण्यसञ्चयेन वा, मृत्युहतकेन वा, अन्येन वा केनाप्ययमानीतो मम विप्रलम्भक-श्चन्द्रापीड़: (द)। कोऽपि वा न कदाचिद्दृष्टो नानुभूतो न श्रुतो न चिन्तितो नोत्प्रेक्षितो मां विड़म्बयितुमुपागत:, (१) यस्य दर्शनमात्रेणैव संयम्य दत्ते-वेन्द्रियै:, शरपञ्जरे निक्षिप्य समर्पितेव मन्मथेन, दासीकृत्योपनीतेवानुरागेण, गृहीतगुणपणेन (२) विक्रीतेव हृदयेन, उपकरणीभूतास्मि (ध)। न मे कार्य्यं तेन चपलेनेति क्षणमिव सङ्कल्पमकरोत्। कृतसङ्कल्पा च, अन्तर्गतेन 'मिथ्या-

मुक्तम्। अपि च केयूरकस्य हस्ते तथा सन्दिष्टं महाश्वेतान्तिके प्रतिज्ञानुरूपं वाचिकं प्रेषितम्। इदानीं पाणिग्रहणे तु सर्वत्र मिथ्यावादित्वप्रसक्ती लज्जातिशयश्चेति भाव:।

(द) नेति। उत्सन्नमन्मथेन कान्दर्पहतकेनेत्यर्थ:। पूर्वकृतो य: अपुण्यसञ्चय: पापसमूहस्तेन। मृत्युहतकेन खलस्वभावेन यमेन, येनैतद्दर्शनेन यथा तथा मम मरणमेव सम्भावयिष्यत इति भाव:। विप्रलम्भक: प्रतारक:।

(ध) कोऽपीति। नोत्प्रेक्षित: पूर्वमसम्भावित:। कोऽपि वा अनिर्वचनीयो जन:। इन्द्रियैर्मन:-प्रभृतिभि: संयम्य बद्धा चन्द्रापीड़ाय दत्तेव। इत:प्रभृति प्रत्येकवाक्य एव क्रियोत्प्रेक्षालङ्कार:। गृहीता गुणाश्चन्द्रापीड़स्य सौन्दर्य्यादय एव पणा मूल्यानि येन तेन हृदयेन चन्द्रापीड़ाय विक्रीतेव। अत्र परिवृत्ति-रलङ्कार: क्रियोत्प्रेक्षा चानयोरङ्गाङ्गिभावेन सङ्कर:। यस्य उपकरणीभूतास्मि व्यवहार्य्यद्रव्यीभूतास्मि।

(न) नेति। चपलेन तेन कुमारेण मे मम कार्य्यं प्रयोजनं नास्ति, इति सङ्कल्पं क्षणमिवाकरो-दित्यन्वय:। अन्तर्गतेन भावनावशाच्चित्तस्थितेन, हृदयस्य कादम्बर्य्या एव चित्तस्य य उत्कम्पश्चन्द्रापीड़गमन-

হাতেও সেইরূপ খবরই পাঠাইয়াছি। (দ) আমার ভাগ্য মন্দ, তাই বুঝিতে পারিতেছি না যে—ধূর্ত্ত বিধাতা, কিংবা পোড়া কামদেব, অথবা পূর্ব্বজন্মকৃত পাপসমূহ, কিংবা পোড়া যম, অথবা অন্য কেহ, আমার প্রতারক এই চন্দ্রাপীড়কে আনয়ন করিয়াছে। (ধ) অথবা, যাহাকে কখনও দেখি নাই বা অন্যভাবে অনুভব করি নাই এবং যাহার নাম শুনি নাই, যাহাকে চিন্তা করি নাই, কিংবা যাহার সম্ভাবনাও করি নাই, সেইরূপ কোন অনির্ব্বচনীয় লোক আমাকে প্রতারণা করিতে আসিয়াছে; যাহার দর্শনমাত্রেই ইন্দ্রিয়গণ যেন আমাকে বন্ধন করিয়া দান করিয়াছে, কামদেব যেন নিজের শরময় পিঞ্জরে আবদ্ধ করিয়া সমর্পণ করিয়াছেন, অনুরাগ যেন আমাকে দাসী করিয়া উপহার দিয়াছে এবং হৃদয় যেন উঁহার নিকট হইতে গুণরূপ মূল্য গ্রহণ করিয়া আমাকে বিক্রয় করিয়াছে; তাই আমি উঁহার ব্যবহারের সামগ্রী হইয়া পড়িয়াছি। (ন) 'যাহা হউক, সেই চপলস্বভাব কুমারের দ্বারা আমার প্রয়োজন নাই' কাদম্বরী মনে মনে ক্ষণকাল এইরূপ সঙ্কল্প করিলেন। এইরূপ সঙ্কল্প করিলে তাঁহার হৃদয়স্থিত চন্দ্রাপীড়, সেই

(१) उपनत:। (२) गृहीतमूल्येन गुणगणेन, गुणपणेन।

विनीते ! यदि मया न कृत्यम्, एष गच्छामि' इति हृदयोत्कम्पचलितेन परिहसितेव चन्द्रापीड़ेन, तत्परित्यागसङ्कल्प-समकालप्रस्थितेन कण्ठलग्नेन पृष्टेव जीवितेन, 'अविशेषज्ञे ! पुनरपि प्रक्षालितलोचनया दृश्यतामसौ जनः प्रत्याख्यानयोग्यो न वे'ति तत्कालागतेनाभिहितेव वाष्पेण, 'अपनयामि ते सहासुभिर्धैर्य्यावलेप'मिति निर्भर्त्सितेव मनोभुवा, पुनरपि तथैव चन्द्रापीड़ाभिमुखहृदया बभूव। (न)

त्रासादत्यन्तं कम्पनं तेन चलितो हृदयात् प्रस्थितः, तदुत्कम्पनेन यथा तत्स्थः पक्षी प्रतिष्ठते तद्वदिति भावः, तेन तथाविधेन चन्द्रापीड़ेन 'हे मिथ्याविनीते ! कादम्बरि ! यदि मया चन्द्रापीड़ेन तव कृत्यं प्रयोजनं नास्ति, तदा एषोऽहं गच्छामि' इत्युक्त्वा परिहसितेव। हृदये मां गाढ़ं स्थापयसि अथ च सङ्कल्पयसि 'तेन अपरेण न मे कार्य्यमिति' परिहासः सम्भवत्येवेति भावः। अत्र क्रियोत्प्रेक्षालङ्कारः। तस्य चन्द्रापीड़स्य परित्यागसङ्कल्पसमकाले प्रस्थितेन देहं विहाय चलितेन, अतएव कण्ठलग्नेन, जीवितेन जीवनेन, पृष्टेव 'अहमपि गच्छामि' इत्यामन्त्रितेव। अन्योऽपि प्रस्थातुकामः प्रियतमः कण्ठमालिङ्ग्य स्वप्रस्थानं पृच्छति। क्रियोत्प्रेक्षा, तया च चन्द्रापीड़परित्यागे जीवनमपि परित्यक्तं भवेदित्यनुरागस्य पराकाष्ठा व्यज्यते इत्यलङ्कारेण वस्तुध्वनिः। तत्काले चन्द्रापीड़परित्यागसङ्कल्पकरणसमये आगतेन शोकोदयादाविर्भूतेन वाष्पेण 'हे अविशेषज्ञे ! तारतम्यानभिज्ञे ! कादम्बरि ! त्वया मद्द्वारा प्रक्षालितलोचनया सत्या पुनरपि दृश्यतां, यदसौ जनश्चन्द्रापीड़स्तव प्रत्याख्यानयोग्यो न वा' इति अभिहितेव उक्तेव। क्रियोत्प्रेक्षा, तया च सर्वथैव प्रत्याख्यानायोग्य इति व्यज्यते इति पूर्ववत् ध्वनिः। तथा मनोभुवा मदनेन "ते तव असुभिः प्राणैः सह धैर्य्यावलेपं 'न मे कार्य्यं तेन अपरेण' इति धैर्य्याहङ्कारं अपनयामि" इति निर्भर्त्सितेव। क्रियोत्प्रेक्षा, तया च तदानीं धैर्य्यलोपः प्राणगमनोपक्रमश्च सञ्जात इति द्योत्यते इति पूर्ववत् ध्वनिः। अतएव तथैव पूर्ववदेव पुनरपि चन्द्रापीड़ाभिमुखं तदाकाङ्क्षि हृदयं यस्याः सा तादृशी बभूव।

হৃদয়ের কম্পন বশতঃ বিচলিত হইয়া যেন পরিহাস করিয়া বলিলেন—'যদি আমাদ্বারা তোমার প্রয়োজন না থাকে, তবে আমি এই চলিলাম।" চন্দ্রাপীড়কে পরিত্যাগ করার সঙ্কল্প করিবার সময়ে কাদম্বরীর জীবনও, যেন প্রস্থান করিবার জন্য কণ্ঠলগ্ন হইয়া তাঁহাকে জিজ্ঞাসা করিল—('তবে, আমিও যাই?')। সেই সময়ে অশ্রুজল আবির্ভূত হইয়া কাদম্বরীকে যেন বলিল—"হে তারতম্যানভিজ্ঞে! তুমি নয়নযুগল প্রক্ষালন করিয়া আবারও দেখ যে, ঐ লোকটি তোমার প্রত্যাখ্যান করার যোগ্য কি না।" এবং কামদেব যেন তিরস্কার করিয়া বলিলেন—"কাদম্বরি! তোমার প্রাণের সহিত ধৈর্য্যের অহঙ্কার, আমি দূর করিতেছি।" সুতরাং কাদম্বরীর হৃদয়, আবারও পূর্ব্বের ন্যায় চন্দ্রাপীড়ের অভিমুখীন হইল।

तदेवमस्तमितप्रतिसमाधानबला (१) बलात् प्रेमावेशेनास्वतन्त्रीकृता परवशे-वोत्थाय जालवातायनेन तमेव क्रीड़ापर्वतं (२) अवलोकयन्त्यतिष्ठत् (प)। तत्रस्था च सा तमानन्दजलव्यवधानोद्विग्नेव स्मृत्या ददर्श, न चक्षुषा (फ)। अङ्गुलीगलितस्वेदपरामर्शभीतेव चिन्तया लिलेख, न चित्रतूलिकया (ब)। रोमाञ्चतिरोधानशङ्कितेव हृदयेनालिलिङ्ग, न वक्षसा (भ)। तत्सङ्गम-कालातिपातासहेव मनो गमागमाय (३) नियुक्तवती, न परिजनम्। (म)

(प) तदिति। एवमनेन प्रकारेण अस्तमितं विलुप्तं प्रतिसमाधानबलं धैर्य्यावलम्बनसामर्थ्यं यस्याः सा तादृशी कादम्बरी, प्रेमावेशेन बलादस्वतन्त्रीकृता, अतएव परवशेव। अत्र गुणोत्प्रेक्षा।

(फ) तत्रस्थेति। आनन्दजलेन चक्षुषा दर्शने आनन्दाश्रुपातेन यद्व्यवधानं तस्मादुद्विग्नेव सती, स्मृत्या चिन्तया तं चन्द्रापीड़ं ददर्श जग्री, न तु चक्षुषा। अत्र क्रियोत्प्रेक्षा शाब्दी परिसंख्या चानयोरङ्गाङ्गिभावेन सङ्करः।

(ब) अङ्गुलीति। हस्तधृतया चित्रतूलिकया चित्रणे, अङ्गुलीभ्यो गलितैः स्वेदैर्घर्म्मैः परामर्शः संसर्गस्तेनान्यथाभाव इत्यर्थः तस्माद्भीतेव सती, चिन्तया लिलेख चित्ते चन्द्रापीड़ं चित्रयामास, न तु चित्र-तूलिकया। पूर्व्ववदलङ्कारः।

(भ) रोमाञ्चेति। वक्षसा आलिङ्गने, रोमाञ्चैस्तिरोधानं व्यवधानं तस्मात् शङ्कितेव सती, हृदयेन मनसा चन्द्रापीड़ं आलिलिङ्ग, न तु वक्षसा। पूर्व्ववदलङ्कारः।

(म) तदिति। गमागमाय परिजननियोगे, तस्य चन्द्रापीड़स्य सङ्गमे यः कालातिपातो विलम्बस्तं न सहत इति सा तादृशी सतीव, गमागमाय चन्द्रापीड़ान्तिके यातायाताय मनश्चित्तं नियुक्तवती, न तु कञ्चित् परिजनम् सर्व्वापेक्षया मनसो द्रुतगामित्वादिति भावः। पूर्व्ववदलङ्कारः। वस्तुतस्तु मणिमन्दिरभित्ति-व्यवधानेन साक्षाद्द्रष्टुमशक्नुवती चन्द्रापीड़ं केवलमेव चिन्तयामासेति निष्कर्षः।

(প) এই ভাবে কাদম্বরীর ধৈর্য্যাবলম্বন করিবার শক্তি বিনষ্ট হইলে প্রেমাবেশ আসিয়া বলপূর্ব্বক তাঁহাকে অবশ করিয়া ফেলিল, তাই তিনি পরাধীনের ন্যায় উঠিয়া গবাক্ষদ্বার দিয়া সেই ক্রীড়াপর্ব্বতের দিকে নিরীক্ষণ করিয়া রহিলেন। (ফ) সেখানে থাকিয়া কাদম্বরী, আনন্দাশ্রুজলে ব্যবধান করিবে,এই আতঙ্কেই যেন স্মৃতিদ্বারা চন্দ্রাপীড়কে দেখিতে লাগিলেন; কিন্তু নয়নদ্বারা নহে। (ব) অঙ্গুলী হইতে নিঃসৃত ঘর্ম্ম সংলগ্ন হইবে, এই ভয়েই যেন চিন্তাদ্বারা চন্দ্রাপীড়কে চিত্র করিতে লাগিলেন; কিন্তু চিত্রতুলিকাদ্বারা নহে। (ভ) রোমাঞ্চে ব্যবধান করিবে—এই আশঙ্কায়ই যেন মনে মনে আলিঙ্গন করিতে লাগিলেন; কিন্তু বক্ষোদ্বারা নহে। (ম) চন্দ্রাপীড়ের সহিত সম্মিলনের বিলম্ব সহ্য করিতে না পারিয়াই যেন যাতায়াতের জন্য মনকে নিযুক্ত করিলেন; কিন্তু কোন পরিজনকে নহে।

---

(१)...बलात् प्रेमावेशेन। (२) क्रीड़ापर्वतकं। (३) गमाय।

चन्द्रापीड़ोऽपि प्रविश्य स्वच्छन्दं कादम्बरीहृदयमिव द्वितीयं मणिगृहं, शिलातलास्तीर्णायामुभयत उपर्य्युपरि निवेशित-बह्लपधानायां कुथायां निपत्य केयूरकेणोत्सङ्गे (१) गृहीतचरणयुगलस्ताभिर्यथादिष्टेषु भूमिभागेषूपविष्टाभिः कन्यकाभिः परिवृतो दोलायमानेन चेतसा चिन्तां विवेश (य)। किं तावदस्या गन्धर्वराजदुहितुः कादम्बर्य्याः सहभुव एते विलासा एवेदृशाः सकललोकहृदय-हारिणः, आहोस्विदनाराधितप्रसन्नेन भगवता मकरकेतुना मयि नियुक्ताः, येन मां सास्रेण सरागेणाकूणितत्रिभागेण हृदयान्तःपतत्-स्मर-शर-कुसुम-रजोरूषित-

अहो! परमचमत्कारिणी खल्वियं रचनाचातुरी कविचूड़ामणेः।

(य) अथ नायिकागतभावानभिधाय नायकगतानभिधातुमाह चन्द्रेति। सुन्दरत्वसाम्यात् प्रवेशस्यानन्द-जनकत्वसाम्याद्वा द्वितीयं कादम्बरीहृदयमिव मणिगृहं, स्वच्छन्दं निर्बाधं प्रविश्येत्यन्वयः। अत द्रव्योत्-प्रेक्षालङ्कारः। उभयतः पार्श्वयोः उपर्य्युपरि निवेशितानि स्थापितानि बह्लि उपधानानि यस्यां तथाविधायां, कुथायां चित्रकम्बले, निपत्य सस्लाङ्गः सन्नवस्थाय। उत्सङ्गे क्रोड़े। दोलायमानेन सन्देहविचलितेन।

(र) किमिति। सहभुवः सहजाः। सरागेण सानुरागेण, आकूणित ईषत् सङ्कोचितः त्रिभाग-स्तृतीयो भागो यस्य तेन, हत्तिविषये संख्याशब्दानां पूरणार्थत्वमिति सूक्तमेव। हृदयस्य अन्तर्मध्ये पतता स्मरस्य मदनस्य शरकुसुमानां शरीभूतपुष्पाणां रजोभिः परागैः रूषितं विच्छुरितं तेनेव चक्षुषा तिर्य्यग्वक्रं विलोकयति। अत्र क्रियोत्प्रेक्षालङ्कारः। पूर्वं प्रत्यक्षदर्शनवेलायां ये ये भावाः सञ्जातास्तानधिकृत्येतानि ब्रवीति, अतो विलोकयतीत्यतीतसामीप्ये वर्त्तमाना। इत्यमुत्तरवाक्येष्वपि बोध्यम्।

(য) চন্দ্রাপীড়ও, আর একটি কাদম্বরী-হৃদয়ের স্থায় সেই মণিময় গৃহে যাইয়া অবাধে প্রবেশ করিলেন; সেখানে মণিময় শিলার উপরে একখানি বিচিত্র কম্বল পাতা ছিল, তাহার দুই দিকে ঘন ঘন বহুতর বালিস রাখিয়াছিল; চন্দ্রাপীড় তাহার উপরে শয়ন করিলেন; তখন কেয়ূরক আসিয়া তাঁহার চরণযুগল ক্রোড়ে সংস্থাপন করিয়া সংবাহন করিতে লাগিল এবং সেই কন্যাগণ আসিয়া নির্দ্দিষ্ট স্থানে উপবেশন করিয়া তাঁহাকে পরিবেষ্টন করিয়া রহিল—এই অবস্থায় চন্দ্রাপীড় সন্দেহাকুলচিত্তে চিন্তা করিতে লাগিলেন। (র) এই গন্ধর্ব্বরাজকন্যা কাদম্বরীর এই সমস্ত হাবভাব কি স্বভাবতই এইরূপ সকল লোকের হৃদয়াকর্ষী? না,—আরাধনা না করিলেও, ভগবান্ কামদেব আপনা আপনিই প্রসন্ন হইয়া আমার প্রতিই করাইয়াছেন? যে হেতু, কাদম্বরী আমাকে যখন বক্রভাবে দেখিতেছিলেন, তখন তাঁহার আনন্দাশ্রু নির্গত হইতেছিল, দৃষ্টির ভাব অনুরাগের সূচনা করিতেছিল এবং তিনি নয়নের তৃতীয়ভাগ সঙ্কুচিত করিয়াছিলেন; তাহাতে বোধ হইতেছিল যে, হৃদয়ের ভিতরে কামদেবের যে সকল পুষ্পময় বাণ পড়িতেছিল, তাহার রেণুতেই যেন নয়নটিকে কলুষিত করিয়াছে। (ল) আবার আমি যখন তাঁহার দিকে

(१) उत्सङ्गेन।

नैव चक्षुषा तिर्य्यग्विलोकयति (र)। मद्विलोकिता च धवलेन स्मितालोकेन दुकूलेनेव लज्जयात्मानमावृणोति (ल)। मल्लज्जाविवर्त्तमानवदना च प्रतिविम्बप्रवेशलोभेनेव कपोलदर्पणमर्पयति (व)। मदवकाशदायिनो हृदयस्य प्रथमाविनयलेखामिव कररुहेण शयनाङ्के लिखति (श)। मत्ताम्बूलवीटिकोपनयन-खेद-विधूतेन (१) रक्तोत्पल-भ्रम-भ्रमद्भ्रमरवृन्देन (२) करतलेन खिन्नं मुखमिव (३) गृहीततमालपल्लवेनेव वीजयति (ष)।' पुनश्चाचिन्तयत्—'प्रायेण मानुष्यकसुलभा लघुता मिथ्यासङ्कल्पसहस्रैरेवमायास्य मां (४) विप्रलभते,

(ल) मदिति। किञ्च मया विलोकिता सती, लज्जया, दुकूलेनेव धवलेन स्मितालोकेन स्वकीयमन्दहास्यप्रभया आत्मानं स्वदेहमावृणोति। अत्र जात्युत्प्रेक्षालङ्कारः।

(व) मदिति। किञ्च, मल्लज्जया विवर्त्तमानं वदनं यस्याः सा, प्रतिविम्बप्रवेशलोभेनेव मम प्रतिमूर्त्तिं पतनेच्छयेव, कपोल एव दर्पणस्तमर्पयति। वदनविवर्त्तनेन कपोलस्य ममाभिमुख्यादिति भावः। अत्र गुणोत्प्रेक्षानिरङ्गकेवलरूपकयोरङ्गाङ्गिभावेन सङ्करः।

(श) मदिति। कररुहेण नखेन, शयनाङ्के शय्याक्रोडे, मदवकाशदायिनो ममावस्थितिस्थानदायिनः स्वस्य हृदयस्य, प्रथमा या अविनयलेखा अशिष्टाचाररेखा तां लिखतीव। क्रियोत्प्रेक्षा।

(ष) मदिति। मह्यं ताम्बूलवीटिकाया उपनयने दानार्थोपस्थापने यः खेदः परिश्रमस्तेन विधुतेन कम्पितेन, तत्करतले रक्तोत्पलभ्रमेण भ्रमत्भ्रमरवृन्दं यस्मिन् तेन, अतएव गृहीततमालपल्लवेनेव स्थितेन भ्रमरवृन्दस्य तमालपल्लववत् कृष्णवर्णत्वादिति भावः, करतलेन पाणिना, खिन्नं घर्म्माक्तं मुखं वीजयतीव। अत्रैको भ्रान्तिमान् द्वे च क्रियोत्प्रेक्षे इत्येतेषामङ्गाङ्गिभावेन सङ्करः, स पुनश्चैत्यादौ वृत्त्यनुप्रासेन संसृज्यते।

(स) पुनरिति। मानुष्यकेण मनुष्यतया सुलभा अनायासप्राप्या लघुता अगाम्भीर्य्यं। एवमित्थं,

दृষ্টিপাত করিয়াছি, তখন লজ্জাবশতঃ শুভ্রবস্ত্রের ন্যায় শুভ্রবর্ণ মন্দ হাস্যের আলোকে নিজের দেহ আবৃত করিয়াছেন। (ব) এবং লজ্জায় আমার দিক্ হইতে মুখ ফিরাইয়া, আমার প্রতিবিম্ব প্রবেশ করাইবার ইচ্ছায়ই যেন, নিজের গণ্ডরূপ দর্পণ আমার দিকে সমর্পণ করিয়াছেন। (শ) কাদম্বরীর হৃদয়, আমাকে থাকিবার জায়গা দিয়াছিল, সুতরাং তাহার সেই প্রথম অন্যায় আচরণের রেখাই যেন নখদ্বারা শয্যার উপরে তিনি অঙ্কিত করিতেছিলেন। (ষ) যখন তিনি আমাকে দিবার জন্য সেই পানের বোঁটিটি উপস্থিত করিয়াছিলেন, তখন সেই পরিশ্রমে তাঁহার হাতখানি কাঁপিতেছিল এবং সেই হাতখানিকে রক্তোৎপল মনে করিয়া কতকগুলি ভ্রমর তাহার উপরে ঘুরিতেছিল, তাহাতে বোধ হইতেছিল যেন, তিনি একটি তমালের পল্লব ধারণ করিয়াছেন; এইরূপ হস্তদ্বারা তিনি নিজের ঘর্ম্মাক্ত মুখমণ্ডলে বাতাস করিতেছিলেন।' (স) চন্দ্রাপীড় পুনরায় চিন্তা করিলেন—'প্রায়শই মনুষ্যের স্বভাব-সুলভ লঘুতাই এইরূপ মিথ্যা ভাবনাসমূহে আমাকে

(१)...विधुतेन। (२) रक्तोत्पलभ्रमद्भ्रमरवृन्देन। (३) मुखमिदं। (४) एवं मां।

लुप्तविवेको यौवनमदो मदयति मदनो वा (घ)। यतस्तिमिरोपहतेव यूनां दृष्टिरल्पमपि कालुष्यं (१) महत् पश्यति (ङ)। स्नेहलवोऽपि वारिणेव यौवनमदेन दूरं विस्तार्य्यते (च) स्वयमुत्पादितानेकचिन्ताशताकुला कविमतिरिव तरलता न किञ्चिन्नोत्प्रेक्षते (छ)। निपुणमन्मथ-(२) गृहीता चित्रवर्त्तिकेव

च्छायास्य खेदयित्वा, मां विप्रलभते वञ्चयति। लुप्तो विवेको यस्मिन् स तादृशो यौवनमदो मदनो वा मदयति मत्तं करोति।

(ङ) उक्तमर्थं समर्थयितुमाह यत इति। यतो हेतोः। यूनां दृष्टिश्चित्तवृत्तिरिव नयनं, तिमिरेण नेत्ररोगविशेषेण उपहता व्यापितशक्तिरिव सती, अल्पमपि कालुष्यं आलम्बनीभूतनायिकाचित्तविकारं पदार्थानामाविलताञ्च, महत् पश्यति सम्भावयति अवलोकते च। अत्र चित्तवृत्तिनयनयोर्भेदेऽपि श्लेषेणाभेदाध्यवसायादतिशयोक्तिः क्रियोत्प्रेक्षा चानयोरङ्गाङ्गिभावेन सङ्करः।

(च) स्नेहेति। वारिणा जलेनेव यूनां यौवनमदेन, स्नेहलवोऽपि नायिकाया अनुरागलेशोऽपि पक्षे तैलादिस्नेहपदार्थबिन्दुरपि, दूरं विस्तार्य्यते अत्यन्तविस्ततत्वेन ज्ञाप्यते पक्षे अतीव प्रसार्य्यते। अत्र पूर्णोपमालङ्कारः।

(छ) स्वयमिति। कविमतिरिव तरलता यूनां चित्तचाञ्चल्यं, स्वयमात्मनैव उत्पादितैरनेकचिन्ताशतैराकुला सती, किञ्चिन्न उत्प्रेक्षते न सम्भावयति इति न, अपि तु सर्वमेवोत्प्रेक्षत इत्यर्थः। कवीनां मतिर्यथा वर्णनीयविषयकनानाविधचिन्ताभिराकुला सती सर्वमेवोत्प्रेक्षालङ्कारेणालङ्कृतं करोति, तथा यूनां चञ्चला चित्तवृत्तिरपि नायिकाविषयकनानाविधचिन्ताभिराकुला सती, सर्वमेव सङ्गमादिकं सम्भावयतीति सरलार्थः। पूर्णोपमा।

(ज) निपुणेति। चित्रनिपुणजनगृहीता चित्रवर्त्तिकेव चित्रतूलिकेव तरुणानां चित्तवृत्तिः, निपुणेन उत्तेजनादक्षेण मन्मथेन गृहीता आविष्टा सती, किञ्चिन्नालिखति नाङ्कयति इति न, अपि तु जगच्चित्रवत् सर्वमेव नायिकासङ्गमादिकं चित्ते अङ्कयतीत्यर्थः। पूर्णोपमा।

পরিশ্রান্ত করিয়া শেষে প্রতারণা করিতেছে, অথবা যৌবনমদ কিংবা কন্দর্প আমাকে উন্মত্ত করিয়া তুলিয়াছে। (ঙ) কারণ—যুবকগণের দৃষ্টি তিমিররোগে আক্রান্ত হইয়াই যেন, নায়িকাদিগের মনের বিকার অল্প হইলেও, তাহাকে গুরুতরভাবে দেখিয়া থাকে। (চ) জল যেমন ক্ষুদ্র তৈলবিন্দুকেও অত্যন্ত বিস্তৃত করে; সেইরূপ যুবকদিগের যৌবনমদ, নায়িকাদিগের অনুরাগের কণাকেও অত্যন্ত অধিক বলিয়া বুঝাইয়া দেয়। (ছ) কবিদিগের বুদ্ধি যেমন নিজেরই উৎপাদিত নানাবিধ চিন্তায় আকুল হইয়া সমস্তই উৎপ্রেক্ষালঙ্কারে অলঙ্কৃত করে; যুবকগণের মনের চঞ্চলতাও তেমন নিজেরই উৎপাদিত নানাবিধ চিন্তায় আকুল হইয়া, নায়িকার বিষয়ে সমস্তই সম্ভাবনা করে। (জ) উৎকৃষ্ট চিত্রকরের হস্তধৃত চিত্রতূলিকা যেমন সকলই চিত্র

(१) कलुषं। (२)...मदन...।

तरुणचित्तवृत्तिर्न किञ्चिन्नालिखति (ख)। सञ्जातरूपाभिमाना कुलटेवात्मसम्भावना न क्वचिन्नात्मानमर्पयति (ग)। स्वप्न इवाननुभूतमपि (१) मनोरथो दर्शयति (घ)। इन्द्रजालपिच्छिकेवासम्भाव्यमपि प्रत्याशा पुरः स्थापयति (ङ)। भूयश्च चिन्तितवान् 'किमनेन वृथैव मनसा खेदितेन, यदि सत्यमेवेयं धवलेक्षणा मय्येवं जातचित्तवृत्तिः (२) तदा न चिरात् स एवैनामप्रार्थितानुकूलो मन्मथः प्रकटीकरिष्यति, स एवास्य संशयस्य छेत्ता भविष्यति' इत्यवधार्योत्थायोपविश्य च ताभिः कन्यकाभिः सहाक्षैर्गेयैश्च (३) विपञ्चीवाद्यैश्च पाणविकैश्च स्वरसन्देहविवादैश्च सुभाषित-गोष्ठीभिश्चान्यैश्च (४) तैस्तैरालापैः सुकुमारैः कलाविलासैः

(ग) सञ्जातेति। कुलटेवात्मसम्भावना आत्मश्लाघा, सञ्जातो रूपाभिमानः सौन्दर्यगर्वो यस्यां सा तादृशी सती, क्वचिन्नायिकायां नायके च, आत्मानं मनः स्वदेहञ्च नार्पयति इति न, अपि तु सर्वत्रैवात्मानमर्पयतीत्यर्थः। पूर्णोपमा।

(घ) स्वप्न इति। स्वप्न इव यूनां मनोरथः, सर्वमननुभूतमपि नायिकानुरागादिकं द्रव्यजातञ्च, दर्शयति सम्भावयति दृष्टिगोचरीकरोति च। पूर्णोपमा।

(ङ) इन्द्रेति। इन्द्रजालस्य पिच्छिकेव यूनां प्रत्याशा, असम्भाव्यमपि नायिकासङ्गमादिकं अद्भुतपदार्थञ्च, पुरः स्थापयति। पूर्णोपमा।

(च) भूय इति। एवं जातचित्तवृत्तिरनुरक्तेत्यर्थः। अक्षैर्द्यूतक्रीडाभिः, गेयैर्गानैश्च, विपञ्ची सप्ततन्त्रीविशिष्टा वीणा तस्या वाद्यैश्च, पणवा वाद्ययन्त्रविशेषास्तत्संसृष्टानि वाद्यानीति पाणविकानि तैश्च, स्वरा निषादादयस्तेषां सन्देहे संशये विवादैर्विविधतर्कैश्च, सुभाषितानि नानाविधमधुरवचनानि तेषां गोष्ठीभिः संलापैश्च, "गोष्ठी सभासंलापयोः स्त्रियां" इति मेदिनी। सुकुमारैः कोमलैः कलाविलासैर्माल्यग्रथनादिकलाविद्याव्यापारैः।

করে; যুবকগণের চিত্তবৃত্তিও তেমন উত্তেজনানিপুণ কন্দর্পকর্তৃক আক্রান্ত হইয়া সকলই অঙ্কিত করে। (গ) সৌন্দর্য্যাভিমানিনী কুলটা যেমন সকল পুরুষেই দেহ সমর্পণ করে; সৌন্দর্য্যাভিমানী যুবাদিগের আত্মশ্লাঘাও তেমন সকল নায়িকাতেই মন সমর্পণ করে। (ঘ) স্বপ্নের ন্যায় যুবাদের অভিলাষ অননুভূত পদার্থও দেখাইয়া থাকে। (ঙ) এবং ইন্দ্রজালের পিচ্ছির ন্যায় যুবকদিগের আশা, অসম্ভাবনীয় বস্তুকেও সম্মুখে উপস্থিত করে।' (চ) চন্দ্রাপীড় আবার চিন্তা করিলেন—'অনর্থক এইরূপ চিন্তা করিয়া মনকে পরিশ্রান্ত করায় ফল কি, যদি সত্যই ধবলনয়না কাদম্বরীর চিত্ত আমার প্রতি এইরূপ অনুরক্ত হইয়া থাকে; তাহা হইলে, অযাচিত অবস্থায় অনুকূল সেই কামদেবই অচিরকালমধ্যে ইহাকে ব্যক্ত করিবেন এবং তিনিই এই সংশয় ছেদন করিবেন' মনে মনে এইরূপ স্থির করিয়া চন্দ্রাপীড় উঠিয়া বসিয়া, সেই

(१) अनुभूतमपि। (२) जातवृत्तिः।
(३) अक्षैश्च। (४) क्वचित् "सुभाषितगोष्ठीभिश्चान्यैश्च" इति पाठो नास्ति।

क्रीड़न्नासाञ्चक्रे (च)। मुहूर्त्तञ्च स्थित्वा निर्गम्योपवनालोकनकुतूहलाक्षिप्तचित्त: क्रीड़ापर्व्वतकशिखरमारुरोह। (छ)

कादम्बरी तु तं (१) दृष्ट्वा चिरयतीति महाश्वेताया: किल वर्त्मावलोकयितुं विमुच्य तं गवाक्षं (२) अनङ्गक्षिप्तचित्ता सौधस्योपरितनं शिखरमारुरोह (ज)। तत्र च विरलपरिजना सकलशशिमण्डलपाण्डुरेणातपत्रेण हैमदण्डेन निवार्य्यमाणातपा, चतुर्भिर्बालव्यजनैश्च फेनशुचिभिरुद्धूयमानैरुपवीज्यमाना, शिरसि कुसुमगन्धलुब्धेन भ्रमता भ्रमरकुलेन दिवापि नीलावगुण्ठनेनेव (३) चन्द्रापीड़ाभिसरणवेशाभ्यासमिव कुर्वती, (४) मुहुश्चामरशिखां समासज्य, मुहुश्छत्रदण्डम-

(छ) मुहूर्त्तमिति। उपवनालोकनस्य कुतूहलेन क्षिप्तमुद्वेलितं चित्तं यस्य स:।

(ज) कादम्बरीति। तं क्रीड़ापर्व्वतशिखरस्थं चन्द्रापीड़ं। चिरयति महाश्वेता विलम्बते, इति हेतो:। किञ्चिदलीकै: महाश्वेताया: किल वर्त्मावलोकयितुं मिथ्या महाश्वेताया: प्रत्यावर्त्तनपथं द्रष्टुं, यथार्थतश्चन्द्रापीड़ं द्रष्टुमिति भाव:। अनङ्गक्षिप्तचित्ता कामोद्वेलितहृदया।

(झ) तत्रेति। विरला अल्पा: परिजना यस्या: सा। कलाभि: सहेति सकलं षोड़शकलापरिपूर्णं यत् शशिमण्डलं तद्वत् पाण्डुरेण। अत्र लुप्तोपमालङ्कार:। हैमो दण्डो यस्य तेन तादृशेन आतपत्रेण छत्रेण, निवार्य्यमाण आतपो यस्या: सा। उद्धूयमानै: परिचारिकाभिरान्दोल्यमानै:, फेनवत् शुचिभि: शुभ्रै:। अत्रापि लुप्तोपमा। बालव्यजनैश्चामरै:। कुसुमगन्धलुब्धेन सता शिरसि भ्रमता, अतएव नीलावगुण्ठनेनेव,

কন্যাগণের সহিত পাশা খেলা, গান, বীণা ও পণবের বাদ্য, কোন স্বরের সন্দেহ হইলে সে বিষয়ে নানাবিধ বিতর্ক, মধুর বাক্যে কথোপকথন, অন্যান্য নানাবিধ আলাপ এবং মালাগাঁথা প্রভৃতি কোমল কলাবিদ্যার ব্যবহারে চিত্তবিনোদন করতঃ অবস্থান করিতে লাগিলেন। (ছ) সেই মণিমন্দিরে কিছুকাল সেই ভাবে থাকিয়া, তথা হইতে নির্গত হইয়া উদ্যান-দর্শনের কৌতুকে আকৃষ্টচিত্ত হইয়া সেই ক্রীড়াপর্ব্বতের শৃঙ্গে আরোহণ করিলেন।

(জ) কাদম্বরী কিন্তু সেখানে চন্দ্রাপীড়কে দেখিয়া, 'মহাশ্বেতা বিলম্ব করিতেছে' তাই তাহার ফিরিয়া আসিবার পথ দেখিবার ভাণ করিয়া, সেই গবাক্ষদ্বার পরিত্যাগপূর্ব্বক কামাবিষ্টচিত্তে অট্টালিকার উপরে যাইয়া আরোহণ করিলেন। (ঝ) সেখানে কাদম্বরীর সঙ্গে অল্পই পরিজন ছিল; ষোড়শকলায় পরিপূর্ণ চন্দ্রমণ্ডলের ন্যায় শুভ্রবর্ণ এবং স্বর্ণদণ্ডসংযুক্ত একটি ছত্রদ্বারা কোন পরিচারিকা তাঁহার রৌদ্র নিবারণ করিতেছিল; চারিজন পরিচারিকা সমুদ্রফেনের ন্যায় ধবলবর্ণ চারিটি চামর আন্দোলন করিয়া তাঁহাকে বাতাস করিতেছিল; নীলবর্ণ অবগুণ্ঠনের ন্যায় কতকগুলি ভ্রমর, পুষ্পের সৌরভলোভে কাদম্বরীর মস্তকের উপরে

(१) तान्तं। (२) विमुच्यतां गवाक्षमित्युक्ता। (३) नीलावगुण्ठनेव।
(४)...वेषाभ्यस्यन्ती,...वेशाभ्यासं कुर्वती, कैलासशिखर इव गौरी इत्यपि क्वचिदधिक: पाठ:।

वलम्बय, मुहुस्तमालिकास्कन्धे करौ विन्यस्य, मुहुर्मदलेखां परिष्वज्य, (१) मुहुः परिजनान्तरितसकलदेहा नेत्रत्रिभागेण, (२) मुहुरावलितत्रिवलीवलया परिवृत्य, मुहुः प्रतीहारीवेत्रलताग्रशिखरे कपोलं निधाय, मुहुर्निश्चलकरविधृताम-धरपल्लवे वीटिकां विनिवेश्य, (३) मुहुरुद्गीर्णोत्पल-(४) प्रहार-पलायमान-परिजनानुसरण-दत्त-कतिपयपदा विहस्य, तं विलोकयन्ती तेन च विलोक्य-माना, महान्तमपि कालमतिक्रान्तं नाज्ञासीत् (झ)। आरुह्य च प्रतीहार्या निवेदितमहाश्वेताप्रत्यागमना तस्मादवततार (ञ)। स्नानादिषु मन्दादरापि

भ्रमरकुलेनेत्यन्वयः। अत्र श्रौतोपमालङ्कारः। चन्द्रापीडस्य अभिसरणवेशाभ्यासं कुर्वतीव, परेषां दर्शनभिया तत्र नीलावगुण्ठनस्यावश्यकत्वादिति भावः। अत्र क्रियोत्प्रेक्षालङ्कारः। चामरशिखां बालव्यजनाग्रदेशं समासज्य अवलम्ब्य। परिजनेन अन्तरितस्तिरोहितः सकलो देहो यस्याः सा तादृशी सती, नेत्रस्य त्रिभागेण एककोणेन, तं विलोकयन्तीति परेणान्वयः। आवलितं परिवर्त्तनवेलायां वसनापसरणेनाविष्कृतं त्रिवली-वलयं उदरोपरिस्थवलित्रयमण्डलं यया सा। वीटिकां ताम्बूलस्येति शेषः। उद्गीर्णं कर्णात् प्रच्यावितं यदुत्पलं तस्य प्रहारेण पलायमानो यः परिजनस्तस्य अनुसरणे दत्तानि कतिपयानि पदानि पदक्षेपा यया सा। तं चन्द्रापीडं। तेन चन्द्रापीडेन।

(ञ) आरुह्येति। आरुह्य तत्प्रासादशिखरमिति शेषः। निवेदितं महाश्वेतायाः प्रत्यागमनं यस्यै सा कादम्बरी। तस्मात् प्रासादशिखरात्।

ভ্রমণ করিতেছিল; তাহাতে তিনি যেন চন্দ্রাপীড়ের প্রতি অভিসারে যাইবার বেশ শিক্ষা করিতেছিলেন—এই অবস্থায় কাদম্বরী বারংবার চামরের অগ্রদেশ ধারণ করিয়া, বারংবার ছত্রদণ্ড গ্রহণ করিয়া, বারংবার তমালিকার স্কন্ধে হস্তযুগল সংস্থাপন করিয়া, বারংবার মদলেখাকে আলিঙ্গন করিয়া, বারংবার কোন পরিচারিকার দেহের অন্তরালে থাকিয়া, নয়নের তৃতীয় ভাগদ্বারা, বারংবার উদরের ধর তিনটি বাহির করিয়া ফিরিয়া ফিরিয়া, বারংবার প্রতীহারীর বেত্রযষ্টির উপরে গণ্ডদেশ স্থাপন করিয়া, বারংবার নিশ্চল হস্তে গ্রহণপূর্ব্বক তাম্বূলবীটিকা (পানের বীড়ি) ওষ্ঠপল্লবে বিন্যস্ত করিয়া এবং কর্ণ হইতে একটি উৎপল আনয়নপূর্ব্বক তাহা দ্বারা তাড়ন করায় কোন পরিচারিকা পলায়ন করিতে লাগিলে তাহার পশ্চাৎ পশ্চাৎ কতিপয় পদক্ষেপপূর্ব্বক বারংবার হাস্য করিয়া চন্দ্রাপীড়কে দেখিতে লাগিলেন এবং চন্দ্রাপীড়ও তাঁহাকে দেখিতে লাগিলেন—এই অবস্থায় যে বহুসময় চলিয়া গেল, তাহা কাদম্বরী জানিতে পারিলেন না। (ঞ) তাহার পর প্রতীহারী সেই অট্টালিকার উপরে আরোহণ করিয়া মহাশ্বেতার প্রত্যাগমনের সংবাদ জানাইলে কাদম্বরী তথা হইতে অবতরণ

---

(१)...सखीं परिष्वज्य। (२)...नेत्रत्रिभागेणावलोक्य। (३) निवेश्य। (४) उद्वर्णकर्णोत्पल...।

महाश्वेतानुरोधेन दिवसव्यापारमकरोत् (ट)। चन्द्रापीड़ोऽपि तस्मादवतीर्य्य प्रथमविसर्जितेनैव कादम्बरीपरिजनेन निर्वर्त्तित-(१) स्नानविधिर्निरुपहत-शिलातलार्च्चिताभिमतदैवतः (२) क्रीड़ापर्वतक एव सर्वमाहारादिकमहःकर्म्म चक्रे। (ठ)

क्रमेण च कृताहारः क्रीड़ापर्वतकप्राग्भागभाजि, मनोहराणि, हारीतहरिति, हरिणी-(३) रोमन्थफेनशीकरासारे, सीरायुध-हल-भय-निश्चलकालिन्दी-जल-त्विषि, तरुणी-चरणालक्तक-रस-शोण-शोचिषि, कुसुमरजः-सिकतिल-तले, लता-मण्डपोपगूढ़े, शिखण्डि-ताण्डव-सङ्गीतगृहे, मरकत-शिलातले समुपविष्टः (४)

(ट) स्नानेति। मन्दादरापि चन्द्रापीड़ोत्कण्ठावशादल्पाग्रहापि।

(ठ) चन्द्रेति। तस्मात् क्रीड़ापर्वतशृङ्गात्। प्रथमविसर्जितेनैव पूर्वप्रेरितेनैव। निर्वर्त्तितो निष्पादितः स्नानविधिर्येन सः। निरुपहते छिद्रादिभिरदुष्टे, शिलातले पाषाणोपरि अर्च्चितं पूजितं अभिमतदैवतं इष्टदेवता येन सः। अहःकर्म्म दिवसकार्य्यम्।

(ड) क्रमेणेति। किञ्च कृताहारश्चन्द्रापीड़ः। क्रीड़ापर्वतकस्य प्राग्भागं पूर्वांशं भजत इति तस्मिन्। हारीतः पक्षिविशेषस्तद्वत् हरिति हरिद्वर्णे। अत्र लुप्तोपमा। हरिणीनां रोमन्थचर्वितचर्वणं तेन ये फेनाःतेषां शीकरासारो विन्दुवृष्टिर्यस्मिन् तत्र। सीरायुधस्य बलरामस्य हलभयेन निश्चलं यत् कालिन्दीजलं यमुनातोयं तस्य त्विड़िव त्विट् प्रभा यस्य तस्मिन्। अत्रापि लुप्तोपमा। तरुणीनां चरणयोरलक्तकरसेन शोणं रक्तवर्णं शोचिः कान्तिर्यस्य तस्मिन्। कुसुमानां रजोभिः परागैः सिकतिलं वालुकामयं तलमुपरिभागो यस्य तस्मिन्। लतामण्डपैः उपगूढ़े संश्लिष्टे परिवेष्टित इत्यर्थः। शिखण्डिनां मयुराणां ताण्डवं नृत्यं यत्र तत्ताहृशं सङ्गीतगृहं यस्मिन् तत्र। एवंविधे मरकतशिलातले समुपविष्टः सन्, वक्ष्यमाणानि दृष्टवान्।

করিলেন। (ট) এবং স্নানপ্রভৃতি কার্য্যে অল্প আগ্রহ থাকিলেও মহাশ্বেতার অনুরোধে সে সমস্তই সম্পাদন করিলেন। (ঠ) এদিকে চন্দ্রাপীড়ও ক্রীড়াপর্ব্বতের শৃঙ্গ হইতে অবতরণ করিয়া, পূর্ব্বপ্রেরিত কাদম্বরীর পরিজনগণের সাহায্যে স্নানকার্য্য সম্পাদন করিয়া, নির্দ্দোষ একখানি প্রস্তরখণ্ডের উপরে ইষ্টদেবতার পূজা করিয়া, সেই ক্রীড়াপর্ব্বতেই আহারাদি দিনের সমস্ত কার্য্য করিলেন।

(ড) সেই ক্রীড়াপর্ব্বতের পূর্ব্বদিকে হারিল পক্ষীর ন্যায় হরিদ্বর্ণ মনোহর একখানি মরকতমণির প্রস্তর ছিল; চর্ব্বিত চর্ব্বণ করিবার সময়ে হরিণীগণের মুখ হইতে ফেনবিন্দুসমূহ, তাহার উপরে পড়িয়াছিল; বলরামের লাঙ্গলের ভয়ে নিশ্চল যমুনাজলের ন্যায় তাহার প্রভা প্রকাশ পাইতেছিল; যুবতীদিগের পায়ের আলতার রসে তাহার দীপ্তি রক্তবর্ণ হইয়াছিল;

(१) निर्वर्त्तित…। (२)…शिलार्च्चित…। (३) हरिण…। (४) उपविष्टः।

दृष्टवान् (ड) सहसैवातिबहलधाम्ना धवलेनालोकेन जलेनेव निर्वाप्यमाणं दिवसम्, मृणालवलयेनेव (१) पीयमानमातपम्, क्षीरोदेनेव प्लाव्यमानां महीम्, चन्दनरसवर्षेणेव सिच्यमानान् दिगन्तान्, सुधयेव विलिप्यमानमम्बरतलम् (ढ)। आसीच्चास्य मनसि किमु खलु भगवानोषधिपतिरकाण्ड एव शीतांशुरुदितो भवेत्, उत यन्त्रविक्षेप-विशीर्य्यमाण-पाण्डुर-जल-धारा-सहस्राणि (२) धारा-गृहाणि मुक्तानि, आहोस्विदनिल-विकीर्य्यमाण-शीकर-धवलित-भुवनाम्बर-सिन्धुर्धरातलमवतीर्णेति (३) (ण)"।

(ड) सहसेति। दिवसं अतिबहलं नितान्तप्रचुरं धाम तेजो यस्य तेन धवलेनालोकेन जलेनेव स्थितेन सता, निर्वाप्यमाणं विलुप्यमानमिव दृष्टवान्। अत्र श्रौतोपमाप्रतीयमानक्रियोत्प्रेक्षयोरङ्गाङ्गिभावेन सङ्करः। आतपं सूर्य्यालोकं मृणालवलयेन पीयमानमन्तर्गतीक्रियमाणमिव दृष्टवान्। अत्र क्रियोत्प्रेक्षालङ्कारः। महीं भूमिं क्षीरोदेन सागरेण प्लाव्यमानामिव दृष्टवान्। क्रियोत्प्रेक्षा। दिगन्तान् चन्दनरसवर्षेण सिच्यमानानिव दृष्टवान्। क्रियोत्प्रेक्षा। तथा अम्बरतलमाकाशं सुधया विलिप्यमानमिव दृष्टवान्। क्रियोत्प्रेक्षा। सर्वत्र आनीयमानहारकिरणव्याप्तत्वादिति भावः।

(ण) आसीदिति। अस्य चन्द्रापीडस्य। अकाण्ड एव असमय एव। शीतांशुश्चन्द्रः। अत्र ओषधिपतिपदस्य मुख्यानुपकारित्वादपुष्टार्थत्वदोषः, स च तत्परित्यागेनैव समाधेयः। यन्त्राणां विक्षेपेण विघूर्णनेन विशीर्य्यमाणानि समन्ताद्विक्षिप्यमाणानि पाण्डुराणि शुभ्राणि जलधाराणां सहस्राणि येषां तानि धारागृहाणि मुक्तानि उत। आहोस्वित् किंवा, अनिलेन वायुना विकीर्य्यमाणैः सर्वतो विक्षिप्यमाणैः शीकरैः जलबिन्दुभिः, धवलितं शुभ्रीकृतं भुवनं यया सा, अमरसिन्धुर्मन्दाकिनी धरातलमवतीर्णा। कथमन्यथा सर्वत्र एवंरूपी शुभ्रता प्रसरतीति भावः। अत्र शुद्धसन्देहोऽलङ्कारः।

পুষ্পের রেণুতে তাহার উপরিভাগ বালুকাময় হইয়াছিল; লতামণ্ডপে তাহার চারিদিক্ বেষ্টিত ছিল এবং তাহার মধ্যে ময়ূরগণের নৃত্য ও সঙ্গীত হইত; চন্দ্রাপীড় আহার করিয়া সেই শিলার উপরে উপবিষ্ট হইয়া ক্রমে দেখিতে পাইলেন যে, (ঢ) সহসাই অত্যন্ত তেজস্বী ও জলের ন্যায় শুভ্রবর্ণ আলোকমালায় সেই দিনটাকে যেন নির্বাণ করিয়া দিতেছে, মৃণালমণ্ডল যেন রৌদ্রটাকে পান করিতেছে, ক্ষীরোদসাগর যেন ভূতল প্লাবিত করিতেছে, চন্দনজলের বৃষ্টি যেন দিগ্‌দিগন্ত সিক্ত করিতেছে এবং সুধা যেন আকাশতলকে লিপ্ত করিতেছে। (ণ) তখন চন্দ্রাপীড়ের মনে হইল যে, 'ওষধিপতি ভগবান্ চন্দ্র, কি অসময়েই উদিত হইলেন? না কেহ ধারাগৃহগুলিকে উন্মুক্ত করিয়া দিয়াছে, তাহাতে যন্ত্রগুলি ঘুরিতে থাকায় তাহা হইতে শুভ্রবর্ণ জলধারাসমূহ সকল দিকে বিক্ষিপ্ত হইতেছে? অথবা মন্দাকিনী ভূতলে অবতরণ করিয়াছেন, তাহার জলবিন্দুসমূহ বায়ুবেগে বিক্ষিপ্ত হইয়া ভুবনমণ্ডল শুভ্রবর্ণ করিয়াছে"?।

---

(१) मृणालधवलेनेव। (२) पाण्डुरधारासहस्राणि। (३) कुतूहलाद्धरातलं।

कुतूहलाच्च (१) आलोकानुसारप्रहितचक्षुरद्राक्षीत् (त)　अनल्पकन्यका-कदम्बपरिवृतां ध्रियमाणधवलातपत्रामुद्धूयमानचामरद्वयां कादम्बरीप्रतीहार्य्या (२) वामपाणिना　वेत्रलतागर्भेणार्द्रवस्त्रशकलावच्छन्नमुखं　चन्दनानुलेपनसनाथं नारिकेल-(३) समुद्गकमुद्वहन्त्या दक्षिणकरेण दत्तहस्तावलम्बां, केयूरकेण च निश्वासहार्य्ये (४) निर्म्मोकशुचिनी धौते कल्पलतादुकूले दधता निवेद्यमानमार्गां, मालतीकुसुमदामाधिष्ठित-करतलया च तमालिकयानुगम्यमानामागच्छन्तीं मदलेखां तस्याश्च समीपे तरलिकाम्, (थ)　तया च सितांशुकोपच्छदे पटलके

(त) कुतूहलादिति । किञ्च, कुतूहलात् आलोकानुसारेण तमालोकं लक्ष्यीकृत्येत्यर्थः प्रहितं प्रेरितं चक्षुर्येन स तादृशश्चन्द्रापीड़ः, आगच्छन्तीं मदलेखां, तस्याश्च समीपे तरलिकां, तया च गृहीतं हारमद्राक्षी-दित्यन्वयः ।

(थ) प्रथमं मदलेखां विशेषयन्नाह अनल्पेति । अनल्पैर्बहुभिः कन्यकानां कदम्बैः समूहैः परिवृताम् । ध्रियमाणं धवलमातपत्रं छत्रं यस्यास्ताम् । उद्धूयमानं आन्दोल्यमानं चामरद्वयं यस्यास्ताम् । कादम्बर्य्याः प्रतीहार्य्या, वेत्रलतागर्भेण वेत्रयष्टिधारिणा वामपाणिना, आर्द्रवस्त्रशकलेन क्लिन्नवसनखण्डेन अवच्छन्नमावृतं मुखं यस्य तत्तादृशं, तथा चन्दनानुलेपनेन सनाथं संयुक्तं नारिकेलस्य समुद्गकं सम्पुटकं उद्वहन्त्या, धारयन्त्या तया, दक्षिणकरेण दत्तो हस्तावलम्बो यस्यास्ताम् । किञ्च, निश्वासेन हार्य्ये हर्त्तुं शक्ये अतिलघुनी इत्यर्थः, निर्म्मोकवत् सर्पकञ्चुकवत् शुचिनी शुभ्रे, धौते प्रक्षालिते, कल्पलताया दुकूले सूक्ष्मवसन-युगलं, दधता धारयता केयूरकेण निवेद्यमानो मार्गः पन्था यस्यास्ताम् । तथा मालतीकुसुमानां दाम्ना मालया अधिष्ठितं आश्रितं करतलं यस्यास्तया तथोक्तया, तमालिकया चानुगम्यमानाम् ।

(ত—থ) চন্দ্রাপীড় কৌতুকবশতঃ সেই আলোকের দিকে দৃষ্টিপাত করিয়া দেখিলেন—বহুতর কন্যাগণে পরিবেষ্টিত হইয়া মদলেখা আসিতেছে ; কোন পরিচারিকা তাহার মস্তকের উপরে শ্বেতচ্ছত্র ধারণ করিয়াছে ; আর দুই জন পরিচারিকা তাহার দুই দিকে দুইটি চামর আন্দোলন করিতেছে ; কাদম্বরীর প্রতীহারী, বেত্রযষ্টিযুক্ত বামহস্তে, আর্দ্রবসনে আবৃতমুখ ও চন্দনানুলেপন-সংযুক্ত একটি নারিকেলপুটক ধারণ করিয়া, দক্ষিণ হস্তে মদলেখার হস্তধারণপূর্ব্বক আসিতেছে ; আর নিশ্বাসবায়ুতেও উড়াইয়া নিতে পারে এবং সাপের খোলসের ন্যায় সাদা—এইরূপ দুইখানি কল্পলতার কাপড় লইয়া কেয়ূরক মদলেখারি পথ বলিয়া দিতে দিতে আসিতেছে ; তমালিকাও এক ছড়া মালতীফুলের মালা লইয়া মদলেখার পিছনে পিছনে আসিতেছে এবং তরলিকাও মদলেখার সঙ্গে সঙ্গে আসিতেছে । (দ) সেই তরলিকা, শুভ্রবর্ণ

(१) क्वचित् कुतूहलादिति नास्ति । (२) कादम्बरीं प्रतीहार्य्या । (३) नारिकेर... ।
(४) निःश्वासहार्य्ये ।

गृहीतं धवलताकारणमिव क्षीरोदस्य, सहभुवमिव चन्द्रमसः, मृणालदण्डमिव नारायणनाभिपुण्डरीकस्य, मन्दरक्षोभविक्षिप्तमिवामृतफेन-पिण्डनिकरम्, वासुकि-निर्म्मोकमिव मन्थनश्रमोज्झितम्, हासमिव श्रियः (१) कुलगृहवियोगगलितम्, मन्दर-मथन-विखण्डिताशेष-शशि-कला-खण्ड-सञ्चयमिव संहृतम्, प्रतिमागत-तारागणमिव (२) जलधि-(३) जलादुद्धृतम्, दिग्गज-कर-शीकरासारमिव पुञ्जी-भूतम्, नक्षत्रमालाभरणमिव मदनद्विपस्य, शरन्मेघशकलैरिव कल्पितम्,

(८) हारं वर्णयितुमाह तयेति। किञ्च, तया तरलिकया, सितांशुकं शुभ्रवसनं उपच्छदं आवरणं यस्य तस्मिन्, पटलके मञ्जूषायां, गृहीतं धृतं। क्षीरोदस्य सागरस्य धवलतायाः कारणमिव, तत्र स्थितत्वादिति भावः। अत्र उत्प्रेक्षालङ्कारः। चन्द्रमसः सहभुवं सहोदरमिव। उत्प्रेक्षा। नारायणनाभिपुण्डरीकस्य मृणालदण्डमिव। उत्प्रेक्षा। मन्दरस्य पर्वतस्य क्षोभेण समुद्रमथनवेलायां देवदानवैराकर्षणात् सञ्चलनेन विक्षिप्तं अमृतफेनपिण्डस्य निकरं समूहमिव। उत्प्रेक्षा। मन्थनश्रमेण समुद्रमथनायासेन उज्झितं त्यक्तं, वासुकि रज्जुरूपस्य अनन्तनागस्य निर्म्मोकं कञ्चुकमिव। उत्प्रेक्षा। कुलगृहस्य पितृभवनस्य सागरालयस्य वियोगेन विरहकष्टेन गलितं मुखाद्विच्युतं श्रियो लक्ष्म्याः हासं हास्यमिव। क्रियोत्प्रेक्षा। संहृतं एकत्र समवेतीकृतं मन्दरस्याचलस्य मथनेन विखण्डिताश्चूर्णीकृताः अशेषाः समग्रा याः शशिकलास्तासां खण्डसञ्चयं खण्डसमूहमिव। उत्प्रेक्षा। जलधिजलादुद्धृतं प्रतिमागततारागणमिव तत्रैव प्रतिबिम्बितनक्षत्रसमूहमिव। उत्प्रेक्षा। पुञ्जीभूतं दिग्गजानां ये कराः शुण्डास्तेषां शीकरासारं जलबिन्दुधारासम्पातमिव। क्रियोत्प्रेक्षा। मदनस्य यो द्विपो हस्ती तस्य नक्षत्रमालाभरणमिव सप्तविंशति-संख्यकमुक्तामालारूपालङ्कारमिव। उत्प्रेक्षा। शरन्मेघानां शकलैः खण्डैः कल्पितं रचितमिव। क्रियोत्प्रेक्षा। कादम्बर्य्याः रूपेण सौन्दर्य्येण वशीकृतानि यानि मुनिजनानां हृदयानि तैर्निर्म्मितमिव, तेषामपि

বসনে আবৃত একটি পেঁটরার ভিতরে একছড়া হার লইয়া আসিতেছিল, সেই হারছড়াই যেন ক্ষীরোদসাগরের ধবলতার কারণ বলিয়া বোধ হইতেছিল, চন্দ্রের যেন সহোদর ছিল, নারায়ণের নাভিপদ্মের মৃণালের ন্যায় দীপ্তি পাইতেছিল, মন্দরপর্ব্বতের ঘূর্ণনে বিক্ষিপ্ত অমৃত-ফেন-পিণ্ড-সমূহের ন্যায় শোভা পাইতেছিল, সমুদ্র মন্থনের পরিশ্রমে গাত্র হইতে পরিত্যক্ত অনন্তনাগের কঞ্চুকের (খোলসের) ন্যায়, এবং পিতৃগৃহের সহিত বিচ্ছেদনিবন্ধন মুখমণ্ডল হইতে নিপতিত লক্ষ্মীদেবীর হাস্যের ন্যায় বিরাজ করিতেছিল; আর সেই হার ছড়া দেখিয়া বোধ হইতেছিল যে,—সমুদ্র-মন্থনের সময় চন্দ্রের সমস্ত কলাগুলিই চূর্ণ-বিচূর্ণ হইয়া গিয়াছিল, সেই খণ্ডগুলিকে যেন একত্র সংগ্রহ করা হইয়াছিল, আকাশ হইতে প্রতিবিম্বিত নক্ষত্রসমূহকেই যেন সমুদ্রের জল হইতে তোলা হইয়াছিল; দিগ্‌হস্তীর শুণ্ড হইতে নিঃসৃত জলবিন্দুসমূহকেই যেন রাশীকৃত করা হইয়াছিল; আর সেই হার ছড়াকে কামদেবের হস্তীর মুক্তামালার ন্যায় দেখা যাইতেছিল,

(१) क्वचित् श्रिय इति नास्ति। (२) प्रतिमागततारागणमिव, तारागणमिव। (३) जलनिधि...।

कादम्बरी-रूप-वशीकृत-मुनिजन-हृदयैरिव निर्म्मितम्, गुरुमिव सर्व्वरत्नानाम्, यशोराशिमिवैकत्र घटितं सर्व्वसागराणाम्, (१) प्रतिपक्षमिव चन्द्रमसः जीवितमिव ज्योत्स्नायाः, (२) (द) लक्ष्मीहृदयमिव नलिनी दल-गलज्जलविन्दु-विलास-तरलम्, (ध) उत्कण्ठितमिव मृणालवलयधवलकरम्, (न) शरच्छशिनमिव घनमुक्तांशु-निवह-धवलित-दिङ्मुखं, (प) मन्दाकिनीप्रवाहमिव (३) सुर-युवतिकुचपरिमलवाहिनं, प्रभावर्षिणमतितारं हारम्। (फ)

तपसा परमशुचित्वादिति भावः। क्रियोत्प्रेक्षा। सर्व्वरत्नानां गुरुं श्रेष्ठमिव। गुणोत्प्रेक्षा। एकत्र घटितं समवेतीकृतं सर्व्वसागराणां यशोराशिमिव। गुणोत्प्रेक्षा।' अस्य हारस्य सागरोत्पन्नत्वात् सर्व्वसागराणामित्युक्तम्। चन्द्रमसः प्रतिपक्षं प्रतिस्पर्द्धिनमिव। जात्युत्प्रेक्षा। ज्योत्स्नाया जीवितं जीवनमिव। जात्युत्प्रेक्षा। परम-निर्म्मलशुभ्रत्वादिति सर्व्वत्र भावः।

(ध) लक्ष्मीति। लक्ष्म्याः हृदयमिव, नलिनीदलाद्गलती जलविन्दोर्विलास इव विलासो दीप्तिर्यस्य स तादृशस्तरलो मध्यमणिर्यस्य तम्, अन्यत्र तु नलिनीदलाद्गलन् जलविन्दुरिव विलासेन यथावस्थानव्यापारेण तरलं चञ्चलम्। अत्र लुप्तोपमासङ्कीर्णापूर्णोपमालङ्कारः। "तरलश्च चली विङ्गे हारमध्यमणावपि।" इति विश्वः।

(न) उत्कण्ठितमिति। उत्कण्ठितं कामोत्तेजनया प्रियजनाय उत्सुकं जनमिव, मृणालवलयस्येव धवलाः कराः किरणा यस्य तम्, अन्यत्र तु मृणालवलयेन सन्तापशान्तये तद्धारणेनेत्यर्थः धवलौ करौ हस्तौ यस्य तम्। पूर्णोपमा।

(प) शरदिति। शरच्छशिनं शरदश्चन्द्रमिव, घनो निविड़ो यो मुक्तानां मौक्तिकानां अंशुनिवहः, घनैर्मेघैर्मुक्तः परित्यक्तो यः अंशुनिवहस्तेन धवलितानि दिङ्मुखानि येन तम्। पूर्णोपमा।

(फ) मन्देति। मन्दाकिन्याः स्वर्गगङ्गायाः प्रवाहमिव, सुरयुवतीनां कुचयोः परिमलं सौरभं वहतीति तम्, एकत्र तत्र धारणादन्यत्र तत्रावगाहनादिति भावः। अतितारं अतीवविशदम्।

শরৎকালের মেঘখণ্ডদ্বারাই যেন তাহা প্রস্তত করা হইয়াছিল এবং কাদম্বরীর রূপে বশীকৃত মুনিগণের হৃদয়দ্বারাই যেন নির্ম্মাণ করা হইয়াছিল, সমস্ত রত্নের মধ্যে যেন শ্রেষ্ঠ ছিল, সকল সমুদ্রের যশোরাশিকে যেন একত্র করা হইয়াছিল, আর চন্দ্রের যেন প্রতিদ্বন্দ্বী এবং জ্যোৎস্নার যেন জীবন বলিয়া বোধ হইতেছিল।(ধ) লক্ষ্মীর চিত্ত যেমন পদ্মপত্র হইতে নিপতিত জলবিন্দুর ন্যায় চঞ্চল; সেই হার ছড়ার মধ্যের মণিটিও তেমন পদ্মপত্র হইতে নিপতিত জলবিন্দুর ন্যায় দীপ্তিমান্ ছিল। (ন) উৎকণ্ঠিত ব্যক্তির হস্তদ্বয় যেমন মৃণালবলয়দ্বারা ধবলবর্ণ হয়, সেই হারছড়ার কিরণগুলিও তেমন মৃণালের ন্যায় ধবলবর্ণ ছিল। (প) শরৎকালের চন্দ্র যেমন মেঘমুক্ত কিরণসমূহদ্বারা দিঙ্মণ্ডল শুভ্রবর্ণ করে, সেই হারছড়াও তেমন মুক্তাসমূহের নিবিড় কিরণজালে দিঙ্মণ্ডল শুভ্রবর্ণ করিয়াছিল। (ফ) মন্দাকিনীর প্রবাহের ন্যায় সেই

(१) क्वचित् सर्व्वसागराणामिति न दृश्यते। (२) ज्योत्स्निकायाः। (३) मन्दाकिनीमिव।

दृष्ट्वा चायमस्य चन्द्रापीडश्चन्द्रातपद्युतिमुषः (१) धवलिम्नः कारणमिति मनसा निश्चित्य दूरादेव प्रत्युत्थानादिना समुचितोपचारक्रमेण (२) मदलेखामापतन्तीं प्रतिजग्राह (३) (ब)। सा तु तस्मिन्नेव मरकतग्रावणि मुहूर्त्तमुपविश्य स्वयमुत्थाय तेन चन्दनाङ्गरागेणानुलिप्य ते च द्वे दुकूले परिधाप्य तैश्च मालतीकुसुमदामभिरारचितशेखरं कृत्वा तं हारमादाय चन्द्रापीडमुवाच—(भ) "कुमार! तवेयमपहस्तिताहङ्कारकान्ता (४) पेशलता प्रीतिपरवशं जनं कमिव न कारयति? प्रश्रय एव ते ददात्यवकाशमेवंविधानाम्। अनया चाकृत्या कस्यासि न जीवित-

---

(ब) दृष्ट्वेति। किञ्च, तं हारं दृष्ट्वा चन्द्रापीडः, अयं हार एव, चन्द्रातपस्य चन्द्रालोकस्य द्युतिं कान्तिं मुष्णाति अपहरतीति तस्य, अस्य वितर्कितपूर्वस्य धवलिम्नः शुभ्रतायाः कारणमिति मनसा निश्चित्येत्यन्वयः। समुचितोपचारक्रमेण उपयुक्तव्यवहारपरिपाट्या। आपतन्तीमागच्छन्तीम्। प्रतिजग्राह अभ्यर्थितवान्।

(भ) सेति। सा मदलेखा। मरकतग्रावणि मरकतात्मकपाषाणे। तेन नारिकेलसमुद्गकसमानीतेन। अनुलिप्य परिधाप्य चन्द्रापीडमिति सम्बन्धः। आरचितो विहितः शेखरः शिरोभूषणं यस्य तम्।

(म) कुमारेति। अपहस्तितो दूरीकृतः अहङ्कारः सर्वेषामेव सौन्दर्यगर्वो यया सा चासौ कान्ता सर्वेषामेव वाञ्छनीया चेति सा तथोक्ता पेशलता सौन्दर्यं, कमिव जनं न प्रीतिपरवशं कारयति? अपि तु सर्वमेव जनं प्रीतिपरवशं कारयतीत्यर्थः। सुतरामस्मानपि प्रीतिपरवशाः कारितवतीति भावः। अतएवात्र सामान्यादप्रस्तुतात् प्रस्तुतस्य विशेषस्य प्रतीतेरप्रस्तुतप्रशंसालङ्कारः अर्थापत्त्या सङ्कीर्य्यते। भवद्गुणा इत्यन्ते

হারছড়াও, দেবযুবতিগণের স্তনমণ্ডলের সৌরভ বহন করিতেছিল, প্রভা বর্ষণ করিতেছিল ও অত্যন্ত নির্ম্মল ছিল

(ব) চন্দ্রাপীড় সেই হারছড়া দেখিয়া মনে মনে স্থির করিলেন যে—'এই হারছড়াই, এই চন্দ্রকিরণের সৌন্দর্য্যাপহারী ধবলতার কারণ'। তাহার পর গাত্রোত্থানপ্রভৃতি উপযুক্ত আচরণদ্বারা আগত মদলেখার অভ্যর্থনা করিলেন। (ভ) তখন মদলেখা সেই মরকতমণির প্রস্তরের উপরেই কিছুকাল উপবেশন করিয়া, নিজেই উঠিয়া, সেই চন্দনাঙ্গরাগে চন্দ্রাপীড়কে লিপ্ত করিয়া, সেই সূক্ষ্ম বস্ত্র দুইখানি তাঁহাকে পরিধান করাইয়া এবং সেই মালতীফুলের মালাগুলিদ্বারা তাঁহার মস্তক অলঙ্কৃত করিয়া, সেই হারছড়া হাতে লইয়া চন্দ্রাপীড়কে বলিল—(ম) "রাজকুমার! আপনার এই সৌন্দর্য, সকলেরই সৌন্দর্য্যের অহঙ্কার দূর করিয়াছে এবং সকলেরই বাঞ্ছনীয়, তাই কোন্ ব্যক্তিকে আনন্দিত না করায়? আপনার বিনয়ই, এই জাতীয় লোকদিগের উপস্থিত হইবার অবসর দিয়া থাকে। এই আকৃতিদ্বারা আপনি কাহার জীবনের অধীশ্বর হন নাই? বিনা কারণে বাৎসল্যপ্রকাশকারী এই চরিত্রদ্বারা আপনি

---

(१)...मुषः। (२) समुचितेन...। (३) जग्राह। (४) अपहस्तिताहङ्कारकान्ता।

स्वामी? अनेन चाकारणाविष्कृतवात्सल्येन चरितेन कस्य न बन्धुत्वमध्यारोपयसि? एषा च ते प्रकृतिमधुरा व्यवहृतिः कस्य न वयस्यतामुत्पादयति? कं वा न समाश्वासयन्त्यमी (१) स्वभावसुकुमारवृत्तयो भवद्गुणाः? (म)। त्वन्मूर्त्तिरेवात्रोपालम्भमर्हति, या प्रथमदर्शने एव विस्रम्भमुपजनयति (य)। इतरथा हि त्वद्विधे सकलभुवनप्रथितमहिम्नि प्रयुज्यमानं सर्वमिवानुचितमिवाभाति (र)। तथाहि, सम्भाषणमप्यधःकरणमिवापतति, आदरोऽपि प्रभुताभिमानमिवानुमापयति, स्तुतिरप्यात्मोत्सेकमिव सूचयति, उपचारोऽपि चपलता-

प्रत्येकवाक्य एवायमलङ्कार इत्थं भावयोन्नेयः। ते तव प्रश्रयो विनय एव, एवंविधानां प्रीतिपरवशानां जनानां, अवकाशमुपसर्पणावसरं ददाति। जीवितस्वामी जीवनाधीश्वरः। अकारणं आविष्कृतं वात्सल्यं स्नेहो येन तेन। प्रकृतिमधुरा स्वभावमनोहरा, व्यवहृतिर्व्यवहारः। वयस्यतां सखित्वम्। स्वभावेन सुकुमाराः कोमला वृत्तयो व्यवहारा येभ्यस्ते, अमी भवद्गुणाः।

(य) ननु मत्प्रार्थनाभावेऽपि कथमेवं जनाः प्रीतिपरवशतादिकमङ्गीकुर्वन्तीत्याह त्वदिति। अत्र प्रीतिपरवशतादौ। उपालम्भं तिरस्कारम्। विस्रम्भं सर्वविषयेषु विश्वासमुपजनयति, परमशान्तसुन्दरत्वादिति भावः। अत्र निन्दया स्तुतेर्गम्यतया व्याजस्तुतिरलङ्कारः।

(र) इतरथेति। इतरथा विस्रम्भजननाभावे हि, सकलेषु भुवनेषु प्रथितो महिमा यस्य तस्मिन् त्वद्विधे जने प्रयुज्यमानमनुष्ठीयमानं सर्वमेव सम्भाषणादिकं अनुचितमिव आभाति प्रकाशते सर्वैः प्रतीयत इत्यर्थः। विस्रम्भजननाभावेऽपि अतुलनीयमहिम्नो भवादृशस्य सम्भाषणादिकरणे धृष्टतोदयादिति भावः। एतेनात्मनोऽनु विस्रम्भजननेन सम्भाषणादौ नास्त्यनौचित्यमिति ध्वनितम्।

(ल) सर्वेषामेवानौचित्यं प्रदर्शयितुमाह तथाहीति। सम्भाषणं मधुरालापोऽपि अधःकरणं तिरस्कार इव आपतति उपस्थितो भवति, सम्भाषणस्य यथायथं कर्त्तुमशक्यत्वादिति भावः। अत्र क्रियोत्प्रेक्षालङ्कारः। आदरोऽपीति, समानेनैव समानस्यादरणीयत्वेन प्रभोस्तवादरणे आदर्त्तुरपि प्रभुताभिमानः परैरनुमातव्य एवेत्याशयः। क्रियोत्प्रेक्षा। स्तुतिः प्रशंसावादोऽपि आत्मनः स्तोतुः उत्सेकं प्रशंसाकरणे सामर्थ्यगर्व-

কাহারই বা বন্ধুতা জন্মান না? আপনার এই স্বভাবসুন্দর ব্যবহার, কাহার সহিত সখিত্ব উৎপাদন করে না? এবং স্বভাবতই কোমল আপনার এই গুণগুলি, কাহাকেই বা আশ্বস্ত করে না? (য) এ বিষয়ে আপনার এই আকৃতিই তিরস্কারের যোগ্য; যে আকৃতি প্রথম দর্শনেই বিশ্বাস জন্মাইয়া থাকে। (র) না হইলে, সমস্ত জগতে যাহার মহিমা বিখ্যাত হইয়াছে, এইরূপ আপনার ন্যায় লোকের প্রতি যাহা কিছু করা যায়, সে সমস্তই যেন অনুচিত বলিয়া বোধ হয়। (ল) দেখুন—সম্ভাষণ করাও যেন তিরস্কারের ন্যায় প্রতীতি হয়; আদর করাও যেন আধিপত্যের অহঙ্কার অনুমান করায়, প্রশংসা করাও যেন নিজের গর্ব্ব সূচনা করে;

(१) समाश्वासयन्त्यमी।

मिव प्रकाशयति, प्रीतिरप्यनात्मज्ञतामिव ज्ञापयति, विज्ञापनापि प्रागल्भ्यमिव जायते, सेवापि चापलमिव दृश्यते, दानमपि परिभव इति भवति (ल)। अपि च स्वयंगृहीतहृदयाय किं दीयते, जीवितेश्वराय (१) किं प्रतिपाद्यते, प्रथमकृतागमनमहोपकारस्य का ते प्रत्युपक्रिया, दर्शनदत्तजीवितफलस्य सफलमागमनं केन ते क्रियते (व)। प्रणयितास्थानेन व्यपदेशेन दर्शयति कादम्बरी,

सूचयतीव, महामहत: सर्वे अशक्तस्य प्रहत्तासम्भवादित्यभिप्राय:। क्रियोत्प्रेक्षा। उपचारोऽपि अभ्युत्थानाद्याचारोऽपि चपलतां प्रकाशयतीव, तादृशोपचारेऽप्यात्मनो योग्यत्वाभावादिति भाव:। क्रियोत्प्रेक्षा। प्रीति: सौहार्दमपि अनात्मज्ञतां आत्मन: परिमाणानभिज्ञतां ज्ञापयतीव, समानेष्वेव सौहार्दौचित्यादित्याशय:। क्रियोत्प्रेक्षा। विज्ञापनापि विषयविशेषनिवेदनमपि प्रागल्भ्यं वाचालतेव जायते, तत्रापि साहसादित्यभिप्राय: गुणोत्प्रेक्षा। सेवापीति, तत्राप्यनधिकारादिति भाव:। गुणोत्प्रेक्षा। दानमपि परिभव इव भवादृशपात्रस्य सम्पत्तेरवमाननेव भवति, प्रायश एव दानेन पात्रस्य दरिद्रतासूचनादित्याशय:। क्रियोत्प्रेक्षा।

(व) प्रियवचनान्तरमवतारयितुमाह अपि चेति। स्वयमात्मनैव गृहीतं हृदयं येन तस्मै भवते, किं दीयते दातुं शक्यते, अपि तु किमपि नेत्यर्थ:, देयस्य हृदयावधित्वात्तस्याप्यात्मनैव ग्रहणेन देयान्तराभावादिति भाव:। जीवितेश्वराय सद्यवहारादिना जीवनस्वामिने भवते, किं प्रतिपाद्यते प्रतिपाद्य स्वीकर्तुं शक्यते, अपि तु किमपि नेत्यर्थ:। प्रतिपाद्यवस्तूनामपि जीवनान्तत्वादिति पूर्ववद्भाव:। प्रथमं कृत आगमनमेव महोपकारो येन तस्य ते तव आगमनं केन करणेन सफलं क्रियते कर्तुं शक्यते अपि तु केनापि नेत्यर्थ:, सर्वफलापेक्षयैव जीवनफलमुत्तमं तत्तु त्वया दर्शनेनैव दत्तं सुतरां तत्तुल्यमस्माभि: किं फलं दातव्यमस्ति येन तवागमनं तत्तुल्यफलवत् स्यादिति भाव:। अत्र प्रत्येकवाक्य एवार्थापत्तिरलङ्कार:।

(श) तर्हि किमर्थमिदं तवोपहारानयनमित्याह प्रणयितामिति। कादम्बरी अनेन व्यपदेशेन उपहारप्रदानच्छलेन प्रणयितां त्वां प्रति सौहार्दं दर्शयति, न विभवं न तु धनसम्पदम्। हि यस्मात्, सज्जन-

গাত্রোত্থান প্রভৃতি আচরণও যেন চঞ্চলতা প্রকাশ করে; সৌহার্দ্দও যেন নিজের যোগ্যতার অনভিজ্ঞতা জ্ঞাপন করে; কোন বিষয় নিবেদন করাও যেন প্রগল্‌ভতা হইয়া পড়ে; পরিচর্য্যা করাও যেন চপলতার ন্যায় দেখা যায় এবং দান করাটাও যেন তিরস্কার করার ন্যায় হয়। (ব) আরও দেখুন—আপনি নিজেই আমাদের হৃদয় গ্রহণ করিয়াছেন, সুতরাং আপনাকে কি দিতে পারি? আপনি জীবনেরই অধীশ্বর হইয়াছেন, অতএব আপনাকে কি দিয়া তাহার অধীশ্বর করিব? আপনি প্রথম আগমন করিয়া যে গুরুতর উপকার করিয়াছেন; তাহার উপযুক্ত প্রত্যুপকার কি আছে? এবং আপনি দর্শনদ্বারা আমাদের জীবনের ফলদান করিয়াছেন, সুতরাং আপনার আগমনকে আমরা কি দিয়া সফল করিব? (শ) তবে কাদম্বরী, এই উপহারপ্রদানচ্ছলে আপনার সহিত সৌহার্দ্দ দেখাইতেছেন, কিন্তু ঐশ্বর্য্য নহে; কারণ—

(१) आयत्तजीवितार्थाय।

न विभवम्। अप्रतिपाद्या हि परस्वता सज्जनविभवानाम् (प्र)। आस्तां तावद्विभवः, भवादृशस्य दास्यमप्यङ्गीकुर्वाणा नाकार्य्यकारिणीति नियुज्यते, (१) दत्त्वात्मानमपि वञ्चिता न भवति, जीवनमप्यर्पयित्वा न पश्चात्तप्यते (ब)। प्रणयिजनप्रत्याख्यानपराङ्मुखो च दाक्षिण्यपरवती महत्ता सताम् (२) (स)। न च तादृशी भवति याचमानानां, यादृशी ददतां लज्जा, यत् सत्यं (३) असुना व्यतिकरेण कृतापराधमिव त्वय्यात्मानमवगच्छति कादम्बरी (ह)। तदयम-

---

विभवानां साधुलोकधनसम्पदां परस्वता परकीयता अप्रतिपाद्या दानादिना न सम्पादनीया, अपि तु परोपकारफलकत्वेन स्वतःसिद्धैवेति भावः। एतेन कादम्बर्य्या विभवे तवापि स्वत्वमस्तीति प्रणयितामात्रप्रदर्शनमेव प्रयोजनं दानस्येति द्योतितम्। अत्र शाब्दी परिसंख्या सामान्येन विशेषसमर्थनरूपोऽर्थान्तरन्यासश्चानयोरङ्गाङ्गिभावेन सङ्करः, तथा अप्रतिपाद्येति प्रधानस्य नञर्थस्य समासे गुणीभावाद्विधेयाविमर्शदोषः, स च न प्रतिपाद्येति पाठेनैव समाधेयः।

(ब) आस्तामिति। आस्तां दूरे इति शेषः। नियुज्यते व्यपदिश्यते कादम्बरीति शेषः। न पश्चात्तप्यते नानुतप्यते। अत्र चन्द्रापीडस्य प्राधान्यप्रतिपादनकार्य्यं प्रति बहुकारणोपन्यासात् समुच्चयोऽलङ्कारः।

(स) अथ कादम्बर्य्या दत्तोऽप्युपहारः कथं मया ग्राह्य इत्याह प्रणयीति। सतां महत्ता महिमा चित्तस्य सद्वृत्तिप्रसार इत्यर्थः, प्रणयिजनस्य तद्दत्तद्रव्यस्येति तात्पर्य्यं प्रत्याख्याने पराङ्मुखी, विशेषतश्च दाक्षिण्यपरवती औदार्य्याधीना। सुतरामवश्यमेवायमुपहारो भवता ग्राह्य इति भावः।

(ह) ननिममुपहारं ग्रहीतुं मे उदासीनत्वाल्लज्जा जायत इत्याह न चेति। याचमानानां पात्राणामित्यर्थः। तादृशी लज्जेति शेषः। यत्सत्यमित्येकमेवाव्ययं निश्चयार्थे। अतएव कादम्बरी, असुना व्यतिकरेण दानसम्बन्धेन आत्मानं त्वयि कृतापराधमिवावगच्छति, दातृत्वादिति भावः। अत्र वाक्यार्थहेतुकं काव्यलिङ्गमलङ्कारः, तथा यच्छब्दान्वितवाक्यस्य परपाठाद्वाक्यगतविधेयाविमर्शदोषः, स चास्य पूर्वपाठात् परिहरणीयः।

সজ্জনের ধনসম্পত্তিতে স্বভাবতই পরের স্বত্ব আছে, সুতরাং তাহাতে আর স্বত্ব জন্মাইতে হয় না। (ব) ধনসম্পত্তি দূরে থা'ক; কাদম্বরী ভবাদৃশ ব্যক্তির দাসত্ব স্বীকার করিলেও, কেহ তাহাকে অকার্য্যকারিণী বলিবে না, কিংবা আত্মসমর্পণ করিলেও বঞ্চিত হইবে না, অথবা জীবন সমর্পণ করিলেও অনুতাপ করিবে না। (স) সৎলোকের চিত্তবৃত্তি, প্রণয়ীজনকে প্রত্যাখ্যান করিতে অনিচ্ছুক, বিশেষতঃ উদারতার অধীন। (হ) দাতাদিগের যেরূপ লজ্জা হয়, যাচকদিগের সেরূপ লজ্জা হয় না; অতএব কাদম্বরী এই উপহারদান সম্পর্কে নিশ্চয়ই আপনার নিকট আত্মাকে অপরাধী বলিয়া মনে করিতেছেন। (হ) সমুদ্রমন্থনে সকল রত্নই উঠিয়াছিল, কেবল এই হারছড়াই অবশিষ্ট ছিল, তাই ইহার নাম 'শেষ'

---

(१) उच्यते। (२) महताम्। (३) अन्तु सत्यं।

मृतमथनसमुद्भूतानां सर्वरत्नानामेकः शेष इति (१) शेषनामा हारोऽमुनैव हेतुना बहुमतो भगवता अम्भसाम्पत्या गृहमुपगताय प्रचेतसे दत्तः, पाशभृतापि गन्धर्वराजाय, गन्धर्वराजेनापि कादम्बर्य्यै, तथापि त्वद्वपुरस्यानुरूपमाभरणस्येति विभावयन्त्या नभस्तलमिवोचितं सुधासूतेर्धाम (२) न धरेत्यवधार्य्यानुप्रेषितः (च)। यद्यपि निजगुण-(३) गणाभरणभूषिताङ्गयष्टयो भवादृशाः क्लेशहेतुमितरजनबहुमतमाभरणभारमङ्गेषु नारोपयन्ति, तथापि कादम्बरी-प्रीतिरत्र कारणम्। किं न कृतमुरसि शिलाशकलं कौस्तुभाभिधानं लक्ष्म्याः सहजमिति बहुमानमाविष्कुर्वता भगवता शार्ङ्गपाणिना? (क)। न च नारायणोऽत्रभवन्तमति-

---

(च) तदिति। शेषोऽवशिष्ट इति हेतोरेव शेषनामा। अमुनैव हेतुना शेषत्वेन, भगवता अम्भसाम्पत्या समुद्रेण बहुमतस्तदन्यासम्भवादुत्कर्षाश्चाहृतः। प्रचेतसे वरुणाय। पाशभृतापि वरुणेनापि। अत्र प्रचेतस इत्यभिधाय पाशभृतेत्यभिधानाद्भग्नप्रक्रमतादोषः, स च प्रचेतसेति पाठेनैव समाधेयः। तथापि कादम्बर्य्या। विभावयन्त्या चिन्तयन्त्या। तथा सुधासूतेश्चन्द्रस्य नभस्तलमाकाशमिव उचितं स्वच्छत्वादुच्चत्वाच्च स्वयोग्यं धाम आश्रयः, न धरा भूतलमित्यवधार्य्य मनसा निश्चित्य, चन्द्रापीड एवास्य हारस्य योग्य आश्रयो न तु कादम्बरीति भावः। अनुप्रेषितस्त्वत्सकाशं प्रेरितः। अत्र दृष्टान्तोऽलङ्कारः।

(क) यद्यपीति। निजा गुणगणा विद्याविनयादय एवाभरणानि तैर्भूषिता अङ्गयष्टयो येषां ते। क्लेशहेतुं भारवशात् दुःखकारणं, इतरैर्निर्गुणैर्जनैर्बहुमतमादृतं। अत्र हारधारणे। कुं पृथिवीं स्तुभ्नाति व्याप्नोतीति कुस्तुभः समुद्रः तत्र भव इति कौस्तुभः स एव अभिधानं नाम यस्य तत्तादृशं शिलाशकलं प्रस्तरखण्डं लक्ष्म्या निजप्रियतमाया इति भावः, सहजं एकसमुद्रजातत्वात् सहोदरमिति हेतोर्बहुमानमत्यादरं आविष्कुर्वता भगवता शार्ङ्गपाणिना नारायणेन, किं उरसि वक्षसि न कृतं नार्पितं, अपि तु कृतमेवेत्यर्थः। अतएव कादम्बर्य्याः प्रीतिवशात्त्वयाप्ययं हारो वक्षसि धारणीय एवेति भावः। अत्रापि दृष्टान्तोऽलङ्कारः, तेन च तवापि प्रियतमा कादम्बरीति वस्तु व्यज्यत इत्यलङ्कारेण वस्तुध्वनिः।

এবং এই কারণেই সমুদ্র ইহাকে অত্যন্ত আদর করিতেন এবং গৃহস্থিত বরুণকে দান করিয়াছিলেন; বরুণও গন্ধর্ব্বরাজকে দিয়াছিলেন, গন্ধর্ব্বরাজও কাদম্বরীকে দিয়াছেন, কাদম্বরীও 'আপনার শরীরই এই অলঙ্কারের উপযুক্ত' ইহা ভাবিয়া এবং 'চন্দ্রের পক্ষে আকাশই উপযুক্ত স্থান, কিন্তু ভূতল নহে' ইহা স্থির করিয়া এই হার আপনার নিকট পাঠাইয়া দিয়াছেন। (ক) নিজের গুণগ্রামরূপ অলঙ্কারেই সমস্ত অঙ্গ অলঙ্কৃত থাকে বলিয়া আপনার ন্যায় লোকেরা, ক্লেশের কারণ ও নির্গুণ লোকেরই আদৃত অলঙ্কারের ভার যদিও অঙ্গে ধারণ করেন না; তথাপি আপনার এই হার ধারণ করার বিষয়ে কাদম্বরীর সন্তোষই কারণ। কৌস্তুভনামক প্রস্তরখণ্ড, লক্ষ্মীর সহোদর বলিয়া বিশেষ আদর করিয়া ভগবান্ নারায়ণ

---

(१) एकशेष इति। (२) सुधासूतो धाम:। (३) गुण...।

रिच्यते, नापि कौस्तुभमणिरणुनापि गुणलवेन शेषमतिशेते, न चापि कादम्बरी-माकारानुकृतिकलयाप्यल्पीयस्या लक्ष्मीरनुगन्तुमलम् (ख)। अतोऽर्हतीयमिमं बहुमानं त्वत्तः। न चाभूमिरेषा प्रीतिप्रसरस्य। नियतञ्च भवता भग्नप्रणया (१) महाश्वेतामुपालम्भसहस्रैः खेदयित्वात्मानमुत्स्रक्ष्यति (ग)। अतएव महाश्वेता तरलिकामपीमं हारमादाय त्वत्सकाशं प्रेषितवती। तयापि कुमारस्य सन्दिष्ट-मेव "न खलु महाभागेन मनसापि कार्य्यः कादम्बर्य्याः प्रथमप्रणयप्रसरभङ्गः" इत्युक्त्वा च ताराचक्रमिव चामीकराचलस्य तटे तं तस्य वक्षःस्थले बबन्ध। (घ)

(ख) अथ ते सर्वे एवास्मदादिभ्यः प्रधानाः सुतरां तेषां चरितमप्यलौकिकमिति चेत्तत्र न चेति। अत्रभवन्तं माननीयं त्वां, अतिरिच्यते गुणैरतिशयितो भवति। अणुना अल्पेनापि गुणलवेन उत्कर्षलेशेन शेषं तदाख्यमिमं हारं न अतिशेते न अतिक्रामति। अल्पीयस्यापि आकारानुकृतिकलया आकृत्यनुकरण-लेशेन, कादम्बरीमनुगन्तुमनुसर्त्तुं नालं न समर्था, लक्ष्मीतः कादम्बरी सौन्दर्य्येण गरीयसीति तात्पर्य्यम्। सुतरां तत्प्रीत्या हारोऽयं भवता धारणीय एवेति भावः। अत्र लक्ष्मीतः कादम्बर्य्याः प्राधान्यप्रतिपादना-द्व्यतिरेकोऽलङ्कारः।

(ग) अत इति। इयं कादम्बरी, त्वत्तस्त्वत्सकाशात् इमं हारधारणरूपं बहुमानमादरं अर्हति प्राप्तुं योग्या भवति। एषा कादम्बरी, प्रीतिप्रसरस्य भवतः प्रणयातिरेकस्य अभूमिरपात्रं न, अपि तु पात्र-मेवेत्यर्थः। भग्नप्रणया हारप्रत्याख्यानेन खण्डितानुरोधा कादम्बरी, उपालम्भसहस्रैः 'ईदृशेन निष्ठुरहृदयेन सह त्वया मैत्री कृता, स एव चानीतः' ईदृशैस्तिरस्कारसमूहैः, महाश्वेतां खेदयित्वा विषाद्य नियतं निश्चितं आत्मानं उत्स्रक्ष्यति परित्यक्ष्यति।

(घ). अत इति। हारमादाय स्थितामिति स्थितपदाध्याहारान्नैकर्तृकलक्षणानिः। प्रेषितवतीति हारप्रहणे महाश्वेताया अपि महाननुरोध इति प्रत्येतव्यं, अन्यथा तरलिकामपहाय कादम्बर्य्याः काचित् परिचारिकैवाग-च्छेदिति भावः। तया महाश्वेतयापि, कुमारस्य भवतः समीपे। महाभागेन भवता। प्रथमप्रणयस्य

কি তাহা বক্ষে ধারণ করেন নাই? (খ) আপনা হইতে নারায়ণ প্রধান নহেন; কৌস্তুভমণিও, অল্পমাত্র গুণদ্বারাও এই হার হইতে উৎকৃষ্ট নহে এবং লক্ষ্মীদেবীও, আকৃতির অল্পমাত্র অনুকরণ দ্বারাও কাদম্বরীর অনুসরণ করিতে পারেন না। (গ) অতএব কাদম্বরী আপনার নিকট এই আদর পাইবার যোগ্য; কারণ—তিনি আপনার প্রণয়ের অপাত্র নহেন। বিশেষতঃ আপনি এই অনুরোধ রক্ষা না করিলে কাদম্বরী, বহুতর তিরস্কার দ্বারা মহাশ্বেতাকে দুঃখিত করিয়া নিশ্চয়ই প্রাণ পরিত্যাগ করিবেন। (ঘ) এই জন্যই মহাশ্বেতা, তরলিকাকেও এই হার লইয়া আপনার নিকট পাঠাইয়া দিয়াছেন, এবং তিনিও আপনার নিকট খবর দিয়াছেন যে—"মহাশয়! আপনি মনে মনেও যেন, কাদম্বরীর এই প্রথম প্রণয় ভঙ্গ না করেন"

---

(१) लग्नप्रणया।

चन्द्रापीड़स्तु विस्मयमानः प्रत्यवादीत्—"मदलेखे! किमुच्यते, (१) निपुणासि, जानासि ग्राहयितुम्, उत्तरावकाशमनपहरन्त्या क्रतं वचसि कौशलम् (ङ)। अयि मुग्धे! के वयमात्मनः? के वा वयं ग्रहणस्याग्रहणस्य (२) वा? गता खल्वियमस्तं कथा (च)। सौजन्यशालिनीभिर्भवतीभिरुपकरणीकृतोऽयं जनो यथेष्टमिष्टेष्वनिष्टेषु वा (३) व्यापारेषु विनियुज्यताम् (छ)। अतिदक्षिणायाः खलु देव्याः कादम्बर्य्या निर्दाक्षिण्यमपि (४) गुणा न कञ्चिन्न दासीकुर्वन्ति" इत्युक्त्वा च कादम्बरीसम्बद्धाभिरेव कथाभिः सुचिरं स्थित्वा विसर्जयाम्बभूव मदलेखाम्। (ज)

प्रसरभङ्गः प्राप्तिनिरासः। 'न कार्य्यो हारप्रत्याख्यानेन न विधेयः। चामीकराचलस्य सुमेरुपर्वतस्य त… कटं देशे ताराचक्रं नक्षत्रसमूहमिव। तस्य चन्द्रापीड़स्य। बबन्ध मदलेखेति सम्बन्धः। श्रौतोपमालङ्कारः।

(ङ) चन्द्रेति। विस्मयमानो मदलेखाया वाक्पटुतया विस्मयापन्नः। किमुच्यते किं मया वक्तव्यम्।

(च) अयीति। आत्मनः स्वस्य के? अपि तु केऽपि नेत्यर्थः। युष्माकं व्यवहारेण वयं युष्मदीया एव सञ्जाता इति भावः। के वेति युष्माकमिच्छयैव ग्रहणमग्रहणं वा मम सम्पद्येतेति भावः। उभयत्रापि वयमिति "अस्मदश्चेति बहुवचनम्। इयं कथा अस्माकं स्वाधीनताप्रस्तावः, अस्तंगता, युष्माकं व्यवहारेण सर्वथैव वशीकृतत्वादित्यभिप्रायः।

(छ) सौजन्येति। उपकरणीकृतः सेवकीकृतः, अतएवाह यथेष्टमित्यादि।

(ज) अतीति। अतिदक्षिणाया अत्युदारायाः, देव्याः कादम्बर्य्या गुणाः सौजन्य-सौन्दर्यादयः, निर्दाक्षिण्यमपि औदार्य्यविहीनमपि कञ्चिज्जनं न दासीकुर्वन्ति इति न, अपि तु सर्वमेव दासीकुर्वन्तीत्यर्थः। अतएव ममोपकरणीकरणे किमपि नाश्चर्यमिति भावः। विसर्जयाम्बभूव चन्द्रापीड़ इति सम्बन्धः।

এই কথা বলিয়া মদলেখা, সুমেরুর শৃঙ্গে নক্ষত্রসমূহের ন্যায় চন্দ্রাপীড়ের বক্ষঃস্থলে সেই হারছড়া পরাইয়া দিল।

(ঙ) চন্দ্রাপীড় কিন্তু মদলেখার বাক্‌পটুতায় বিস্ময়াপন্ন হইয়া প্রত্যুত্তর করিলেন—"মদলেখে! আমার বলিবার কি আছে? তুমি চতুরা, কি ভাবে গ্রহণ করাইতে হয়, তাহাও জান এবং আমার উত্তর দিবার অবকাশপর্য্যন্ত না দিয়া বিশেষ বাক্‌পটুতা প্রকাশ করিয়াছ। (চ) হে মুগ্ধে! আমি নিজের কে? কিংবা গ্রহণ করিতে বা গ্রহণ না করিতেই বা কে? আমার স্বাধীনতার কথা অস্তমিত হইয়াছে। (ছ) কারণ—তোমরা অত্যন্ত সৌজন্য-শালিনী, তাই আমাকে একেবারে দাস করিয়া ফেলিয়াছ; অতএব ইষ্টই হউক বা অনিষ্টই হউক, যে কোন কার্য্যে এই ব্যক্তিকে ইচ্ছানুসারে নিযুক্ত করিতে পার। (জ) অত্যন্ত উদার-প্রকৃতি কাদম্বরীদেবীর গুণগ্রাম, ঔদার্য্যবিহীন ব্যক্তিকেও যে বশীভূত করে না—ইহা

---

(१) उच्यते। (२) ग्रहणायग्रहणस्य। (३) अनभीष्टेषु वा। (४) निर्दाक्षिण्या अपि।

अनतिदूरं गतायाञ्च तस्यां क्रीड़ापर्वतकगतं (१) उदयगिरिगतमिव चन्द्रमसं चन्दनदुकूलहारधवलं चन्द्रापीड़ं द्रष्टुं समुत्सारित-(२) वेत्र-च्छत्र-चामर-चिह्ना-निषिद्धाशेषपरिजनानुगमना (३) तमालिकाद्वितीया चित्ररथसुता पुनरपि तदेव सौधशिखरमारुरोह (झ)। तत्रस्था च पुनस्तथैव विविध-विलास-तरङ्गितैर्विकारि-विलोकितैः (४) जहारास्य मनः (ञ)। तथाहि मुहुर्नितम्बबिम्बन्यस्तवामहस्त-पल्लवा प्रावृतांशुकानुसार-(५) प्रसारित-दक्षिणकरा निश्चलतारका लिखितेव, (ट)

(झ) अनतीति। तस्यां मदलेखायां। उदयगिरिगतं चन्द्रमसमिव चन्दनेन मदलेखाकृत-चन्दनाङ्गरागेण दुकूलाभ्यां तत्परिधापिताभ्यां सूक्ष्मवसनाभ्यां हारेण च ग्रीवाद्येन धवलं, अन्यत्र तु चन्दन-दुकूलहारवद्धवलम्। समुत्सारितानि दूरीकृतानि वेत्रच्छत्रचामराण्येव चिह्नानि यया सा, वेत्रयष्टिधारिणीं प्रतीहारीं छत्रधारिणीं चामरधारिणीञ्च परिचारिकामागन्तुं निषिध्येत्यर्थः, निषिद्धं अशेषाणां सर्वेषां परिजनानां अनुगमनं यया सा, तथा तमालिकेव द्वितीया यस्याः सा, चित्ररथसुता कादम्बरी। अत्र श्रौतोपमालङ्कारः।

(ञ) तत्रस्थेति। तथैव पूर्व्ववदेव। विविधा ये विलासा भ्रूभङ्गीचापादयस्तैस्तरङ्गितानि चञ्चलीकृतानि तैः, विकारीणि विकारजनकानि च तानि विलोकितानि दृष्टिपाताश्चेति तैः। अस्य चन्द्रापीडस्य।

(ट) विविधविलासानेव प्रदर्शयति तथाहीति। नितम्बबिम्बे न्यस्तं स्थापितं वामहस्तपल्लवं यया सा, प्रावृतस्य परिहितस्य अंशुकस्य वसनस्य अनुसारेण वायुनापहृतस्यानुसरणेनेत्यर्थः प्रसारितौ दक्षिणकरौ यया सा, तथा निश्चले तारके कनीनिकाद्वयं यस्याः सा, लिखिता चित्रितेव सती कादम्बरी, विलोकयन्ती तावदवतस्थे इति वक्ष्यमाणेनान्वयः। उत्तरवाक्येष्वेवमन्वयो बोध्यः। अत्र क्रियोत्प्रेक्षालङ्कारः।

বলা যায় না" এই কথা বলিয়া চন্দ্রাপীড়, কাদম্বরীসম্বন্ধীয় কথোপকথনে বহু সময় থাকিয়া মদলেখাকে বিদায় দিলেন।

(ঝ) মদলেখা কিছু দূর চলিয়া গেলে, কাদম্বরী প্রতীহারী, ছত্রধারিণী ও চামরধারিণী পরিচারিকাদিগকে পরিত্যাগ করিয়া, অন্যান্য সকল পরিজনদিগকেও সঙ্গে আসিতে নিষেধ করিয়া, কেবল তমালিকার সহিত যাইয়া, উদয়পর্ব্বতস্থিত চন্দ্রের ন্যায় ক্রীড়াপর্ব্বতস্থিত এবং চন্দন, সূক্ষ্মবসন ও হার ধারণ করায় ধবলবর্ণ চন্দ্রাপীড়কে দেখিবার নিমিত্ত, পুনরায় সেই অট্টালিকার উপরে আরোহণ করিলেন। (ঞ) সেখানে থাকিয়া পুনরায় সেই ভাবেই, নানাবিধ বিলাস-বশতঃ চঞ্চল ও বিকারজনক দৃষ্টিপাতদ্বারা চন্দ্রাপীড়ের মন হরণ করিতে লাগিলেন। (ট) নিতম্ব-মণ্ডলে বামহস্ত বিন্যস্ত করিয়া এবং বায়ুতে পরিধানের বস্ত্র উড়াইয়া নিলে তদনুসারে দক্ষিণ হস্ত প্রসারণ করিয়া ও নয়নের তারা দুইটি নিশ্চল রাখিয়া চিত্রিতের ন্যায় থাকিয়া বার বার দেখিতে লাগিলেন। (ঠ) কখনও হাই তুলিতে আরম্ভ করিবার সময়ে মুখের উপরে

(१) क्रीड़ापर्व्वतगतं। (२) उत्सारित...। (३)...परिजना। (४)...तरङ्गितैर्विलोकितैः।
(५) अंसमावृत...।

मुहुर्जृम्भिकारम्भदत्तोत्तानकरतलतया तद्गोत्रस्खलनभिया निरुद्धवदनेव, (ठ) मुहुरंशुकपल्लव-ताड़ित-निश्वासामोद-(१) लुब्ध-मधुकर-मुखरतया प्रस्तुताह्वानेव, (ड) मुहुरनिल-गलितांशुक-सम्भ्रम-(२) द्विगुणीकृत-भुजयुगल-प्रावृत-पयोधरतया दत्तालिङ्गनसंज्ञेव, (ढ) मुहुः केशपाशाकृष्ट-कुसुम-पूरिताञ्जलि-समाघ्राण-लीलया कृतनमस्कारेव, (ण) मुहुरुभय-तर्जनी-भ्रमित-मुक्ताप्रालम्बतया (३) निवेदित-

(ठ) मुहुरिति। जृम्भिकाया गात्रभङ्गस्य आरम्भे दत्तं व्यात्तमुखोपरि स्थापितं उत्तानं करतलं यया तस्या भावस्तया हेतुना, तस्य चन्द्रापीड़स्य यद्गोत्रस्खलनं भ्रान्त्या नामोच्चारणं तद्भियेव निरुद्धवदना पिहितमुखी। हेतूत्प्रेक्षा।

(ड) मुहुरिति। अंशुकपल्लवेन वसनाञ्चलेन ताड़िताः निश्वासस्य आमोदेन सौरभेण लुब्धा ये मधुकरा भ्रमरास्तैर्मुखरतया शब्दायमानतया, प्रस्तुतमारब्धं आह्वानं यया सेव। आह्वानप्रस्तावोत्प्रेक्षणात् क्रियोत्प्रेक्षा।

(ढ) मुहुरिति। अनिलेन वायुना गलिते स्तनमण्डलात् पतिते अंशुके उत्तरीयवसने सम्भ्रमेण त्वरया द्विगुणीकृतं उपर्य्यधोभावेन वक्षसि स्थापितं यद्भुजयुगलं तेन प्रावृतौ आच्छादितौ पयोधरौ स्तनौ यया तस्या भावस्तया हेतुना, दत्ता आलिङ्गनाय संज्ञा सङ्केतो यया सेव, भुजयुगलेन आलिङ्गनप्रकारकरणादिति भावः। क्रियोत्प्रेक्षा।

(ण) मुहुरिति। केशपाशादाकृष्टैरानीतैः कुसुमैः पूरितस्य अञ्जलेः समाघ्राणस्य लीलया विलासेन कृतनमस्कारेव, प्रायेण करकपालसंयोगादिति भावः। क्रियोत्प्रेक्षा।

(त) मुहुरिति। उभयतर्जनीभ्यां भ्रमितं मुक्ताप्रालम्बं मौक्तिकहारो यया तस्या भावस्तया हेतुना, निवेदितो हृदयस्य उत्कलिकोद्गमः समागमोत्कण्ठोत्पत्तिर्यया सेव, हारभ्रमणेन उत्कण्ठया हृदयभ्रमणस्य सूचनादिति भावः। "प्रालम्बमृजुलम्बि स्या" दित्यमरः। क्रियोत्प्रेक्षा।

উত্তানভাবে করতল সংস্থাপন করায়, ভ্রমবশতঃ চন্দ্রাপীড়ের নামোচ্চারণ হইবার ভয়েই যেন মুখমণ্ডল আবৃত করিয়া, বারংবার চন্দ্রাপীড়ের প্রতি দৃষ্টিপাত করিতে লাগিলেন। (ড) কখনও নিশ্বাসের সৌরভলোভে আগত ভ্রমরগণ বস্ত্রাঞ্চলদ্বারা বিতাড়িত হওয়ায় রব করিতেছিল বলিয়া, কাদম্বরী যেন চন্দ্রাপীড়কে আহ্বান করিতে আরম্ভ করিয়া, বারংবার দৃষ্টিপাত করিতে লাগিলেন। (ঢ) কখনও বায়ুবেগে উত্তরীয় বসন পতিত হইলে, তাড়াতাড়ি ভুজযুগল দ্বিগুণ করিয়া তাহাদ্বারা স্তনযুগল আবৃত করায়, আলিঙ্গনের জন্য সঙ্কেত জানাইয়াই যেন বার বার চন্দ্রাপীড়ের প্রতি দৃষ্টিপাত করিতে লাগিলেন। (ণ) কখনও কেশকলাপ হইতে কুসুমসমূহ আনয়নপূর্ব্বক তাহা দ্বারা অঞ্জলি পূর্ণ করিয়া তাহার আঘ্রাণ করার ছলে নমস্কার করিতে থাকিয়াই যেন বার বার চন্দ্রাপীড়কে দেখিতে লাগিলেন। (ত) কখনও দুইটি তর্জ্জনী অঙ্গুলীদ্বারা মুক্তার হার ভ্রমণ করাইতে থাকায়, মনের উৎকণ্ঠা জানাইয়াই যেন বারংবার চন্দ্রাপীড়ের প্রতি দৃষ্টিপাত

(१)...निःश्वासामोद...। (२)...अंशुकसंवरणसम्भ्रम...। (३) प्रलम्बतया।

हृदयोत्कलिकोद्गमेव, (त) मुहुरुपहारकुसुमस्खलन-विधुत-करतलतया कथित कुसुमायुधशरप्रहारवेदनेव, (थ) मुहुर्गलित-रशना-निगड़-(१) नियमित-(२) चरणतया संयम्यार्पितेव मन्मथेन, (द) मुहुश्चलितोरुविधुतदुकूला क्षिति-तलदोलायमानांशुकैकदेशाच्छादितकुचा, चकित-परिवर्त्तन-त्रुट्यत्त्रिवलीलता, अंसस्रस्त-(३) चिकुरकलाप-सङ्कलनाकुल-करकमला, कटाक्ष-क्षेप-धवलीकृत-कर्णोत्पलं विलक्ष-(४) स्मित-सुधाधूलि-धूसरितकपोलं साचीकृत्य, (५) वदन-

(थ) मुहुरिति। उपहारकुसुमेषु विकीर्णपुष्पेषु स्खलनेन विधुतं कम्पितं करतलं यया तस्या भावस्तया हेतुना, कथिता सूचिता कुसुमायुधशरप्रहारस्य वेदना यया सेव। क्रियोत्प्रेक्षा।

(द) मुहुरिति। गलिता कटिदेशात् पतिता रशना काञ्चीदामैव निगड़ः शृङ्खला तया नियमितौ बद्धौ चरणौ यस्यास्तस्या भावस्तया हेतुना, मन्मथेन संयम्य बद्धा चन्द्रापीड़ाय अर्पितेव। क्रियोत्प्रेक्षा।

(ध) मुहुरिति। चलिताभ्यां कम्पिताभ्यां ऊरुभ्यां विधुतं दुकूलं गलितप्रायवसनं यया सा। क्षितितले दोलायमानेन अंशुकैकदेशेन वस्त्राञ्चलेन पुनरुत्थापितेनेत्यर्थः आच्छादितौ कुचौ यया सा। चकितं ससम्भ्रमं यत् परिवर्त्तनं तेन त्रुट्यन्ती चर्म्मप्रसारणान्नश्यन्ती त्रिवलीलता यस्याः सा। अंसयोः स्कन्धयोः स्रस्तौ विगलितो यश्चिकुरकलापः केशपाशस्तस्य सङ्कलने पुनरेकत्र करणे आकुलं व्यग्रं करकमलं यस्याः सा। कटाक्षक्षेपेण तस्य प्रभयेत्यर्थः धवलीकृतं कर्णोत्पलं यस्मिन् कर्म्मणि तद्यथा तथा। अत्र धवलीकरणा-सम्बन्धेऽपि तत्सम्बन्धोक्तेरतिशयोक्तिरलङ्कारः। विलक्षेण लज्जया युक्तं यत् स्मितं मन्दहास्यमेव सुधाधूलिर्धवलत्व-साम्यात् चूर्णपरागः विलक्षस्मितं सुधाधूलिरिवेति वा तया धूसरितौ धूसरवर्णीकृतौ कपोलौ यस्मिन् कर्म्मणि तद्यथा तथा। अत्रोपमारूपकयोः सन्देहसङ्करः पूर्व्ववदतिशयोक्तिश्चानयोः पुनरङ्गाङ्गिभावेन सङ्करः। तथा अनेका विविधाः या रसभङ्गयः अनुरागेण रचनाविशेषास्ताभिर्भङ्गुरं वक्रं यथा स्यात्तथा, वदनं साचीकृत्य वक्रं

করিতে লাগিলেন। (থ) কখনও বিক্ষিপ্ত কুসুমসমূহের উপরে পতননিবন্ধন করকমল কম্পিত করিতে থাকায়, মদন-শর-প্রহারের বেদনা প্রকাশ করিয়াই যেন বারংবার চন্দ্রাপীড়কে দেখিতে লাগিলেন। (দ) কখনও কটিদেশ হইতে নিপতিত চন্দ্রহাররূপ শৃঙ্খলে চরণযুগল বদ্ধ হওয়ায়, কামদেবকর্ত্তৃক বন্ধনপূর্ব্বক প্রদত্ত হইয়াই যেন বার বার দৃষ্টিপাত করিতে লাগিলেন। (ধ) কখনও, পতিতপ্রায় পরিধানের বস্ত্র, কম্পিত উরুযুগল দ্বারা ধারণ করিয়া, কখনও ভূতললুণ্ঠিত বস্ত্রাঞ্চল তুলিয়া তাহা দ্বারা স্তনযুগল আবৃত করিয়া, কখনও তাড়াতাড়ি ফিরিয়া দাঁড়াইলে পেটের উপরের থরগুলিকে লুপ্ত করিয়া, কখনও স্কন্ধের উপরে আলুলায়িত কেশ-গুলিকে একত্র করিবার জন্য হস্ত প্রসারণ করিয়া, কখনও মুখমণ্ডল বক্র করিয়া, অনুরাগবশতঃ নানাবিধ ভঙ্গীতে বক্রভাবে চন্দ্রাপীড়কে দেখিতে লাগিলেন; তখন কটাক্ষের আলোকে তাঁহার

(१)...निविड़...। (२)...पतितं...। (३) समस्त...।
(४) विलक्ष्य, विलक्ष्यमाण...। (५) साचीकृतवदनं...।

मनेकरस भङ्गि-भङ्गुरं विलोकयन्ती, तावदवतस्थे यावदुपसंहृतालोको दिवसो बभूव। (ध)

अथ हृदयस्थितकमलिनीरागेणेव रज्यमाने राजीवजीवितेश्वरे सकल-लोक-चक्रवाल-चक्रवर्त्तिनि (१) भगवति पूष्णि, (न) क्रमेण च दिनपरिलम्बनरोष-रक्ताभिः कामिनीदृष्टिभिरिव संक्रमितशोणिम्नि व्योम्नि, (प) संहृतशोचिषि जाते जरठ-हारीत-हरित-हये हरितवाजिनि, (फ) रवि-(२) विरह-मीलित-

---

विधाय चन्द्रापीडं विलोकयन्ती सती तावदवतस्थे, यावत् उपसंहृतः रविणा सङ्कोचित आलोको यस्य तादृशो दिवसो बभूव।

(न) अथेति। राजीवानां पद्मानां जीवितेश्वरे प्रकाशेनेवोज्जीवनात् जीवननियन्तरि, सकललोकचक्र-वालस्य समस्तभुवनमण्डलस्य चक्रवर्त्तिनि सार्वभौमे अधीश्वरे, भगवति पूष्णि सूर्य्ये आत्मनो हृदयस्थितो यः कमलिनीरागः पद्मिनीं प्रत्यनुरागः स एव रागो रक्तिमा तेन रज्यमाने आरक्तीक्रियमाण इव सति। अत्र स्त्रीपुंलिङ्गाभ्यां कमलिनीसूर्य्ययोर्नायिकानायकव्यवहारसमारोपात् समासोक्तिः, अनुरागरक्तिम्नोर्भेदेऽपि श्लेषेणा-भेदाध्यवसायादतिशयोक्तिः, क्रियोत्प्रेक्षा चेत्येतासामङ्गाङ्गिभावेन सङ्करश्छेकानुप्रासेन पुनः संसृज्यते।

(प) क्रमेणेति। किञ्च व्योम्नि आकाशे, दिनस्य परिलम्बने परिणामे यो रोषो दत्तसङ्केतस्यापि नायकस्यानागमनात् कोपस्तेन रक्ताभिर्लोहिताभिः कामिनीनां दृष्टिभिर्नयनैः, संक्रमित आसञ्जितः शोणिमा लौहित्यं यस्मिन् तस्मिन्निव सति। अत्रापि शोणिम्नः संक्रमणोत्प्रेक्षणात् क्रियोत्प्रेक्षा।

(फ) संहृतेति। जरठः परिणतो वृद्धो यो हारीतः पक्षिविशेषस्तद्वत् हरिताः पालाशवर्णा हया अश्वा यस्य तस्मिन्, हरितवाजिनि हरिदश्वे सूर्य्ये, संहृतानि सङ्कोचितानि शोचींषि प्रभा येन तस्मिन् सति। अत्र लुप्तोपमाछेकानुप्रासयोरेकाश्रयानुप्रवेशरूपः सङ्करः, तथा जरठेत्यादिपदयोरर्थगतपुनरुक्ततादोषः, किञ्च जरठेत्यादि-विशेषणस्य मुख्यानुपकारित्वादपुष्टार्थतादोषश्च, तेन जरठेत्यादिविशेषणत्यागेनैव तयोः समाधानं विधेयम्।

কর্ণোৎপলকে ধবলবর্ণ করিয়াছিল এবং লজ্জাযুক্ত ঈষৎ হাস্যরূপ চূর্ণরেণু তাঁহার গণ্ডযুগলকে ধূসরবর্ণ করিয়াছিল—এই অবস্থায় কাদম্বরী তত কাল সেখানে অবস্থান করিলেন, যত কাল দিনের আলোক রহিল।

(ন) তাহার পর, পদ্মগণের জীবিতেশ্বর ও সমগ্র ভুবনমণ্ডলের সম্রাট্ ভগবান্ সূর্য্যদেব পদ্মিনীর প্রতি মনের অনুরাগেই যেন আরক্তবর্ণ হইয়া উঠিলেন। (প) ক্রমে, দিবাবসানে সঙ্কেতকারী নায়কের অনুপস্থিতিনিবন্ধন ক্রোধে আরক্তবর্ণ কামিনীগণের দৃষ্টিই যেন আকাশে রক্তিমা সঞ্চারিত করিল। (ফ) বৃদ্ধ হারিল পক্ষীর ন্যায় হরিতবর্ণ অশ্ব-সমন্বিত সূর্য্য,

---

(१) सकलचक्रवाकचक्रवालहृदयचक्रवर्त्तिनि। (२) हरितवाजि...।

सरोज-संहतिषु हरितायमानेषु कमलवनेषु, (ब) श्वेतायमानेषु कुसुदषण्डेषु (१) लोहितायमानेषु दिङ्मुखेषु (२) नीलायमाने शर्वरीमुखे, (भ) शनैः शनैश्च पुनर्दिनश्री-समागमाशाभिरिवानुरागिणीभिः सहैव दीधितिभिरदर्शनतामुपगते भगवति गभस्तिमालिनि, (म) तत्कालविजृम्भितेन च कादम्बरीहृदयराग-सागरेणेव (३) आपूरिते सन्ध्यारागेण जीवलोके, (य) कुसुमायुधानल-दह्यमान-हृदय-(४) सहस्रधूम इव जनितमानिनीनयनवारिणि (५) विस्तीर्य्यमाणे तरुण-

(ब) रवीति। रविविरहेण मीलिता मुद्रिता सरोजसंहतिः पद्मसमूहो येषां तेषु तथोक्तेषु, कमलवनेषु हरितायमानेषु पद्मसुद्रणादेव हरिद्वर्णायमानेषु सत्सु।

(भ) श्वेतेति। कुसुदानां षण्डेषु समूहेषु, श्वेतायमानेषु सत्सु, प्रकाशादिति भावः। दिङ्मुखेषु लोहितायमानेषु सत्सु, सन्ध्यारागादित्याशयः। शर्वरीमुखे प्रदोषे नीलायमाने सति, अन्धकारागमादित्यभिप्रायः।

(म) शनैरिति। किञ्च, भगवति गभस्तिमालिनि सूर्य्ये, पुनरपि दिनश्रियः समागमाशाभिः सम्मिलना-काङ्क्षाभिरिव अनुरागिणीभिरासक्तिमतीभिर्लोहिताभिश्च दीधितिभिः किरणैः सहैव अदर्शनतां दर्शनायोग्यता-मुपगते सति। अत्र लिङ्गेन रविदिनश्रियोर्नायकनायिकाव्यवहारसमारोपात् समासोक्तिः पूर्णोपमा चानयोरङ्गा-ङ्गिभावेन सङ्करः।

(य) तदिति। किञ्च, तस्मिन् काले विजृम्भितेन उद्वेलितेन, कादम्बर्य्या हृदयस्य रागसागरेणेव चन्द्रापीडं प्रत्यनुरागसमुद्रेणेव सन्ध्यारागेण, जीवलोके आपूरिते सति। अत्र निरङ्गकेवलरूपकश्रौतोपमयो-रेकाश्रयानुप्रवेशरूपः सङ्करः।

(र) कुसुमेति। कुसुमायुधो मदन एवानलस्तेन दह्यमानं यत् हृदयसहस्रं विरहिजनमनःसमूहस्तस्य धूमो बाष्प इव, जनितानि पतिविच्छेदादुत्पादितानि मानिनीनां नयनवारीणि अश्रूणि येन तस्मिन्, तथा तरुणतमाल-स्येव नवीनतमालतरोरिव त्विट् प्रभा यस्य तस्मिन्, तिमिरे अन्धकारे, विस्तीर्य्यमाणे सति। अत्र निरङ्गकेवल-रूपकमाल्युत्प्रेक्षयोरङ्गाङ्गिभावेन सङ्करः, स पुनर्लुप्तोपमया संसृज्यते। विस्तीर्य्यमाणे इति कर्म्मकर्त्तरि प्रयोगः।

কিরণজাল সঙ্কুচিত করিলেন। (ব) সূর্য্যের বিরহে পদ্মসমূহ মুদ্রিত হইলে পদ্মবন হরিতবর্ণ হইয়া উঠিল। (ভ) কুমুদবন শ্বেতবর্ণ হইতে লাগিল, দিঙ্মণ্ডল রক্তবর্ণ হইল, এবং প্রদোষ-কাল কৃষ্ণবর্ণ ধারণ করিল। (ম) ভগবান্ সূর্য্যদেব, পুনরায় দিনলক্ষ্মীর সহিত সম্মেলনের আশার ন্যায় রাগসমন্বিত কিরণজালের সহিত ধীরে ধীরে অদৃশ্য হইয়া গেলেন। (য) কাদম্বরীর মনের অনুরাগসাগরের ন্যায় সেই সময়ে বৃদ্ধিপ্রাপ্ত সন্ধ্যারাগে জগৎ-সংসার পরিপূর্ণ করিল। (র) কামানলে দহ্যমান বিরহীদিগের মনের ধূমের ন্যায় এবং নূতন তমাল-বৃক্ষতুল্য-প্রভাসম্পন্ন অন্ধকার, মানিনীগণের অশ্রুজল জন্মাইয়া বিস্তার পাইতে লাগিল।

(१) तत्कालनिनर्त्तिषोपात्तभुजसहस्रविस्तारितसर्वपुरस्कृतगजचर्म्मणेव।
(२) निजसुहृदस्तमूर्त्तिसमालोकनाशया प्रहर्षसन्दर्शितस्मितेष्विवोन्मुखेषु धवलायमानेषु।
(३)...रागरससागरेणेव। (४)...चक्रवाकहृदय...। (५)...नयनासारवारिणि।

तमालत्विषि तिमिरे, (र) दिक्करि-करावकीर्ण-(१) शीकरासार इव श्वेतायमानतारागणे गगने, (ल) जातायामदर्शनक्षमायां वेलायां सौधशिखरादवततार कादम्बरी, क्रीड़ापर्वतकनितम्बाच्च चन्द्रापीड़: (व)। ततोऽचिरादिव (२) गृहीतपाद: प्रसाद्यमान इव कुमुदिनीभि:, (श) कलुषमुखी: कुपिता इव प्रसादयन्नाशा:, (ष) प्रबोधाशङ्कयेव परिहरन् सुप्ता: कमलिनी:, (स) लाञ्छनच्छलेन निशामिव हृदयेन समुद्वहन्, (ह) रोहिणीचरणताड़नलग्न-

---

(ल) दिगिति। गगने, दिक्करिभिर्दिग्हस्तिभि: करै: शुण्डाभिरवकीर्णो विक्षिप्त: शीकरासारो जलबिन्दुधारा यस्मिन् तस्मिन्निव, श्वेतायमानस्तारागणो यत्र तादृशे सति, शीकरासारतारागणयो: साद्दृश्यादिति भाव:। अत्र शीकरासारविषयोत्प्रेक्षणात् क्रियोत्प्रेक्षालङ्कार:।

(व) जातायामिति। किञ्च, अदर्शनक्षमायां परस्परदर्शनायोग्यायां, वेलायां समये।

(श) तत इति। तत: कुमुदिनीभि:, गृहीतो धृत: पाद: किरणश्चरणश्च यस्य स: प्रसाद्यमान: प्रसन्नीक्रियमाण इव सन् सुधासूतिश्चन्द्र: अचिरादिव उदगादिति परेणान्वय:। अत्र लिङ्गेन कार्य्येण च कुमुदिनीषु मानिनीव्यवहारसमारोपात् श्लेषगर्भा समासोक्ति: क्रियोत्प्रेक्षा चानयोरेकाश्रयानुप्रवेशरूप: सङ्कर:।

(ष) कलुषेति। कलुषमुखीरन्धकाराच्छन्नाद्यभागा: क्रोधेन मलिनवदनाश्च कुपिता इव आशा दिश: प्रसादयन् किरणैर्धवलीकुर्वन् शान्तयंश्च। अत्रापि पूर्व्ववदलङ्कार:।

(स) प्रबोधेति। प्रबोधाशङ्कयेव, जागरणातङ्केनेव, सुप्ता मुद्रिता निद्रिताश्च कमलिनी: पद्मिनी: भार्य्यान्तराणि च परिहरन् परित्यजन्। अत्र लिङ्गेन कार्य्येण च चन्द्रे शठव्यवहारसमारोपात् श्लेषगर्भा समासोक्ति: क्रियोत्प्रेक्षा चानयोरपि पूर्व्ववत् सङ्कर:।

(ह) लाञ्छनेति। लाञ्छनच्छलेन कलङ्कव्याजेन हृदयेन निशामुद्वहन्निव। अत्र सापह्नवा क्रियोत्प्रेक्षालङ्कार:।

(ল) আকাশে শ্বেতবর্ণ নক্ষত্র প্রকাশ পাইলে বোধ হইতে লাগিল যেন, দিগ্‌হস্তিগণ শুণ্ডদ্বারা জলবিন্দু বিক্ষিপ্ত করিতেছে। (ব) এবং অন্ধকার উপস্থিত হওয়ায় পরস্পর দর্শন করিবার অযোগ্য সময় উপস্থিত হইল, এমন সময়ে কাদম্বরী অট্টালিকার উপর হইতে অবতরণ করিলেন, চন্দ্রাপীড়ও ক্রীড়াপর্ব্বতের শৃঙ্গ হইতে নামিলেন। (শ) তাহার পর অচিরকালমধ্যেই নয়নানন্দকারী ভগবান্ চন্দ্র উদয় পাইলেন, তখন কুমুদিনীগণ যেন তাঁহার পাদ ধারণ করিয়া তাঁহাকে প্রসন্ন করিতে লাগিল; (ষ) তিনি, কুপিতের ন্যায় মলিনমুখ দিঙ্মণ্ডলকে প্রসন্ন করিলেন; (স) জাগিবার আশঙ্কায়ই যেন সুপ্ত পদ্মিনীগণকে পরিত্যাগ করিলেন; (হ) কলঙ্কচ্ছলে রাত্রিকেই যেন বক্ষে ধারণ করিলেন। (ক্ষ) রোহিণীদেবীর চরণপ্রহারের সময় তাহা হইতে সংলগ্ন আলতার রসের ন্যায় উদয়কালের রক্তিমা ধারণ করিলেন।

---

(१)...वकीर्ण...। (२) नचिरादिव।

मलक्तकरसमिवोदयरागं दधानः, (च) तिमिरनीलाम्बरां दिवमभिसारिकामिवोपसर्पन्, (क) अतिवल्लभतया विकिरन्निव सौभाग्यम्, (ख) उदगाद्भगवानीक्षणोत्सवः सुधासूतिः (ग) उच्छ्रिते च (१) कुसुमायुधाधिराज्यैकातपत्रे कुमुदिनीवधूवरे विभावरीविलासदन्तपत्रे श्वेतभानौ धवलितदिशि, (घ) दन्तिदन्तादिवोत्कीर्णे भुवने, (ङ) चन्द्रापीडश्चन्द्रातपनिरन्तरतयैव कुमुद-

---

(च) रोहिणीति। रोहिण्याः स्वभार्याया अरुणताडनेन लग्नं अलक्तकरसमिव उदयरागं उदयकालीनरक्तिमानं दधानो धारयन्। अत्र क्रियोत्प्रेक्षालङ्कारः।

(क) तिमिरेति। अभिसारिकां प्रागुक्तलक्षणां नायिकामिव, तिमिरेण नीलं अम्बरं आकाशं दृग्गोचर आकाशैकदेश इत्यर्थः यत्र तां, अन्यत्र तु तिमिरवन्नीलं अम्बरं वसनं यस्यास्ताम्, दिवमाकाशं उपसर्पन् अभिगच्छन्। अत्र पूर्णोपमालङ्कारः।

(ख) अतीति। अतिवल्लभतया लोकानामतीवप्रियतया सौभाग्यं तेषु प्रीतिं विकिरन् विक्षिपन्निव। अत्र क्रियोत्प्रेक्षालङ्कारः।

(ग) उदगादिति। ईक्षणोत्सवो नयनानन्दहेतुरित्यर्थः। सुधायाः सूतिरुत्पत्तिर्यस्मात् स सुधासूतिश्चन्द्र उदगात्। अत्र कारणस्य सुधासूतेः कार्य्येणेक्षणोत्सवेन सहाभेदेनाभिधानात् हेतुर्नामालङ्कारः।

(घ) उच्छ्रित इति। किञ्च, कुसुमायुधस्य मदनस्य यदधिराज्यं साम्राज्यं तस्य एकातपत्रे अद्वितीयच्छत्रस्वरूपे। अत्र चन्द्रे आतपत्रत्वारोपः शाब्दः कुसुमायुधे राजत्वारोपस्त्वार्थ इत्येकदेशविवर्त्तिरूपकमलङ्कारः। कुमुदिन्येव वधूस्तस्या वरे भर्त्तरि। अत्र परम्परितरूपकम्। विभावर्य्या रात्रेर्विलासाय दन्तपत्रं गजदन्तनिर्म्मितकर्णालङ्कारस्वरूपे तस्मिन्। अत्रापि चन्द्रे दन्तपत्रत्वारोपः शाब्दः विभावर्य्यां विलासिस्त्रीत्वारोपस्त्वार्थ इत्येकदेशविवर्त्तिरूपकम्। धवलिताः किरणैः शुभ्रीकृता दिशो येन तस्मिन्। श्वेतभानौ चन्द्रे उच्छ्रिते उपर्य्युत्थिते सति।

(ङ) दन्तीति। भुवने दन्तिदन्तादुत्कीर्णे तं निष्कृष्य निर्म्मित इव सति, चन्द्रकिरणैः शुभ्रत्वादिति भावः। अत्र क्रियोत्प्रेक्षालङ्कारः।

(च) चन्द्रेति। चन्द्रस्य आतपेन आलोकेन निरन्तरतया घनतया सर्व्वतो व्याप्ततयेत्यर्थः, कुमुद-

---

(ক) অভিসারিকা নায়িকার ন্যায় অন্ধকারে নীলবর্ণ একদেশবিশিষ্ট (পক্ষে অন্ধকারের ন্যায় নীলাম্বরধারিণী) আকাশের দিকে যাইতে লাগিলেন। (খ) এবং লোকের অত্যন্ত-প্রিয় বলিয়া তাহাদের প্রতি যেন প্রীতি বর্ষণ করিতে লাগিলেন। (ঘ) ক্রমে, কন্দর্প সাম্রাজ্যের অদ্বিতীয় ছত্র, কুমুদিনী-বধূর বর এবং রজনী-নায়িকার বিলাসের গজদন্তাভরণ চন্দ্র, সকল দিক্ ধবলবর্ণ করিয়া উপরে উঠিলেন। (ঙ) ভুবনমণ্ডল যেন গজদন্ত হইতে খোদিত করিয়া বাহির করা হইল। (চ) এমন সময়ে চন্দ্রাপীড়, গৃহের নিকটবর্ত্তী কুমুদপূর্ণ সরোবরের

---

(१) उदिते च।

मध्या इव (१) गृहकुमुदिन्याः कल्लोल-धौत-सुधा-धवल-सोपाने तनु-तरङ्ग-ताल-वृन्त-वात-वाहिनि सुप्तहंसमिथुने, विरह-वाचाल-(२) चक्रवाकयुगले तीरे, (च) कुमुददलावलीभिः पर्य्यन्त-लिखित-दन्तपत्र-लतम्, (३) अवदातसिन्दुवारदामो-पहारम्, हरिचन्दनरसैः प्रक्षालितम्, कादम्बरीपरिजनोपदिष्टम्, मुक्ताशिलापट्टं चन्द्रशीतलमधिशिश्ये (छ)। तत्रस्थस्य चास्यागत्याकथयत् केयूरकः "देवी कादम्बरी देवं द्रष्टुमागता" इति। (ज)

मध्या इव विरलकुमुदाया अपि कुमुदैः पूर्णाया इव, चन्द्रातपस्यैव कुमुदवद्दृश्यमानत्वादिति भावः। अत्र क्रियोत्प्रेक्षालङ्कारः। गृहकुमुदिन्या भवनसन्निहितकुमुदयुक्तसरोवरस्य तीरे इति सम्बन्धः। कल्लोलैस्सा एव महत्तरङ्गैः धौतानि क्षालितानि सुधाधवलानि चूर्णलेपनेन शुभ्राणि सोपानानि यस्मिन् तत्र। तनवः क्षुद्रास्तरङ्गा एव तालवृन्तानि व्यजनानि तेषां वातं वायुं वहति दधातीति तस्मिन्। अत्र निरङ्गकेवल-रूपकमलङ्कारः। सुप्तानि हंसमिथुनानि यस्मिन् तत्र। तथा विरहेण रात्रिवशात् परस्परविच्छेदेन वाचा-लानि विषादवशेन मुखराणि चक्रवाकानां युगलानि दम्पतयो यत्र तस्मिन् तीरे।

(छ) कुमुदेति। कुमुददलावलीभिः कैरवपत्रश्रेणीभिः पर्य्यन्तेषु प्रान्तदेशेषु लिखिता विहिता दन्त-पत्रलता लतावल्लम्बमानपत्रावल्यो यस्य तम्। अवदातानि शुभ्राणि सिन्दुवारकुसुमानां दामानि माल्यानि उपहाराः शोभार्थं समन्ताद्विन्यस्तानि यस्य तम्। हरिचन्दनरसैः श्वेतचन्दनजलैः। चन्द्रवत् शीतलमिति चन्द्रशीतलं। मुक्तावत् शिलापट्टो मुक्ताशिलापट्टं शुभ्रमेकं शिलाखण्डमित्यर्थः। अधिशिश्ये आश्रित्य शयितवान्।

(ज) तत्रेति। अस्य चन्द्रापीडस्य समीपे। देवं भवन्तम्।

তীরে একখানি প্রস্তরখণ্ডের উপরে শয়ন করিলেন; সেই সরোবরটির উপরে চন্দ্রের নিবিড় আলোক পড়িয়াছিল বলিয়া, সেটিকে যেন কুমুদপূর্ণ বলিয়া বোধ হইতে লাগিল; বৃহৎ বৃহৎ তরঙ্গে তাহার শুভ্রবর্ণ সোপানগুলি প্রক্ষালিত হইতেছিল; ক্ষুদ্রতরঙ্গরূপ তালবৃন্তের * বায়ু বহিত হইতেছিল; সেই তীরদেশে বহুতর হংসদম্পতি শয়ন করিয়াছিল এবং পরস্পর বিরহ-বশতঃ চক্রবাকদম্পতিগণ রব করিতেছিল। (ছ) আর সেই প্রস্তরখণ্ডের চারিদিকে শ্বেতোৎপল-দল সমূহদ্বারা পত্রলতা নির্ম্মাণ করিয়া দিয়াছিল, শ্বেতবর্ণ নিসিন্দাফুলের মালাদ্বারা চারিদিক্ বেষ্টন করিয়া রাখিয়াছিল, শ্বেতচন্দনের জলে প্রক্ষালন করিয়াছিল এবং সেই প্রস্তরখণ্ডখানি মুক্তার ন্যায় শুভ্রবর্ণ ও চন্দ্রের ন্যায় শীতল ছিল; আর কাদম্বরীর পরিজনেরা তাঁহাকে তাহার উপরে শয়ন করিতে বলিয়া দিয়াছিল। (জ) চন্দ্রাপীড় সেই শিলাখণ্ডের উপরে অবস্থান করিতে লাগিলেন—এমন সময় কেয়ূরক আসিয়া তাঁহার নিকট বলিল—"কাদম্বরীদেবী আপনার সহিত সাক্ষাৎ করিতে আসিয়াছেন।"

---

(१) कुमुद इव। (२)...वाचालित...। (३)...लतादन्तुरं।

अथ चन्द्रापीड़: ससम्भ्रममुत्थायागच्छन्तीम्, अल्पसखीजनपरिवृताम्, अपनीताशेषराजचिह्नाम्, इतरामिव, एकावलीमात्राभरणाम्, अच्छाच्छेन चन्दनरसेन धवलीकृततनुलताम्, एककर्णावसक्तदन्तपत्राम्, इन्दुकलाकलिकाकोमलं कर्णपूरीकृतं कुमुददलं दधानाम्, ज्योत्स्नाशुचिनी कल्पद्रुमदुकूले बिभ्रतीम्, तत्कालरमणीयेन वेशेन साक्षादिव चन्द्रोदयदेवताम्, मदलेखया दत्तहस्तावलम्बां कादम्बरीमपश्यत् (ঝ)। आगत्य च सा प्रीतिपेशलतां दर्शयन्ती प्राकृतेव (१) परिजनोचिते भूतले समुत्पाविशत्। चन्द्रापीड़ोऽपि "कुमार! अध्यास्यतां शिलातलमिव" इत्यसकृदनुबध्यमानोऽपि मदलेखया भूमिमेवाभजत। (ञ)

(ঝ) अथेति। अपनीतानि परित्यक्तानि अशेषाणि समस्तानि राजचिह्नानि तदुपयुक्तवेशाभरणच्छत्रचामरादीनि यया ताम्, अतएव इतरामपरामिव दृश्यमानाम्, एकावलीमात्रं एकश्रेणीकहारमात्रमाभरणं यस्यास्ताम्। अच्छाच्छेन अत्यन्तनिर्म्मलेन। एकस्मिन् कर्णे अवसक्तं लग्नं दन्तपत्रं गजदन्तनिर्म्मितपत्राकारालङ्कारो यस्यास्ताम्। इन्दुकलेव कलिका अथवा इन्दुकला च कलिका च तद्वत् कोमलम्। ज्योत्स्नावत् शुचिनी शुभ्रवर्णे, कल्पद्रुमदुकूले कल्पवृक्षजातसूक्ष्मवसनयुगलं। साक्षात् प्रत्यक्षगतां चन्द्रोदयदेवतामिव। अत्र जात्युत्प्रेक्षालङ्कारः। दत्तो हस्तावलम्बः स्वहस्तावलम्बनं यस्यास्ताम्।

(ञ) आगत्येति। प्रीतिपेशलतां स्नेहस्य सौन्दर्य्यं। प्राकृतेव साधारणस्त्रीव। अध्यास्यतां अधिष्ठीयताम् अनुबध्यमानोऽपि अनुरुध्यमानोऽपि। भूमिमेवाभजत भूतल एवोपाविशदित्यर्थः।

(ঝ) তাহার পর চন্দ্রাপীড় তাড়াতাড়ি গাত্রোত্থান করিয়া কাদম্বরীকে আসিতে দেখিলেন; তখন কাদম্বরী অল্প কয়েকটি সখীজনে পরিবেষ্টিত হইয়া আসিতেছিলেন এবং সকল রাজচিহ্নই পরিত্যাগ করিয়াছিলেন, তাহাতে তাঁহাকে অন্যের ন্যায় দেখা যাইতেছিল; একছড়া একলহরী হারমাত্র অলঙ্কার ছিল, অত্যন্ত নির্ম্মল চন্দনে কোমল দেহখানি শুভ্রবর্ণ করিয়াছিল, এক কর্ণে একটি দন্তপত্র সংলগ্ন ছিল, অপর কর্ণে চন্দ্রকলা ও পুষ্পকলিকার ন্যায় কোমল একটি কুমুদ-দল ধারণ করিতেছিলেন, জ্যোৎস্নার ন্যায় শুভ্রবর্ণ কল্পবৃক্ষ হইতে উৎপন্ন দু'খানি সূক্ষ্মবস্ত্র পরিধান করিয়াছিলেন; সেই সময়ের সেই মনোহর বেশে কাদম্বরীকে সাক্ষাৎ চন্দ্রোদয়ের দেবতার ন্যায় দেখা যাইতেছিল; আর তিনি মদলেখার হস্ত ধারণ করিয়া আসিতেছিলেন। (ঞ) কাদম্বরী আসিয়া স্নেহের সৌন্দর্য্য দেখাইয়া সাধারণ স্ত্রীলোকের ন্যায় ভূতলে উপবেশন করিলেন। "রাজকুমার! আপনি প্রস্তরখণ্ডের উপরেই উপবেশন করুন" মদলেখা এইরূপ বারংবার অনুরোধ করিলেও, চন্দ্রাপীড়ও ভূতলেই উপবেশন করিলেন।

---

(१) प्राकृते।

अथ (१) सर्वासु चासीनासु तासु मुहूर्त्तमिव स्थित्वा वक्तुमुपचक्रमे चन्द्रापीड़:—"देवि ! दृष्टिपातमात्रप्रीते (२) दासजने सम्भाषणादिकस्यापि प्रसादस्य नास्त्यवकाश:, किमुतैतावतोऽनुग्रहस्य। न खलु चिन्तयन्नपि निपुणं तमात्मनो गुणलवमवलोकयामि, यस्यायमनुरूपोऽनुग्रहातिरेक: (ट)। अति-सरला तवेयमपगताभिमानमधुरा च सुजनता, यदभिनवसेवकजनेऽप्येवमनु-रुध्यति (ठ)। प्रायेण मामुपचारहार्य्यमदक्षिणां देवी मन्यते (ड) धन्य: खलु परिजनस्ते, यस्योपरि नियन्त्रणा स्यात् (ढ)। आज्ञासंविभागकरणोचिते

(ट) अथेति। दासजने मयीति तात्पर्य्यम्। प्रसादस्य अनुग्रहस्य। एतावत: सम्भाषणायागमन-पर्य्यन्तस्य। निपुणं सविशेषम्। गुणलवं गुणलेशम्।

(ठ) अतीति। तवेयं सुजनता सौजन्यं, अतिसरला कापट्यरहिता, अपगतो दूरीभूत: अभिमानो यस्या: सा आसौ अतएव मधुरा चेति सा। अनुरुध्यति अनुसरति प्रवर्त्तते सा सुजनतेत्यर्थ:। अवज्ञा-स्थानेऽपि प्रयुक्ताया: सुजनताया माधुर्य्यं स्यादेवेति भाव:।

(ड) प्रायेणेति। देवी भवती कादम्बरी, मां उपचारेण सम्भाषणादिबाह्यव्यवहारेण हार्य्यं वशी-कर्त्तुं योग्यं, अतएव अदक्षिणमनुदारप्रकृतिमगुणज्ञमिति यावत्। अन्यथैवमुपचाराय न यतेतेति भाव:। एतेनाहं दाक्षिण्यवशाद्युष्माकं गुणेनैव वशीभूतोऽस्मीति व्यज्यते।

(ढ) धन्य इति। नियन्त्रणा दुष्करकार्य्यभारार्पणेन यातना। तादृशनियन्त्रणाभावादहमधन्य इति भाव:।

(ण) आज्ञेति। आज्ञाया: संविभागकरणे सम्यग्विभज्यार्पणे उचिते योग्यस्तस्मिन्, भृत्यजने क इवादर: को बहुमान:, अपि तु कोऽपि नेत्यर्थ:। अतएव मम सम्भाषणायागमनस्य किमपि प्रयोजनं नासी-दिति भाव:।

(ট) তাহার পর তাহারা সকলেই উপবেশন করিলে চন্দ্রাপীড় বলিতে আরম্ভ করিলেন—"দেবি! কেবল দৃষ্টিপাত করিলেই যে ব্যক্তি সন্তুষ্ট হইয়া থাকে, সেই দাসের প্রতি সম্ভাষণ-প্রভৃতি অনুগ্রহেরও প্রয়োজন নাই; সুতরাং এত অনুগ্রহের কথা আর কি বলিব। আমি বিশেষ চিন্তা করিয়াও, নিজের সেরূপ গুণের লেশও দেখিতেছি না,—যাহার উপযুক্ত মনে করিয়া আপনি এইরূপ অত্যন্ত অনুগ্রহ করিয়াছেন। (ঠ) আপনার এই সৌজন্য অত্যন্ত সরল ও অভিমান নাই বলিয়া বড়ই মধুর; যেহেতু, নূতন সেবকের প্রতিও এইভাবে উপস্থিত হইয়াছে। (ড) সম্ভবতঃ আপনি আমাকে অনুদারস্বভাব ও বাহিরের ব্যবহারেই বশ করার যোগ্য বলিয়া মনে করেন। (ঢ) আপনার পরিজনবর্গ ই ধন্য, যাহাদের উপরে আপনার আজ্ঞাপ্রয়োগ হইয়া থাকে। (ণ) পৃথক্ পৃথক ভাবে আজ্ঞা করিবার যোগ্য ভৃত্য-

---

(१) क्वचित् 'अथ' इति नास्ति। (२) दृष्टिमात्रप्रीते।

भृत्यजने क इवादरः (ण)। परोपकारोपकरणं शरीरम्, तृण-लव-लघु च जीवितमप्यपि (१) त्वत्प्रतिपत्तिभिरुपायनीकर्त्तुमागतायास्ते (२) (त)। वयमेते शरीरमिदमेतज्जीवितमेतानीन्द्रियाणि, एतेषामन्यतरदारोपय परिग्रहेण गरीयस्त्वम्" इति। (थ)

अथैवंवादिनोऽस्य वचनमाक्षिप्य मदलेखा सस्मितमवादीत्—"कुमार! भवतु, अतियन्त्रणया खिद्यते खलु सखी कादम्बरी,(३) किमर्थमेवमुच्यते, सर्वमिदमन्तरेणापि वचनमनया परिगृहीतम्, किं पुनरमुनोपचारफलगुना वचसा सन्देह-

(त) परेति। आगताया अत्रोपस्थितायास्ते तव समीपे, त्वत्प्रतिपत्तिभिस्त्वां प्रति भक्तिभिः, परोपकारस्य उपकरणं साधनं इदं शरीरं, तथा तृणस्य लववत् कणवत् लघु इदं जीवितञ्च, उपायनीकर्त्तुं उपहारभावेन दातुं, अहमपत्रपे लज्जे, शरीरस्य स्वभावत एव यस्य कस्यापि परस्योपकारसाधनत्वेन त्वयि विशेषाभावात् जीवनस्य च तृणलवलघुत्वेन तुच्छतया तद्दानेन गौरवप्रदर्शनाभावादिति भावः।

(थ) वयमिति। एते वयं, इदं शरीरं, एतज्जीवितं, एतानि इन्द्रियाणि परिग्रहेण ग्रहणेन एतेषां मध्ये अन्यतरत् एकतममित्यर्थः गरीयस्त्वं महागौरवं भवतीति भावः। वयमिति "वाग्मदस्य" इति बहुवचनम्। अत्रान्यतरदिति दर्शनाद्बहूनामिकतमप्रत्ययेऽपि डतरप्रत्यय इति दुर्गमतम्।

(द) अथेति। अस्य चन्द्रापीड़स्य। आक्षिप्य बाधित्वा। अतियन्त्रणया अत्यन्तस्तुतिवादबाधया। खिद्यते आत्मनि तादृशगुणाभावेनोपहासप्रतीतेरिति भावः। इदं वचनमन्तरेणापि भवतोक्तं "वयमेते" इत्यादि वाक्यं विनापि, अनया कादम्बर्या सर्वं त्वदादिकं परिगृहीतमिति परिहसितं, अथ च पतित्वेन मनसा परिगृहीतमिति ध्वनितम्। अतएव उपचारे बहिर्व्यवहारे फलगुना असारेण निरर्थकेन, अमुना वयमित्यादिना वचसा किं पुनः सन्देहदोलामारोप्यते कादम्बरी संशयाकुला क्रियते। निर्दिष्टविषये पुनर्निर्बन्धेन संशयोदयस्य स्वाभाविकत्वादिति भावः।

জনের প্রতি আবার আদর কি? (ত) এই শরীর, স্বভাবতই পরের উপকারের জন্য, জীবনও তৃণবিন্দুর ন্যায় লঘু; সুতরাং আপনার প্রতি ভক্তিবশতঃ সেই শরীর ও সেই জীবন আপনাকে উপহার দিতে আমি লজ্জিত হইতেছি। (থ) এই আমি, এই শরীর, এই জীবন এবং এই ইন্দ্রিয় সকল—ইহার মধ্যে যে কোন একটিকে আপনি গ্রহণ করিয়া তাহাকে অত্যন্ত-গৌরবান্বিত করুন।"

(দ) চন্দ্রাপীড় এইরূপ বলিতেছিলেন, তখন তাঁহার বাক্যে বাধা দিয়া মদলেখা ঈষৎ হাস্য করিয়া বলিল—"রাজপুত্র! হউক, আপনার অত্যন্ত স্তুতিবাদের যন্ত্রণায় সখী কাদম্বরী গ্লানি ভোগ করিতেছেন; আপনি কেনই বা এরূপ বলিতেছেন; আপনার এই সকল বাক্য ব্যতীতও ইনি সমস্তই গ্রহণ করিয়াছেন; অতএব বাহিরের ব্যবহারের অনর্থক বাক্যে কেন আবার

(१) अत्र पे। (२) तत्प्रतिपत्तिभिरुपायनीकर्त्तुमागतास्मि। (३) सव्रीडा कादम्बरी।

दोलामारोप्यति" इति (द) स्थित्वा च कञ्चित् कालं कृतप्रस्तावा "कथं राजा तारापीड़:, कथं देवी विलासवती, कथमार्य्य: शुकनास:, कीदृशी चोज्जयिनी, कियत्यध्वनि सा च, कीदृग्भारतं वर्षम्, रमणीयो वा मर्त्त्यलोक:" इत्यशेषं पप्रच्छ (ध) एवंविधाभिश्चान्याभि: कथाभि: सुचिरं स्थित्वोत्थाय कादम्बरी केयूरकं चन्द्रापीड़-समीपशायिनं समादिश्य परिजनञ्च, शयनसौधशिखर-मारुरोह (न)। तत्र च सितदुकूलवितानतलास्तीर्णं शयनीयमलञ्चकार। चन्द्रापीड़ोऽपि तस्मिन्नेव शिलातले निरभिमानतामभिरूपतामतिगम्भीरताञ्च कादम्बर्य्या:, निष्कारणवत्सलताञ्च महाश्वेताया:, सुजनताञ्च मदलेखाया:, महानुभावताञ्च परिजनस्य, अतिसमृद्धिञ्च गन्धर्वराजलोकस्य, रम्यताञ्च किम्पुरुष-देशस्य मनसा भावयन् केयूरकेण संवाह्यमानचरण: क्षणादिव क्षणदां क्षपितवान्। (प)

(ध) स्थित्वेति। कृतप्रस्तावा जिज्ञासायां गृहीतावसरा मदलेखा। कथं कीदृश इत्यर्थ:। सा उज्जयिनी कियत्यध्वनि इत: कियद्दूर इत्यर्थ:।

(न) एवमिति। चन्द्रापीड़स्य समीपशायिनं समीपे शयितुमित्यर्थ:। परिजनञ्च सेवितुं समादिश्ये-त्यन्वय:। शयनसौधस्य शिखरं उपरितलम्।

(प) तत्रेति। सितं शुभ्रं यद्दुकूलस्य वितानं चौमवसनस्य चन्द्रातपस्तस्य तले अधोदेशे आस्तीर्णं पातितं शयनीयं शय्यां अलञ्चकार शयनेनेति शेष:। अभिरूपतां सौन्दर्य्यम्। अतिगम्भीरतां अत्यन्तदुर्बोध-स्वभावताम्। महानुभावतां उदारस्वभावताम्। क्षणदां रात्रिम्। क्षपितवान् अतिवाहितवान्।

ইহাকে সন্দেহদোলায় আরোহণ করাইতেছেন।" (ধ) তাহার পর কিছুকাল থাকিয়া জিজ্ঞাসা করিবার প্রস্তাব করিয়া মদলেখা এই সমস্ত জিজ্ঞাসা করিল—'মহারাজ তারাপীড় কেমন, মহারাণী বিলাসবতীই বা কেমন, মাননীয় শুকনাস কিরূপ, উজ্জয়িনী কি রকম, এখান হইতে উজ্জয়িনী কত দূরে, ভারতবর্ষটি কেমন এবং মর্ত্ত্যলোকই বা সুন্দর কি না। (ন) কাদম্বরী, এই রকম ও অন্যান্য অনেক রকম কথাবার্ত্তায় বহু সময় সেখানে থাকিয়া, উঠিয়া, কেয়ূরককে চন্দ্রাপীড়ের নিকটে শয়ন করিতে এবং পরিজনদিগকে তাঁহার পরিচর্য্যা করিতে আদেশ করিয়া, শয়নের অট্টালিকার উপরে যাইয়া আরোহণ করিলেন। (প) সেখানে শুভ্রবর্ণ পট্টবসননির্ম্মিত চন্দ্রাতপের নীচে একখানি শয্যা পাতিত ছিল, কাদম্বরী শয়ন করিয়া, সেখানিকে অলঙ্কৃত করিলেন। চন্দ্রাপীড়ও, কাদম্বরীর নিরহঙ্কারতা, সৌন্দর্য্য ও গাম্ভীর্য্য, মহাশ্বেতার অকারণবাৎসল্য, মদলেখার সৌজন্য, পরিজনবর্গের উদার স্বভাব, গন্ধর্ব্বরাজের অত্যন্ত সমৃদ্ধি এবং কিন্নরদেশের রমণীয়তা ভাবিতে লাগিলেন, এদিকে কেয়ূরক তাঁহার চরণ-

अथ क्रमेण कादम्बरीदर्शन-प्रजागरखिन्नः स्वप्तुमिव ताल-तमाल-तालो-कदली-कन्दलिनीं प्रविरल-कल्लोलानिल-शीतलां वेलावनराजिमवततार तारा-पतिः (फ)। अभ्यर्णविरहविधुरस्य च कामिनीजनस्य निश्वसितरिव (१) उष्णैर्म्लानिमनीयत चन्द्रिका (ब)। चन्द्रापीड़विलोकनारूढ़मदनेव कुमुददलो-दरनीतनिशा पङ्कजेषु निपपात लक्ष्मीः (भ)। क्षणदापगमे च स्मृत्वा कामिनी-कर्णोत्पल-प्रहाराणां (२) उत्कण्ठितेष्विव क्षामतां व्रजत्सु पाण्डुतनुषु वासगृह-

(फ) अथेति। कादम्बर्य्या दर्शनेन यः प्रजागरः कामोत्कण्ठया जागरणं तेन खिन्नः क्लान्तः, तारा-पतिश्चन्द्रः, स्वप्तुं निद्रातुमिव, तालतमालतालीकदलीनां कन्दलं समूहः अस्या अस्तीति ताम्, प्रविरलैरल्पैः कल्लोलानिलैः सागरस्य बृहत्तरङ्गवातैः शीतलां, वेलावनराजिं तीरस्थवनश्रेणीं अवततार अस्तोन्मुखो बभूवेत्यर्थः। अन्योऽपि जागरणक्लान्तो निद्रातुं निभृतशीतलदेशमवलम्बते। अत्र क्रियोत्प्रेक्षालङ्कारः।

(ब) अभ्यर्णेति। चन्द्रिका ज्योत्स्ना, अभ्यर्णेन दिनोपस्थितेर्निकटवर्त्तिना विरहेण प्रियविच्छेदेन विधुरस्य विह्वलस्य कामिनीजनस्य, उष्णैर्निश्वसितैर्म्लानिमनीयतेव। उष्णवायुना कोमलपल्लवदिति भावः। दिनागमात् ज्योत्स्नाया उज्ज्वलता विलुप्तेत्यर्थः। क्रियोत्प्रेक्षा।

(भ) चन्द्रेति। चन्द्रापीड़स्य विलोकनेन आरूढ़ उपस्थितो मदनो यस्यां सा तादृशीव, लक्ष्मीः शोभा कापि नायिका च, कुमुददलानां उदरेषु अभ्यन्तरेषु नीता अतिवाहिता निशा यया सा तादृशी सती, पङ्कजेषु पद्मेषु निपपात अधितष्ठौ। अन्यापि कामोत्तप्ता शैत्यसेवनाय कुमुदेषु कचित् पद्मेषु च निपतति। रात्रौ कुमुदानां विकासात्तेषु शोभासीत्, दिनागमे तु मुद्रिततया तानि विहाय विकसत्सु पङ्कजेषु गतेति भावः। क्रियोत्प्रेक्षा।

(म) क्षणदेति। किञ्च, रिरंसुना वल्लभेन समाकृष्यमाणे वसने कामिन्यो लज्जया कर्णोत्पलप्रहारेण प्रदीपान्निर्वापयन्तीति प्रसिद्धिः। सुतरां क्षणदापगमे रात्रिशेषे, पाण्डुतनुषु, क्रमेण दिवालोकप्रकाशादिरश्मिर्ति

যুগল সংবাহন করিতে লাগিল,—এই অবস্থায় চন্দ্রাপীড় সেই প্রস্তরখণ্ডের উপরে থাকিয়াই, ক্ষণকালের ন্যায় সেই রাত্রি অতিবাহিত করিলেন।

(ফ) তাহার পর চন্দ্র, কাদম্বরীর দর্শনে উৎকণ্ঠাবশতঃ জাগরণ করায় ক্লান্ত হইয়া নিদ্রা যাইবার জন্যই যেন, তাল, তমাল, তাড়িয়াৎ ও কদলীবৃক্ষে পরিপূর্ণ এবং অল্প অল্প তরঙ্গ-বায়ুতে শীতল সমুদ্রতীরস্থ বনশ্রেণীর ভিতর ক্রমে ক্রমে নামিতে লাগিলেন। (ব) আসন্ন বিরহে বিহ্বল কামিনীগণের উষ্ণ নিশ্বাসেই যেন জ্যোৎস্নাকে মলিন করিল। (ভ) চন্দ্রাপীড়কে দর্শন করায় কামসন্তপ্ত হইয়াই যেন শোভা, কুমুদপত্রের মধ্যে রাত্রি অতিবাহিত করিয়া, সেই সময়ে পদ্মের উপরে পতিত হইতে লাগিল। (ম) রাত্রিশেষে বাসগৃহের প্রদীপগুলি, কামিনীগণের কর্ণোৎপলের প্রহার স্মরণ করিয়া উৎকণ্ঠিত হইয়াই যেন পাণ্ডুশরীরে ক্ষীণ হইতে

(१) निःश्वसितैरिव। (२)...प्रहारान्।

प्रदीपेषु, (म) अनवरत-शर-क्षेप-खिन्नानङ्ग-निश्वास-(१) विभ्रमेषु वहत्सु तरुलता-(२) कुसुम-परिमलेषु प्रभातमातरिश्वसु, (य) मन्दरगिरिलतागृह-गमनानि च (३) भियेव भजन्तीष्वरुणोदयोपप्लविनीषु तारकासु, (र) क्रमेण च समुन्नति चक्रवाक-(४) हृदय-निवास-लग्नानुरागमिवालोहितं (५) मण्डलमुद्वहति सवितरि, (ल) चन्द्रापीड़ः शिलातलादुत्थाय प्रक्षालितमुखकमलः कृत-सन्ध्यानमस्क्रितिर्गृहीतताम्बूलः (६) "केयूरक! विलोकय देवी कादम्बरी प्रबुद्धा न वा, क्वा तिष्ठति" इत्यवोचत्। (व)

भावः, वासगृहप्रदीपेषु कामिनीनां कर्णोत्पलैर्ये प्रहारास्तेषां स्मृत्वा तान् विचिन्तेरित्यर्थः। "स्मृत्यर्थकर्म्मणी"ति कर्म्मणि षष्ठी। उत्कण्ठितेष्विव पुनस्तदर्थं सञ्जातोत्कण्ठेष्विव, श्यामतां शोषत्वं व्रजत्सु सत्सु। अत्र क्रियोत्प्रेक्षालङ्कारः।

(य) अनेति। अनवरतशरक्षेपेण रात्रौ कामुकान् प्रति अजस्रवाणवर्षेण खिन्नस्य परिश्रान्तस्य अनङ्गस्य मदनस्य ये निश्वासास्तेषां विभ्रमा इव विभ्रमा विलासा येषां तेषु, तरुलताकुसुमानां परिमला विमर्द्दगन्धा येषु तेषु, प्रभातमातरिश्वसु प्रत्यूषवायुषु वहत्सु सत्सु। अत्र लुप्तोपमालङ्कारः।

(र) मन्दरेति। किञ्च, अरुणोदयेन उपप्लवस्तेजोविनाशाद्विपदासामस्तीति तासु, तारकासु नक्षत्रेषु, भियेव सूर्य्योदयभयेनेव, मन्दरगिरेर्लतागृहेषु गमनानि भजन्तीषु कुर्वतीसु सतीषु। अत्र हेतूत्प्रेक्षालङ्कारः। मन्दरस्य प्राच्यां स्थितत्वान्नक्षत्राणाञ्च प्रायेण तस्यामेवास्तगमनादियमुक्तिरिति बोध्यम्।

(ल) क्रमेणेति। किञ्च, चक्रवाकानां रात्रिविरहिणां चक्रवाकदम्पतीनां हृदये निवासेन स्वोदये तेषां पुनःसंयोगस्य भावित्वेन रात्रौ सततमेव तैः स्वस्य भावितत्वादिति भावः, लग्नस्तेषां हृदयादेव संसक्तः अनुरागः सूर्य्यं प्रति स्नेह एवानुरागो लौहित्यं यत्र तदिव, आलोहितं आरक्तवर्णं मण्डलं उद्वहति धारयति सवितरि सूर्य्ये, क्रमेण समुद्गते सति। अत्र स्नेह-लौहित्ययोर्भेदेऽपि श्लेषेणाभेदाध्यवसायादतिशयोक्तिः क्रियोत्प्रेक्षा चानयोरेकाश्रयानुप्रवेशरूपः सङ्करः।

(व) चन्द्रेति। कृते सन्ध्यानमस्कृती सन्ध्यावन्दनाभीष्टदेवतानमस्कारौ येन सः। प्रबुद्धा जागरिता।

লাগিল। (য) রাত্রিতে কামুকগণের প্রতি অবিশ্রান্ত বাণ বর্ষণ করায় পরিশ্রান্ত কামদেবের নিশ্বাস-বায়ুর ন্যায় বিলাসসম্পন্ন এবং তরু-লতা-জাত পুষ্পের সৌরভবাহী প্রভাত বায়ু বহিত হইতে লাগিল। (র) অরুণোদয়ে বিপন্ন নক্ষত্রগণ, ভয়বশতই যেন মন্দরপর্ব্বতের লতাগৃহে প্রবেশ করিতে লাগিল। (ল) এবং চক্রবাকদম্পতিগণের হৃদয়ে নিবাসবশতঃ তাহা হইতে রাগ সংলগ্ন হওয়াই যেন আরক্তবর্ণ মণ্ডল ধারণ করিয়া সূর্য্যদেব, ক্রমে উদয় পাইলেন। (ব) এমন সময়ে চন্দ্রাপীড় সেই শিলার উপর হইতে উঠিয়া, মুখকমল প্রক্ষালন সন্ধ্যাবন্দন,

---

(१)...निःश्वास...। (२) लता...। (३)...गहनानि च।
(४) समुद्गतचक्रवाक ..। (५) लोहितं। (६) आवद्धशेखरो गृहीत...

गतप्रतिनिवृत्तेन च तेन "मन्दरप्रासादस्याधस्तादङ्गनसौध-वेदिकायां महाश्वेतया सहावतिष्ठते" इत्यावेदिते गन्धर्वराज-तनयामालोकयितुमाजगाम (श)। ददर्श च धवलभस्मकृतललाटिकाभिः (१) अक्षमालिका-(२) परिवर्त्तन-प्रचल-करतलाभिः पाशुपतव्रतचारिणीभिर्धातुरागारुणाम्बराभिश्च परिव्राजिकाभिः,(ष) परिणत-तालफल-वल्कल-लोहित-वस्त्राभिश्च रक्तपटव्रतवाहिनीभिः सित-वसन-निविड़-निबद्ध-स्तन-परिकराभिश्च श्वेतपटव्यजनाभिः (३) जटाजिन-मौञ्जी-वल्कलाषाढ़धारिणीभिर्वर्णिचिह्नाभिस्तापसीभिः, साक्षादिव मन्त्रदेवताभिः

(श) गतेति। आदौ गतः अनन्तरं प्रतिनिवृत्तः प्रति तेन तथोक्तेन, तेन केयूरकेण। मन्दरनामकः प्रासादो मन्दरप्रासादस्तस्य, अङ्गने चत्वरे या सौधवेदिका सुधाश्मचूर्णलिप्तबद्धभूमिस्तस्याम्।

(ष) ददर्शेति। चन्द्रापीड़ो महाश्वेतां कादम्बरीञ्च ददर्श चेत्यन्वयः। प्रथमं महाश्वेतां विशिंषयन्नाह धवलेति। धवलभस्मभिः कृता ललाटिका ललाटे क्षुद्रतिलकविशेषा याभिस्ताभिः। अक्षमालिकानां जप-मालानां परिवर्त्तने प्रचलानि चलितानि करतलानि यासां ताभिः। पाशुपतव्रतचारिणीभिः शैवव्रतानुष्ठायिनीभिः तथा धातुरागेण गैरिकरञ्जनेन अरुणानि रक्तवर्णानि अम्बराणि वसनानि यासां ताभिश्च, परिव्राजिकाभिः सन्न्यासिनीभिः, उपास्यमानामिति परेणान्वयः।

(स) परीति। किञ्च, परिणतं पक्वं यत्तालफलं तस्य वल्कलवत् लोहितं वस्त्रं यासां ताभिः। रक्तपटः शाक्यभिक्षुविशेषस्तस्य व्रतं नियमं वहन्ति धारयन्तीति ताभिः। सितवसनैः शुभ्रवस्त्रैर्निविड़ं दृढं निबद्धाः स्तनपरिकराः स्तनमण्डलानि याभिस्ताभिः। श्वेतपट एव व्यजनं यासां ताभिः। जटां, अजिनं कृष्ण-सारचर्म्म, मौञ्जीं मेखलां, वल्कलं, आषाढ़ं दण्डञ्च धारयन्तीति ताभिः। वर्णिनो ब्रह्मचारिणश्चिह्नं लक्षणं

ইষ্টদেবতা নমস্কার ও তাম্বূলচর্ব্বণ করিয়া বলিলেন—"কেয়ূরক! দেখ দেখি, কাদম্বরীদেবী জাগিয়াছেন কি না এবং কোথাই বা আছেন।"

(শ) কেয়ূরক যাইয়া পুনরায় ফিরিয়া আসিয়া জানাইল যে—"দেব! তিনি মন্দর-প্রাসাদের নীচে উঠানের রোয়াকের উপরে মহাশ্বেতার সহিত অবস্থান করিতেছেন।" তাহার পর চন্দ্রাপীড়, কাদম্বরীর সহিত সাক্ষাৎ করিবার জন্য সেখানে আসিলেন। (ষ) আসিয়া, মহাশ্বেতা ও কাদম্বরীকে দেখিতে পাইলেন; কতকগুলি পরিব্রাজিকা মহাশ্বেতার সন্তোষ-বিধান করিতেছিল; তাহারা শুভ্রবর্ণ ভস্মদ্বারা ললাটে তিলক করিয়াছিল, জপের মালা ফিরাইতে থাকায় তাহাদের করতল চলিতেছিল, তাহারা শৈবব্রত আচরণ করিতেছিল এবং তাহাদের পরিধানে গৈরিকরাগে রঞ্জিত রক্তবর্ণ বস্ত্র ছিল। (স) কতকগুলি তপস্বিনীও মহাশ্বেতার সেবা করিতেছিল; তাহারা পক্বতালফলের বল্কলের ন্যায় রক্তবর্ণ বস্ত্র পরিধান করিয়াছিল, শাক্যভিক্ষুর ব্রত আচরণ করিতেছিল, শুভ্রবর্ণ বস্ত্র দ্বারা দৃঢ়ভাবে স্তনমণ্ডল বন্ধন

(१) धवलभस्मललाटिकाभिः। (२) अक्षमाला···। (३)···व्यञ्जनाभिः।

पठन्तीभिर्भगवतस्त्र्यम्बकस्याम्बिकायाः कार्त्तिकेयस्य विष्टरश्रवसः (१) कृष्णस्य (२) आर्य्यावलोकितेश्वरस्यार्हतो विरिञ्चस्य (३) पुण्याः स्तुतीरुपास्यमानाम्, (ङ) अन्तःपुराभ्यर्हिताश्च सादरं नमस्कारसम्भाषणैरभ्युत्थानैरासन्नवेत्रासनदानैश्च दर्शनागत-गन्धर्वराजबान्धववृद्धाः (४) सम्मानयन्तीं महाश्वेताम्, (च) पृष्ठतश्च समुपविष्टेन किन्नरमिथुनेन मधुकरमधुराभ्यां वंशाभ्यां दत्ते तानि (५) कलगिरा गायन्त्या नारददुहित्रा पठ्यमाने च सर्वमङ्गलमहीयसि महाभारते दत्ताव-

---

भासु ताभिः। साक्षान्मन्त्रदेवताभिरेव स्थिताभिः। त्र्यम्बकस्य शिवस्य, अम्बिकाया दुर्गायाः, कार्त्तिकेयस्य, विष्टरश्रवसो नारायणस्य, कृष्णस्य वासुदेवस्य, आर्य्यावलोकितेश्वरस्य बौद्धस्य, अर्हतस्तीर्थंकरस्य, विरिञ्चस्य ब्रह्मणश्च, पुण्याः पवित्राः स्तुतीः स्तवान् पठन्तीभिस्तापसीभिश्च, उपास्यमानां सेव्यमानाम्। अत्र साक्षान्मन्त्रदेवताभिरिवेति उत्प्रेक्षालङ्कारः।

(ङ) अन्तरिति। किञ्च, अन्तःपुरेषु मध्ये या अभ्यर्हिताः पूजनीयास्ताः। आसन्ने समीपे वेत्रासनदानैः। दर्शनायागता या गन्धर्वराजस्य चित्ररथस्य बान्धववृद्धा ज्ञातिवृद्धा योषितः।

(च) पृष्ठत इति। किञ्च, पृष्ठतः कादम्बर्या एव पश्चाद्भागे। मधुकरमधुराभ्यां भ्रमररववत् सुश्राव्यस्वराभ्यां वंशाभ्यां वेणुभ्यां, तानि अविच्छिन्नस्वर-प्रवाहे, दत्ते गानस्वरमिश्रणार्थं विहिते "गाता यं यं स्वरं गायेत्तं वंशेन तानयेत्" इति भरतोक्तेः। कलगिरा मधुरवाक्यया। नारददुहित्रा भद्रानामिकया नारदस्य धर्मकन्यया, पाठ्यमाने व्याख्यायमाने उच्चार्यमाणे वा, सर्वेभ्यो मङ्गलेभ्यो मङ्गलजनकेभ्यो ग्रन्थेभ्यः महीयसि अतीवप्रधाने महाभारते यस्यां दत्तावधानामिति कादम्बरीमिति वक्ष्यमाणस्य विशेषणम्।

করিয়াছিল, শুভ্রবর্ণ বসনের ব্যঞ্জন ধারণ করিতেছিল; জটা, কৃষ্ণসারের চর্ম্ম, মুঞ্জমেখলা, বল্কল ও দণ্ড ধারণ করিতেছিল এবং তাহাদের সমস্তই ব্রহ্মচারীর লক্ষণ ছিল; আর তাহাদের মধ্যে কেহ ভগবান্ মহাদেবের, কেহ দুর্গার, কেহ কার্ত্তিকের, কেহ নারায়ণের, কেহ কৃষ্ণের, কেহ বৌদ্ধের, কেহ তীর্থঙ্করের (গুরুবিশেষের) এবং কেহ ব্রহ্মার স্তব পাঠ করিতেছিল এবং তাহাদিগকে সাক্ষাৎ মন্ত্রদেবতার ন্যায় দেখা যাইতেছিল। (ঙ) আবার গন্ধর্ব্বরাজ চিত্ররথের জ্ঞাতিবর্গের মধ্যে প্রাচীন এবং অন্তঃপুরের মধ্যে প্রধান এইরূপ কতকগুলি স্ত্রীলোক, সাক্ষাৎ করিবার জন্য আসিয়াছিলেন; মহাশ্বেতা তাঁহাদিগকে নমস্কার, সম্ভাষণ, গাত্রোত্থান ও নিকটে বেত্রাসন-প্রদান দ্বারা, সম্মানিত করিতেছিল। (চ) এদিকে দুইটি কিন্নর, কাদম্বরীর পিছনে বসিয়া ভ্রমরধ্বনির ন্যায় সুমধুর বংশীস্বরে তান দিতেছিল; আর নারদের ধর্ম্মকন্যা মধুরভাষিণী ভদ্রাদেবী গান করতঃ, সমস্ত মাঙ্গলিক গ্রন্থের মধ্যে উৎকৃষ্ট মহাভারত গ্রন্থ পাঠ করিতেছিলেন; কাদম্বরী একাগ্রচিত্তে তাহা শুনিতেছিলেন। (ছ) আর কোন পরিচারিকা,

---

(१) विश्ववस्य। (२) अर्जुनस्य, जिनस्य। (३) वैश्वदेवस्य मार्त्तण्डस्य विरिञ्चस्य।
(४) क्वचित् दर्शनागतेति पाठो नास्ति। (५) तानि।

धानाम् (च) पुरोधृते च मणिदर्पणे (१) ताम्बूलराग-(२) बहलकालिकान्धका-रिताभ्यन्तरं दशन-ज्योत्स्ना-सिक्तमुन्मृष्ट-(३) मधूच्छिष्ट-पट्ट-पाटलमधरं विलो-कयन्तीम्, (क) शैवालत्वष्णया कर्णपूर-शिरीष-प्रेषितोत्तान-विलोचनेन बहु-मण्डलं भ्रमता भवनकलहंसेन प्रभातशशिनेव क्रियमाण-गमन-प्रणाम-प्रदक्षिणां कादम्बरीञ्च (ख)। समुपसृत्य कृतनमस्कारस्तस्यामेव सुधावेदिकायां विन्यस्त-मासनं भेजे (ग) स्थित्वा च कञ्चित् कालं महाश्वेताया वदनं विलोक्य स्फुरितकपोलोदरं मन्दस्मितमकरोत् (घ)। असौ तु तावतैव विदिताभि-

---

(च) पुर इति। किञ्च, पुरोधृते कयापि परिचारिकया सम्मुखे रक्षिते। ताम्बूलरागेण बहला कृता या कालिका श्यामता तया अन्धकारितं सञ्जातान्धकारं मलिनीकृतमभ्यन्तरं यस्य तम्। दशनज्योत्स्नया दन्तकान्त्या सिक्तं धौतं। तथा उन्मृष्टौ घृष्टौ यौ मधूच्छिष्टपट्टः सिक्थकपिण्डं तद्वत् पाटलं श्वेतरक्तमधरं विलोकयन्तीं कादम्बरीम्। 'मधूच्छिष्टन्तु सिक्थकम्' इत्यमरः।

(ख) शैवलेति। शैवलतृष्णया शैवालस्लोभेन तद्भक्षणेच्छयेत्यर्थः कर्णपूरशिरीषे कादम्बर्याः कर्णाभरणीकृत-शिरीषपुष्पं प्रति प्रेषिते चालिते उत्ताने ऊर्द्धमुखे विलोचने चक्षुषी येन तेन, प्रभातशशिनेव बहु मण्डलं यस्मिन् कर्मणि तद्यथा तथा भ्रमता, भवनकलहंसेन, क्रियमाणानि गमनं समीपोपस्थितिः प्रणामो नमस्कारः प्रदक्षिणञ्च तानि यस्यास्ताम्। अत्र कर्णपूरशिरीषे शैवलभ्रमाद्भ्रान्तिमानुपमा चानयोः परस्परनिरपेक्षतया संसृष्टिः।

(ग)। समुपेति। समुपसृत्य कादम्बर्याः समीपं गत्वा। भेजे अध्यासामास चन्द्रापीड इति सम्बन्धः।

(घ) स्थित्वेति। स्फुरितं स्पन्दितं कपोलयोरुदरं मध्यभागो यस्मिन् तत्।

সম্মুখে একখানি মণিময় দর্পণ ধরিয়া রাখিয়াছিল; কাদম্বরী তাহাতে নিজের ওষ্ঠযুগল দেখিতেছিলেন; তাম্বূল চর্ব্বণ করায় শ্যামতা জন্মিয়া সেই ওষ্ঠযুগলের মধ্যস্থান শ্যামবর্ণ করিয়াছিল, দন্তের প্রভায় তাহা আবার পরিষ্কার দেখা যাইতেছিল এবং আবীর-চূর্ণের ন্যায় পাটলবর্ণ ছিল। (খ) এবং গৃহপালিত একটি কলহংস, শৈবাল (সেওলা) মনে করিয়া, কাদম্বরীর কর্ণাভরণ শিরীষপুষ্পের দিকে ঊর্দ্ধ-নয়নে চাহিতেছিল এবং প্রভাত-চন্দ্রের ন্যায় মণ্ডলাকারে ভ্রমণ করতঃ, কাদম্বরীর নিকটে যাইতেছিল, নমস্কার করিতেছিল ও প্রদক্ষিণ করিতেছিল। (গ) এই অবস্থায় চন্দ্রাপীড় কাদম্বরীর নিকটে যাইয়া নমস্কার করিয়া, সেই শুভ্র বেদিকার উপরেই সংস্থাপিত একখানি আসনে উপবেশন করিলেন। (ঘ) এবং কিছুকাল থাকিয়া মহাশ্বেতার মুখ নিরীক্ষণ করিয়া ঈষৎ হাস্য করিলেন; তাহাতে তাঁহার গণ্ডযুগলের মধ্যভাগ স্পন্দিত হইল। (ঙ) কিন্তু মহাশ্বেতা সেই ঈষৎ হাস্যেই চন্দ্রাপীড়ের

---

(১) দর্পণে। (২) বহলতাম্বূলরাগ...। (৩ উন্মৃষ্ট...।

प्राया कादम्बरीमब्रवीत् "सखि! भवत्या गुणैश्चन्द्रापीडश्चन्द्रकान्त इव चन्द्रमयूखैरार्द्रीकृतो न शक्नोति वक्तुम् (ङ)। जिगमिषति खलु कुमारः, पृष्ठतो दुःखमविदितवृत्तान्तं राजचक्रमास्ते (च)। अपि च युवयोर्दूरस्थितयोरपि स्थितेयमिदानीं कमलिनीकमलबान्धवयोरिव कुमुदिनीकुमुदनाथयोरिव प्रीतिराप्रलयात्। अतोऽभ्यनुजानातु भवती" इति (छ)

अथ कादम्बरी "सखि! महाश्वेते! स्वाधीनोऽयं सपरिजनो जनः कुमारस्य स्व इवान्तरात्मा, क इवात्रानुरोधः" इत्यभिधाय गन्धर्वकुमारानाहूय "प्रापयत कुमारं स्वां भूमिम्" इत्यादिदेश (ज)। चन्द्रापीडोऽप्युत्थाय प्रणम्य प्रथमं

(ङ) असाविति। असौ महाश्वेता। तावतैव मन्दस्मितेनैव, विदिताभिप्राया अवगतचन्द्रापीडमनोवृत्तिः सती। आर्द्रीकृत एकत्र जलनिर्गमात् क्लिन्नः, अन्यत्र वशीकृतः। अत्र श्रौतोपमालङ्कारः।

(च) किं वक्तव्यमित्याह जिगमिषतीति। तत्र हेतुमाह पृष्ठत इति। न विदितो वृत्तान्तश्चन्द्रापीडवार्त्ता येन तत्, राजचक्रं सैनास्थराजगणः, दुःखमास्ते दुःखाकुलं वर्त्तते।

(छ) अपीति। कमलिनीकमलबान्धवयोः पद्मिनीसूर्ययोः। कुमुदिनीकुमुदनाथयोः कैरविणीचन्द्रयोरिव। अत्र स्त्रीपुंलिङ्गाभ्यां पद्मिनीसूर्ययोर्नायिकानायकव्यवहारसमारोपात् समासोक्तिः श्रौतोपमा चानयोरेकाश्रयानुप्रवेशरूपः सङ्करः, अपरोऽपि तद्वदेव सङ्करः, तयोश्च पुनर्मिथोनिरपेक्षतया संसृष्टिः, तया च कादम्बरीचन्द्रापीडयोरपि नायिकानायकभावो व्यज्यत इत्यलङ्कारेण वस्तुध्वनिः।

(ज) अथेति। सपरिजनः अयं मल्लक्षणो जनः, कुमारस्य स्वः अन्तरात्मेव स्वस्य अधीनः, अतएवात्र गमनविषये क इवानुरोधो ममाभ्यनुज्ञायद्याग्रहः, अपि तु कोऽपि नेत्यर्थः, भृत्यात् प्रभोरनुमतिग्रहणापेक्षाभावादिति भावः। श्रौतोपमा वाक्यार्थहेतुकं काव्यलिङ्गञ्चानयोरङ्गाङ्गिभावेन सङ्करः।

অভিপ্রায় বুঝিয়া কাদম্বরীকে কহিল—"সখি! চন্দ্রের কিরণে চন্দ্রকান্তমণির ন্যায় তোমার গুণে চন্দ্রাপীড় একেবারে গলিয়া গিয়াছেন; তাই নিজে বলিতে পারিতেছেন না। (চ) মোট কথা—রাজকুমার যাইতে ইচ্ছা করিতেছেন; কারণ—পিছনের দিকে রাজগণ রাজকুমারের বৃত্তান্ত না জানায় দুঃখিত হইয়া অবস্থান করিতেছেন। (ছ) আরও দেখ—পদ্মিনী ও সূর্য্যের ন্যায় এবং কুমুদিনী ও চন্দ্রের ন্যায় তোমরা পরস্পরের দূরে থাকিলেও তোমাদের এই প্রণয় এখন হইতে প্রলয় পর্য্যন্ত থাকিবে; অতএব যাইবার জন্য কুমারকে অনুমতি কর।"

(জ) তাহার পর কাদম্বরী কহিলেন—"সখি! মহাশ্বেতে! নিজের অন্তরাত্মার ন্যায় পরিবারবর্গের সহিত এই ব্যক্তি কুমারের অধীন; অতএব এ বিষয়ে একটা অনুরোধ কি?" এই কথা কহিয়া গন্ধর্ব্বকুমারদিগকে ডাকিয়া—"তোমরা রাজপুত্রকে নিজের জায়গায় রাখিয়া আইস" এইরূপ আদেশ করিলেন। (ঝ) চন্দ্রাপীড়ও উঠিয়া প্রথমে মহাশ্বেতাকে, তাহার

महाश्वेतां, ततः कादम्बरीं, तस्याश्च प्रेमस्निग्धेन चक्षुषा मनसा च गृह्यमाणः—"देवि ! किं ब्रवीमि, बहुभाषिणः (१) न श्रद्दधाति लोकः, स्मर्त्तव्योऽस्मि परिजन-कथासु" इत्यभिधाय कन्यकान्तःपुरान्निर्जगाम (झ)। कादम्बरीवर्जः (२) अशेषः कन्यकाजनो गुणगौरवाकृष्टः परवश इव तं व्रजन्तमावहिस्तोरणादनु-वव्राज। (ञ)

निवृत्ते च कन्यकाजने केयूरकेणोपनीतं वाजिनमारुह्य गन्धर्वकुमारकैस्तैरनु-गम्यमानो हेमकूटात् प्रवृत्तो गन्तुम् (ट)। गच्छतश्चास्य चित्ररथतनया न केवलमन्तर्बहिरपि सैव सर्वाशानिबन्धनमासीत् (ठ)। तथाहि, तन्मयेन मानसेनासह्यविरहदुःखानुशयलग्नामिव पृष्ठतः, ज्ञातमार्गगमननिरोधामिव

(झ) चन्द्रेति। प्रेमस्निग्धेन अनुरागार्द्रेण। गृह्यमाणो विषयीक्रियमाणः सन्। श्रद्दधाति विश्व-सिति, अतोऽल्पाक्षरेण ब्रवीमीति भावः। किन्तदकृत्यमित्याह स्मर्त्तव्य इति। एतेनात्मनः परिजनत्वं सूचितम्।

(ञ) कादेति। कादम्बरीं वर्जयतीति सः, कादम्बरीव्यतिरिक्त इत्यर्थः। परवश इव चन्द्रापीडायत्त इव। तं चन्द्रापीडम्। आवहिस्तोरणात् बहिर्द्वारं यावत्।

(ट) निवृत्त इति। उपनीतमुपस्थापितं, वाजिनमश्वम्। गन्तुं प्रवृत्तोऽभूदिति शेषः।

(ठ) गच्छत इति। किञ्च, अस्य चन्द्रापीडस्य। अन्तरन्तःकरणे सर्वासामाशानामाकाङ्क्षाणां निबन्धनं कारणं, तथा बहिरपि सर्वासामाशानां दिशां निबन्धनं निरोधहेतुः।

(ड) बहिर्निरोधहेतुत्वं प्रतिपादयितुमाह तथाहीति। तन्मयेन कादम्बरीमयेन मानसेन चित्तेन हेतुना, पृष्ठतः पश्चात्, असह्यं यद्विरहदुःखं तेन योऽनुशयोऽनुसरणं तेन लग्नां संसक्तामिव। एतेन

পর কাদম্বরীকে নমস্কার করিয়া, কাদম্বরীর প্রীতিপূর্ণ নয়ন ও মনের লক্ষ্য হইয়া বলিলেন—"দেবি ! বলিব কি, লোকে বহুভাষী ব্যক্তিকে বিশ্বাস করে না ; তাই অল্পাক্ষরে বলিতেছি যে, পরিজনের কথার মধ্যে আমাকেও যেন স্মরণ করেন" এই কথা বলিয়া কন্যান্তঃপুর হইতে নির্গত হইলেন। (ঞ) তখন কাদম্বরীভিন্ন অন্য সমস্ত কন্যাগণই চন্দ্রাপীড়ের গুণগৌরবে আকৃষ্ট হইয়া পরাধীনের ন্যায় বহির্দ্বার পর্য্যন্ত তাঁহার অনুগমন করিল।

(ট) তাহার পর কন্যাগণ নিবৃত্তি পাইলে, কেয়ূরক একটি অশ্ব আনিয়া উপস্থিত করিল, চন্দ্রাপীড় তাহাতে আরোহণ করিয়া হেমকূট হইতে যাইতে লাগিলেন, তখন সেই গন্ধর্ব্বকুমারগণও তাঁহার পশ্চাৎ পশ্চাৎ চলিল। (ঠ) তখন কাদম্বরী, চন্দ্রাপীড়ের কেবল অন্তঃকরণের সকল আকাঙ্ক্ষার কারণ হইয়াছিলেন না, কিন্তু বাহিরেও সেই কাদম্বরীই সকল দিক্‌অবরোধের কারণ হইয়াছিলেন। (ড) কারণ—চন্দ্রাপীড়ের হৃদয় একেবারে তন্ময় হইয়াছিল ;

(१) बहुभाषिणे। (२)···वर्जं।

पुरस्तात्, वियोगाकुलहृदयोत्कलिकाविशेषोत्क्षिप्तामिव (१) नभसि, सम्यगालोकयितुं वदनं विरहातुरमानसामिवावस्थितामुरःस्थले, तामेव मृगलोचनां ददर्श (ड)। क्रमेण च प्राप्य महाश्वेताश्रममच्छोदसरस्तीरे सन्निविष्टमिन्द्रायुधखुरपुटानुसारेणैवागतमात्मस्कन्धावारमपश्यत् (ढ)। निवर्त्तिताशेषगन्धर्वकुमारश्च सानन्देन सकुतूहलेन सविस्मयेन च स्कन्धावारवर्त्तिना जनेन प्रणम्यमानः स्वभवनं विवेश। सम्मानिताशेषराजलोकश्च (२) वैशम्पायनेन पत्रलेखया च सह 'एवं महाश्वेता, एवं कादम्बरी, एवं मदलेखा, एवं तमालिका, एवं केयूरकः' इत्यनयेव कथया प्रायो दिवसमनैषीत् (ण)। कादम्बरीरूपदर्शन-

---

पृष्ठतो निरोधहेतुत्वमुक्तम्। "भवेदनुशयो द्वे षे पश्चात्तापानुबन्धयोः।" इति मेदिनी। तन्मयेन मानसेन हेतुना, पुरस्तादग्रतः, क्वचो मार्गगमने निरोधो यथा तामिव। अनेन सम्मुखतो निरोधहेतुत्वमभिहितम्। तन्मयेन मानसेन हेतुना, नभसि आकाशे, वियोगाकुलं यद्हृदयं तच्च य उत्कलिकाविशेष उत्कण्ठाविर्भावस्तेन उत्क्षिप्तामिव। एतेनोपरि निरोधहेतुत्वं प्रतिपादितम्। तथा तन्मयेन मानसेन हेतुना, वदनं आत्मनो मुखं सम्यगालोकयितुं उरःस्थले आत्मनो वक्षसि अवस्थितामिव, विरहातुरमानसां मृगलोचनां तामेव कादम्बरीं ददर्श। अत्रत्यवस्थाय धारयेन सर्वत एव निरोधसम्पादनेन दिगन्तरेषु निरोधहेतुत्वं सूचितम्। अत्र चतसृणामेव क्रियोत्प्रेक्षाणां मिथोनिरपेक्षतया संसृष्टिः।

(ढ) क्रमेणेति। इन्द्रायुधस्य स्वकीयाश्वस्य खुरपुटानुसारेण खुरपुटचिह्नानुसरणक्रमेण। स्कन्धावारं सैन्यम्।

(ण) निवर्त्तितेति। निवर्त्तिता अशेषाः समस्ता गन्धर्वकुमारा येन सः। स्वभवनं पटमण्डपम्। सम्मानिताः प्रत्यभिवादनादिना अभ्यर्चिता अशेषा राजलोका येन सः। प्रायो बाहुल्येन अनयैव कथया।

সুতরাং অসহ্য-বিরহ-দুঃখে কাদম্বরী যেন অনুসরণ করিয়া তাঁহার পৃষ্ঠে সংলগ্ন হইয়াছিল; সম্মুখের দিকে গমন করিবার পথ যেন অবরুদ্ধ করিয়াছিল; বিরহাকুল চিত্তে উৎকণ্ঠা আবির্ভূত হইয়া কাদম্বরীকে যেন আকাশে নিক্ষেপ করিয়াছিল এবং সম্পূর্ণরূপে নিজের মুখ দেখিবার নিমিত্ত কাদম্বরী যেন বক্ষঃস্থলে অবস্থান করিতেছিল - এই ভাবে সেই হরিণনয়না বিরহার্ত্ত-হৃদয়া কাদম্বরীকেই দেখিতে লাগিলেন। (ঢ) ক্রমে মহাশ্বেতার আশ্রমে উপস্থিত হইয়া দেখিলেন—নিজের সৈন্যগণ, ইন্দ্রায়ুধের খুরের চিহ্ন অনুসরণ করিয়া আচ্ছোদসরোবরের তীরে আসিয়া অবস্থান করিতেছে। (ণ) তখন সমস্ত গন্ধর্ব্বকুমারদিগকে ফিরাইয়া দিলেন; এদিকে সেনান্তর্গত সমস্ত লোকই আনন্দ, কৌতুক ও বিস্ময়ের সহিত নমস্কার করিতে লাগিল—এই অবস্থায় তিনি নিজের পটমণ্ডপে (তাঁবুতে) প্রবেশ করিলেন। প্রবেশ করিয়া প্রত্যভিবাদন দ্বারা সকল রাজগণকে সম্মানিত করিয়া, বৈশম্পায়ন ও পত্রলেখার সহিত 'এইরূপ মহাশ্বেতা,

---

(१)...चाविश्चिप्तामिव। (२) सम्मानितप्रत्यर्चीकृताशेष...।

द्विष्टेव (१) नास्य पुरेव (२) प्रीतिमकरोत् राजलक्ष्मीः (त)। तामेव च धवलेक्षणामाबद्धरणरणकेन चेतसा चिन्तयतो जाग्रत एवास्य सा (३) जगाम रात्रिः (थ)। अपरेद्युश्च समुत्थिते भगवति रवौ, आस्थानमण्डपगतस्तद्गतेनेव मनसा सहसैव प्रतीहारेण सह प्रविशन्तं केयूरकं ददर्श। दूरादेव च क्षितितलस्पर्शिना मौलिना कृतपादपतनम्, "एह्येहि" इत्युक्त्वा प्रथममपाङ्गविसर्पिणा चक्षुषा, ततो हृदयेन, ततो रोमोद्गमेन, पश्चाद्भुजाभ्यां प्रधावितः प्रह्वतं (४) आलिलिङ्ग गाढम् (द)। उपावेशयच्चैनमात्मनः समीप एव, पप्रच्छ च स्मितसुधाधवलीकृताक्षरं क्षरत्-प्रीतिद्रवमयमिव वचनमादृतः "केयूरक! कथय कुशलिनी देवी ससखीजना

(त) कादेति। कादम्बर्य्या रूपदर्शने चन्द्रापीडकर्त्तृकसौन्दर्य्यावलोकने या विद्विष्टिर्विद्वेषस्तयेव हेतुना। अत्र हेतूत्प्रेक्षालङ्कारः। एतेन राजलक्ष्म्यां सपत्नीभावो ध्वनितः।

(थ) तामिति। आबद्धो धृतो रणरणक उत्कण्ठा येन तेन। तां कादम्बरीमेव चिन्तयतः।

(द) अपेति। आस्थानमण्डपगतः सभामण्डपस्थितः, तद्गतेनेव कादम्बरीं प्रति धावितेनेव मनसा उपलक्षितः। प्रतीहारेण दौवारिकेण। कृतं पादयोः पतनं येन तम्। अपाङ्गविसर्पिणा प्रान्तगामिना। प्रह्वतमागतं केयूरकम्।

(ध) उपेति। स्मितमेव सुधा लेपविशेषस्तेन धवलीकृतानि अक्षराणि यस्य तत्, तथा क्षरन् निःसरन् यः प्रीतिद्रवः प्रेमरसस्तन्मयं तेन व्याप्तमिव वचनमुच्चारयन्, आदृत आदरवान् पप्रच्छ। अत्र निरङ्ग

এইরূপ কাদম্বরী, এইরূপ মদলেখা, এইরূপ তমালিকা এবং এইরূপ কেয়ূরক' প্রায়শঃ এই আলাপেই দিন অতিবাহিত করিলেন। (ত) চন্দ্রাপীড় কাদম্বরীর রূপ দর্শন করিয়াছেন, এই বিদ্বেষ বশতই যেন রাজলক্ষ্মী, পূর্ব্বের ন্যায় আর তাঁহার প্রীতি জন্মাইলেন না। (থ) চন্দ্রাপীড় উৎকণ্ঠিত-চিত্তে ধবলনয়না কাদম্বরীকেই চিন্তা করতঃ জাগিয়া রহিলেন — এই অবস্থায়ই তাঁহার সেই রাত্রি অতীত হইল। (দ) পরদিন ভগবান্ সূর্য্য উদয় পাইলে, সভামণ্ডপে তদ্গতচিত্তেই অবস্থান করতঃ সহসাই দৌবারিকের সঙ্গে কেয়ূরককে প্রবেশ করিতে দেখিলেন। কেয়ূরক, দূর হইতেই ভূতলে মস্তক অবনত করিয়া চন্দ্রাপীড়ের চরণের উপর পতিত হইল; চন্দ্রাপীড় "এস, এস" বলিয়া, প্রথমে প্রান্তগামী নয়নদ্বারা, তাহার পর মনে মনে, তদনন্তর রোমাঞ্চদ্বারা, তাহার পর ধাবিত হইয়া বাহুযুগলদ্বারা, উপস্থিত কেয়ূরককে গাঢ় আলিঙ্গন করিলেন (ধ) এবং তাহাকে নিজের নিকটেই বসাইলেন; আর যে বাক্য উচ্চারণ করিলেন, তাহার অক্ষরগুলিকে ঈষৎহাস্যরূপ সুধালেপে ধবলবর্ণ করিল এবং সে বাক্য যেন বিগলিত প্রেমরসে ব্যাপ্ত ছিল—এই অবস্থায় আদরের সহিত জিজ্ঞাসা

(१) विद्विष्टेव। (२) पुरे। (३) क्वचित् सेति नास्ति। (४) प्रधितं, प्रधितं तं।

सपरिजना कादम्बरी, भगवती महाश्वेता च" इति (ध)। असौ तु तेन राजसूनोः प्रीतिप्रकर्षजन्मना स्मितेनैव स्नपित इवानुलिप्त इव सद्य एवापगताध्वखेदः प्रणम्याहततरमवोचत्-(१) (न) "अद्य कुशलिनी, यामेवं देवः पृच्छति" इत्यभिधायापनीयार्द्रवस्त्रावगुण्ठितं (२) विससूत्रसंयतमुखमार्द्रचन्दन-पङ्क-न्यस्त-बाल-मृणाल-वलय-मुद्रं नलिनीपत्रपुटमदर्शयत् (प) उद्घाट्य च तत्र कादम्बरी-प्रहितान्यभिज्ञानान्यदर्शयत्—तद्यथा मरकतहरिन्ति व्यपनीतत्वञ्चि चारु-मञ्जरीभाञ्जि क्षीरीणि पूगीफलानि, शुककामिनीकपोलपाण्डूनि ताम्बूली-

---

केवलरूपकं, धवलीकरणासम्बन्धेऽपि तत्सम्बन्धोक्तेरतिशयोक्तिस्तानयोरेकाश्रयानुप्रवेशरूपः सङ्करः क्रियोत्प्रेक्षया पुनः संसृज्यते।

(न) असाविति। असौ केयूरकः, राजसूनोश्चन्द्रापीडस्य, प्रीतिप्रकर्षजन्मना प्रणयातिरेकाज्जातेन। अपगताध्वखेदो निवृत्तमार्गश्रमः। अत्र क्रियोत्प्रेक्षयोः परस्परनिरपेक्षतया संसृष्टिः।

(प) अद्येति। आर्द्रवस्त्रेण अवगुण्ठितं वेष्टितं, विससूत्रेण मृणालतन्तुना संयतं बद्धं मुखं यस्य तत्, आर्द्रे चन्दनपङ्के न्यस्ता अर्पिता बालमृणालवलयस्य मुद्रा चिह्नं यस्मिन् तत्, नलिनीपत्रपुटं, अपनीय तद्वस्त्रावगुण्ठनं अपसार्य अदर्शयत्।

(फ) उद्घाट्येति। कादम्बर्या प्रहितानि प्रेरितानि, अभिज्ञायते अवबुध्यते, प्रेम एभिरिति अभिज्ञानानि प्रेमसूचकचिह्नानि। मरकतवत् हरिन्ति हरिद्वर्णानि, व्यपनीता दूरीकृताः त्वचो वल्कलानि येषां तानि, चार्वीर्मञ्जरीर्भजन्त इति तानि, तथा क्षीरीणि सरसानि, पूगीफलानि क्रमुकाणि। शुककामिन्याः सारिकायाः कपोलवत् गण्डवत् पाण्डूनि पाण्डुरवर्णानि, ताम्बूल्या दलानि पर्णानि। हरस्य शिवस्य चन्द्रखण्डवत्

করিলেন—'কেয়ূরক! বল, সখীজন ও পরিজনবর্গের সহিত কাদম্বরীদেবী ও ভগবতী মহাশ্বেতা ভাল আছেন ত?" (ন) বিশেষ প্রণয় হইতে উৎপন্নরাজপুত্রের সেই ঈষৎহাস্যে কেয়ূরক যেন স্নপিত ও অনুলিপ্ত হইল এবং তৎক্ষণাৎ-ই তাহার পথের পরিশ্রম দূরীভূত হইল— এই অবস্থায় সে প্রণাম করিয়া বিশেষ আদরের সহিত বলিল (প)—'আজ তিনি ভাল আছেন, যাঁহার সম্বন্ধে আপনি এইরূপ জিজ্ঞাসা করিতেছেন" এই কথা বলিয়া বস্ত্রাবরণ দূর করিয়া একটি পদ্মপত্রের পুটক দেখাইল; সেই পুটকটি পূর্ব্বে আর্দ্র বস্ত্রে আবৃত ছিল, মৃণালের সূত্রে তাহার মুখভাগ বদ্ধ ছিল এবং তাহার আর্দ্র চন্দন-লেপের উপরে নূতন মৃণাল-বলয়ের ছাপ দেওয়া ছিল। (ফ) তাহার পর সেই পুটকটি উদ্ঘাটন করিয়া তাহার ভিতরে কাদম্বরীর প্রেরিত অভিজ্ঞান সকল দেখাইল—সেই অভিজ্ঞান যথা - মরকতমণির ন্যায় হরিদ্বর্ণ, বল্কলবিহীন, সুন্দরমঞ্জরীসমন্বিত ও ক্ষীরপরিপূর্ণ কতকগুলি গুবাকফল, সারিকার গণ্ডস্থলের ন্যায় পাণ্ডুবর্ণ তাম্বূল, শিবের মস্তকস্থিত চন্দ্রখণ্ডের ন্যায় বৃহৎ একখণ্ড

---

(१) आहततरमिवावोचत्। (२) आर्द्रकर्पटावगुण्ठितं, आर्द्रवस्त्रकर्पटावगुण्ठितं।

दलानि, हरचन्द्रखण्डस्थूलशकलञ्च कर्पूरम्, अतिबहल-मृगमदामोदमनोहरञ्च मलयजविलेपनम् (फ)। अब्रवीच्च—"चूड़ामणिचुम्बिना कोमलाङ्गुलिविवर-विनिर्गत-लोहितांशुजालेनाञ्जलिना देवमर्च्चयति देवी कादम्बरी, महाश्वेता च सकण्ठग्रहेण कुशलवचसा, पर्य्यस्त-शिखण्ड-माणिक्य-ज्योत्स्ना-स्नपित-ललाटेन च नमस्कारेण मदलेखा क्षितितल-घटित-सीमन्त-मकरिका-कोटि-कोणेन सकल-कन्यालोकश्च, सचरणरजःस्पर्शेन च पादप्रणामेन तमालिका (ब) सन्दिष्टञ्च तव महाश्वेतया—"धन्याः खलु ते, येषां न गतोऽसि चक्षुषोर्विषयं (१) तथा नाम समक्षं भवतस्ते तुहिनशीतलाश्चन्द्रमया इव गुणा विरहे विवस्वन्मया इव

स्थूलानि शकलानि खण्डानि यस्य तथाविधं कर्पूरञ्च। तथा अतिबहलैर्नितान्तप्रचुरैः मृगमदानां कस्तूरीणां आमोदैः सौरभैर्मनोहरं, मलयजविलेपनं चन्दनानुलेपनञ्च। अत्र लुप्तोपमात्रयस्य परस्परनिरपेक्षतया संसृष्टिः।

(ब) अब्रवीदिति। चूड़ामणिं चुम्बति स्पृशतीति तेन, कोमलानामङ्गुलीनां विवरेभ्यो विनिर्गतं लोहितं अंशुजालं करतलकिरणसमूहो यस्य तेन, देवं भवन्तं, अर्च्चयति सम्मानयतीति सर्व्वत्र सम्बध्यते। सकण्ठ-ग्रहेण प्रणयालिङ्गनसहितेन। पर्य्यस्तस्य शिरोनमनाच्चलितस्य शिखण्डमाणिक्यस्य चूड़ारत्नस्य ज्योत्स्नया प्रभया स्नपितं परिप्लुतं ललाटं यस्मिन् तेन। क्षितितलेन घटितः स्पृष्टः सीमन्तमकरिकायाः सीमन्तवर्त्तिमकराका-राभरणस्य कोटिकोणः अग्रभागैकदेशो यस्मिन् तेन नमस्कारेण सकलकन्यालोकश्च। तथा चरणरजसः पादधूलेः स्पर्शेन सहेति तेन। अत्र अर्च्चयतीत्येकया क्रियया बहूनां कर्त्तृत्वाभिसम्बन्धात्तुल्ययोगितालङ्कारः।

(भ) सन्दिष्टमिति। धन्यत्वे हेतुमाह तथेति। भवतस्ते प्रसिद्धा गुणा रूपादयः, समक्षं चन्द्रमयाः चन्द्रनिष्पन्ना इव तुहिनशीतलास्तुषारवत् शीतला आसन्, इदानीन्तु विरहे विवस्वन्मयाः सन्तापकत्वात् सूर्य्य-निष्पन्ना इव अस्माकं संवृत्ताः अतएवेदृशविरहसन्तापाभावादेव ते धन्या इति भावः। अत्र द्वे क्रियोत्प्रेक्षे एका च लुप्तोपमा इत्येतासामङ्गाङ्गिभावेन सङ्करः।

কর্পূর এবং কস্তূরীর অতিপ্রচুর সৌরভে মনোহর চন্দনানুলেপন। (ব) তাহার পর কেয়ূরক বলিল—"কাদম্বরী দেবী, কোমল অঙ্গুলি-বিবর হইতে নির্গত রক্তবর্ণ কিরণজালবর্ত্তী চূড়ামণি-স্পর্শী অঞ্জলি দ্বারা আপনার পূজা করিতেছেন; মহাশ্বেতাদেবী প্রণয়ালিঙ্গনের সহিত মঙ্গলবার্ত্তা জিজ্ঞাসা করিয়া আপনার সম্মান করিতেছেন; মদলেখা অবনত-শিরোরত্নের প্রভায় ললাটদেশ পরিস্কৃত করিয়া নমস্কার দ্বারা আপনার সম্মান বর্দ্ধন করিতেছেন; সকল কন্যাগণও, সীমন্তের (সিঁথির) মকরাকার অলঙ্কারের অগ্রদেশ দ্বারা ভূতল স্পর্শ করিয়া নমস্কার দ্বারা আপনার সম্মান বর্দ্ধিত করিতেছেন এবং তমালিকা আপনার চরণ-ধূলি-স্পর্শের সহিত চরণে প্রণাম করিয়া অর্চ্চনা করিতেছে। (ভ) আর মহাশ্বেতা আপনার নিকট বলিতে বলিয়াছেন যে, "সেই সকল লোকই ধন্য; আপনি যাহাদের দৃষ্টিপথে পতিত হ'ন নাই। কারণ, আপনার

---

(১) অবিষয়ং।

संवृत्ता: (१) (भ)। स्पृहयन्ति खलु जना: कथमपि दैवोपपादितायामृतोत्पत्ति-वासरायेवातीतदिवसाय (म)। त्वया वियुक्तं निवृत्त-(२) महोत्सवालसमिव वर्त्तते गन्धर्वराजनगरम् (य)। जानासि च मां कृतसकलपरित्यागाम्, तथाप्य-कारणपक्षपातिनं भवन्तं द्रष्टुमिच्छत्यनिच्छन्त्या अपि मे बलादिव हृदयम्। अपि च बलवदस्वस्थशरीरा कादम्बरी, स्मरति च स्मेराननं स्मरकल्पं त्वाम्, अत: पुनरागमनगौरवेणार्हसीमां गुणवदभिमानिनीं कर्त्तुम्। उदारजनादरो हि बहुमानमारोपयति (र)। अवश्यं सोढ़व्या चेयमस्मद्विधजन-परिचय-कदर्थना कुमारेण, भवत्सुजनतैव जनयत्यनुचितसन्देशप्रागल्भ्यम्। एष देवस्य

(म) स्पृहेति। कथमपि दैवेन भाग्येन उपपादिताय सम्पादिताय, यस्मिन् वासरे अमृतोत्पत्तिरासीत् तस्मै अमृतोत्पत्तिवासरायेव, अतीतो गतो यो दिवसस्तस्मै यत्र तव समागमोऽभवत् तस्मै इत्यर्थ:। जना अत्रत्या लोका:। अत्रोपमालङ्कार:। "स्पृहेरीप्सित"मिति सम्प्रदानत्वाच्चतुर्थी।

(य) त्वयेति। निवृत्तेन महोत्सवेन अलसं मन्दमिव। अत्र गुणोत्प्रेक्षालङ्कार:।

(र) जानासीति। स्मरकल्पं मदनतुल्यम्। पुनरागमनमेव गौरवं गुरुतासम्पादकं तेन। इमां कादम्बरीम्। गुणवन्तमात्मानमभिमन्यत इति ताम्। हि यस्मात्, उदारस्य महतो जनस्य आदर:, बहुमान-मात्मन्यादरं। अत्र सामान्येन विशेषसमर्थनरूपोऽर्थान्तरन्यासोऽलङ्कार:।

(ल) अथ तव पुनर्गमने परिश्रम: स्यादित्याह अवश्यमिति। कुमारेण त्वया। अस्मद्विधानां हीनाना-मिति भाव: जनानां परिचयेन कदर्थना यातना। शयनीये त्वयैव व्यवहृतायां शय्यायां।

গুণগ্রাম, সমক্ষে চন্দ্রনির্ম্মিত, বলিয়াই যেন শিশিরের ন্যায় শীতল ছিল; আর এখন বিচ্ছেদের সময় সূর্য্যনির্ম্মিত বলিয়াই যেন আমাদের সন্তাপজনক হইয়াছে। (ম) এস্থানের সকল লোকই অমৃতোৎপত্তি-দিনের ন্যায় কোন প্রকারে, দৈববশতঃ সঙ্ঘটিত গত দিনের জন্য আকাঙ্ক্ষা করিতেছে। (য) এই গন্ধর্ব্বরাজধানী আপনার বিরহে, মহোৎসব-নিবৃত্তির পর নিস্তব্ধের ন্যায় হইয়া পড়িয়াছে। (র) আমি সকলই পরিত্যাগ করিয়াছি—ইহা আপনি জানেন, তথাপি আপনি অকারণ পক্ষপাতী বলিয়া, অনিচ্ছা সত্ত্বেও আমার হৃদয়, বলপূর্ব্বকই যেন আপনাকে দেখিতে ইচ্ছা করিতেছে। বিশেষতঃ কাদম্বরীর শরীর অত্যন্ত অসুস্থ এবং সে, সহাস্যবদন ও কন্দর্পতুল্য আপনাকে স্মরণ করিতেছে; অতএব আপনি পুনরায় গৌরব-সম্পাদক আগমন দ্বারা কাদম্বরীকে নিজের গুণের অভিমানিনী করিবেন; কারণ—প্রধান লোকের সমাদর, মানুষের হৃদয়ে অভিমানের সঞ্চার করিয়া থাকে। (ল) আমাদের ন্যায় লোকের সঙ্গে পরিচয় হইয়াছে বলিয়া এইরূপ যাতনা, আপনার অবশ্যই সহ্য করিতে হইবে; আপনার সৌজন্যই, এই অনুচিত খবর পাঠাইবার প্রগল্ভতা জন্মাইয়াছে। আপনি বিস্মরণবশতঃ এই হারছড়া

---

(१) वृत्ता:। (२) निर्वृत्त...।

शयनीये विस्मृतः शेषो हारः प्रहितः" (१) (ष) इत्युत्तरीयपटान्तसंयतं सूक्ष्मसूत्रविवर-(२) निःसृतैरंशुसन्तानैः संसूच्यमानं विमुच्य चामरग्राहिण्याः करे समर्पितवान्। (ष)

अथ चन्द्रापीडः "महाश्वेताचरणाराधनतपःफलमिदं यदेवं परिजनेऽप्यनुस्मरणादिकं प्रसादभारमतिमहान्तमारोपयति देवी कादम्बरी" इत्युक्त्वा तत्सर्वं शिरसि कृत्वा स्वयमेव जग्राह (श)। तेन च कादम्बर्याः कपोललावण्येनेव गलितेन, स्मितालोकेनेव (३) रसतामुपनीतेन, हृदयेनेव द्रुतेन, गुणगणेनेव निस्यन्दितेन, (४) स्पर्शवता ह्लादिना सुरभिणा च विलेपनेन विलिप्य तमेव कण्ठे

(ष) इतीति। उत्तरीयपटान्तेन उत्तरीयवसनाञ्चलेन संयतं बद्धं, सूक्ष्मसूत्राणां विवरेभ्यो निःसृतैः, अंशुसन्तानैः किरणप्रवाहैः, संसूच्यमानं ज्ञाप्यमानं, विमुच्य वस्त्राञ्चलादुन्मुच्य। ·

(श) अथेति। महाश्वेताचरणाराधनमेव तपस्तस्य फलम्। परिजनेऽपि मयीति शेषः। प्रसादभारमनुग्रहभारम्। तत् सर्वं पूगीफलादिकमुपायनम्।

(ष) तेनेति। गलितेन कादम्बर्याः कपोललावण्येनेव। अत्र गुणोत्प्रेक्षालङ्कारः। रसतां द्रवतां उपनीतेन कादम्बर्याः स्मितालोकेनेव मन्दहास्यप्रभयेव। उत्प्रेक्षा। द्रुतेन द्रवीभूतेन कादम्बर्या हृदयेनेव। उत्प्रेक्षा। निस्यन्दितेन प्रस्रुतेन कादम्बर्या गुणगणेनेव। उत्प्रेक्षा। स्पर्शवता प्रशस्तस्पर्शशालिना, ह्लादिना आह्लादजनकेन, सुरभिणा नासिकाप्रीतिकारिणा च तेन विलेपनेन, चन्दनेन विलिप्य अङ्गानीति शेषः।

শয্যার উপরে ফেলিয়া গিয়াছেন, সুতরাং শেষনামক সেই হার এই পাঠাইলাম" এই কথা বলিয়া কেয়ূরক, উত্তরীয়-বস্ত্রাঞ্চলে বদ্ধ ও সূক্ষ্ম-সূত্র-বিবর হইতে নির্গত কিরণজালে সংসূচিত সেই হারছড়া খুলিয়া, চন্দ্রাপীড়ের চামরধারিণীর হস্তে সমর্পণ করিল।

(শ) তাহার পর চন্দ্রাপীড় বলিলেন —"ইহা, মহাশ্বেতার চরণারাধনরূপ তপস্যার ফল যে, কাদম্বরী দেবী আমার মত পরিজনের প্রতিও, অনুস্মরণ প্রভৃতি এইরূপ অত্যন্ত গুরুতর অনুগ্রহভার আরোপ করিয়াছেন" এই কথা বলিয়া সেই সকল উপহার-দ্রব্য নিজেই মস্তকে ধারণ করিয়া গ্রহণ করিলেন। (ষ) এবং কাদম্বরীর গণ্ডস্থল হইতে বিগলিত লাবণ্যের ন্যায়, তাঁহার দ্রবীভূত মন্দ হাস্যের ন্যায়, বিগলিত হৃদয়ের ন্যায় ও প্রবাহিত গুণগ্রামের ন্যায়, সুখস্পর্শ, আহ্লাদজনক এবং নাসিকার তৃপ্তিকারী সেই চন্দনদ্বারা সমস্ত অঙ্গ লেপন করিয়া, সেই হারছড়া

(१) क्वचित् प्रहित इति नास्ति। (२) सूक्ष्मवस्त्रविवर...।
(३) स्मितावलोकेनेव (४) विस्यन्दितेन।

च्छारमकरोत् (ष)। आगृहीततांबूलश्च मुहूर्त्तादिवोत्थाय वामबाहुना स्कन्धदेशे समवलम्ब्य (१) केयूरकं, ऊर्द्ध्वस्थित एव कृतयथाक्रियमाणसम्मानमुदितं प्रधानराजलोकं विसृज्य शनैः शनैर्गन्धमादनं करिणं द्रष्टुमयासीत् (स)। तत्र च स्थित्वा क्षणमिव तस्मै स्वयमेव निजनखांशुजालजटिलं समृणालमिव शुष्ककवलमवकीर्य्य वल्लभतुरङ्ग-(२) मन्दुराभिमुखः प्रतस्थे, गच्छंश्चोभयतः किञ्चित् किञ्चिदिव तिर्य्यग्वलितवदनः परिजनं विलोकयाम्बभूव। (ह)

अथ चित्तज्ञैः प्रतीहारैः प्रतिषिद्धानुगमने निखिले समुत्सारिते परिजने केयूरकद्वितीय एव मन्दुरां प्रविवेश (क्ष)। उत्सारणभयसम्भ्रान्तलोचनेषु प्रणम्यापसृतेषु मन्दुरापालेषु, इन्द्रायुधस्य पृष्ठावगुण्ठनपटं किञ्चिदेकपार्श्वे

(स) आगृहीतेति। ऊर्द्ध्वस्थित एव दण्डायमान एव। क्रियमाणं प्रधानराजलोकैः प्रथमं विधीयमानमभिवादनादिकमनतिक्रम्य स्थितमिति यथाक्रियमाणं, कृतेन यथाक्रियमाणेन सम्मानेन प्रत्यभिवादनादिना मुदितं सन्तुष्टं। प्रधानराजलोकं सामन्तगणं। गन्धमादनं तन्नामानम् गन्धगजम्।

(ह) तत्रेति। निजनखांशुजालेन जटिलो विषमीकृतस्तम्, अतएव समृणालमिव मृणालसंयुक्तमिव, नखांशुजालस्य मृणालतुल्यत्वादिति भावः। अत्र गुणोत्प्रेक्षालङ्कारः। तस्मै गन्धमादनाय, अवकीर्य्य भक्षणाय विक्षिप्य। वल्लभानां तुरङ्गाणां या मन्दुरा शाला तदभिमुखः सन्। उभयतः उभयपार्श्वयोः। तिर्य्यग्वलितं पार्श्वयोः प्रवर्त्तितं वदनं येन सः, परिजनादीनामपसरणार्थमिति भावः।

(क्ष) अथेति। चित्तज्ञैरभिप्रायाभिज्ञैरित्यर्थः। प्रतिषिद्धमनुगमनं राजपुत्रानुसरणं यस्य तस्मिन्। समुत्सारिते समीपादपसारिते सति। मन्दुरामश्वशालां।

(क) उत्सारणेति। उत्सारणभयेन प्रतीहारकर्त्तृकवेत्रताडनभयेन सम्भ्रान्तानि चकितानि लोचनानि

কণ্ঠে ধারণ করিলেন। (ষ) এবং সেই তাম্বূলটি লইয়া কিছু কালের পর গাত্রোত্থান করিয়া, বামবাহুদ্বারা কেয়ূরকের স্কন্ধদেশ ধারণপূর্ব্বক দণ্ডায়মান থাকিয়াই, অভিবাদনকারী প্রধান রাজগণকে প্রত্যভিবাদন সম্মানে সন্তুষ্ট করিয়া বিদায় দিয়া, ধীরে ধীরে গন্ধমাদন হস্তীকে দেখিতে গেলেন। (স) এবং সেখানে কিছুকাল থাকিয়াই নিজেই, নখকিরণজালে উদ্ভাসিত, সুতরাং মৃণালযুক্তের ন্যায় দৃশ্যমান কতকগুলি শুষ্ক ঘাস, সেই গন্ধমাদনের সম্মুখে নিক্ষেপ করিয়া, প্রীতিভাজন অশ্বসমূহের গৃহাভিমুখে প্রস্থান করিলেন। যাইবার সময়ে চন্দ্রাপীড় দুই পার্শ্বেই অল্প অল্প মুখ ফিরাইয়া পরিচারকদিগের প্রতি দৃষ্টিপাত করিলেন।

(হ) তাহার পর দৌবারিকগণ চন্দ্রাপীড়ের মনের অভিপ্রায় বুঝিয়া, সকল পরিচারকদিগকে তাঁহার অনুসরণ করিতে নিষেধ করিয়া সরাইয়া দিলে, তিনি কেবল কেয়ূরকের সহিতই যাইয়া অশ্বশালায় প্রবেশ করিলেন। (ক্ষ) তখন অশ্বশালারক্ষকগণ, দৌবারিক-

---

(১) অবলম্ব্য। (২)...তুরঙ্গম...।

गलितं (१) समीकुर्वन्नुत्सारयंश्च कूणितनेत्रत्रिभागस्य (२) दृष्टिनिरोधिनीं कुङ्कुमकपिलां केसरसटां खुरधारिणी-(३) विन्यस्तचरणो लीलामन्दं मन्दुरादारु-दत्तदेहभरः सकुतूहलमुवाच—(क) "केयूरक! कथय, मन्निर्गमादारभ्य को वा वृत्तान्तो गन्धर्वराजकुले? केन वा व्यापारेण वासरमतिनीतवती (४) गन्धर्व-राजपुत्री? किं वाकरोन्महाश्वेता? किमभाषत वा मदलेखा? के वाभवन्नालापाः परिजनस्य? भवतो वा को व्यापार आसीत्? आसीद्वा काचिदस्मदाश्रयिणी कथा?।" (ख)

केयूरकस्तु सर्वमाचचक्षे—"देव! श्रूयताम्, निर्गते त्वयि हृदय-सहस्र-

---

येषां तेषु तादृशेषु, मन्दुरापालेषु अश्वशालारक्षकेषु प्रणम्य अपसृतेषु सत्सु। एकपार्श्वे किञ्चिद्गलितं इन्द्रायुधस्य पृष्ठावगुण्ठनपटं समीकुर्वन्नित्यन्वयः। कूणितः केसरपतनात् सङ्कोचितो नेत्रस्य त्रिभागस्तृतीयभागो येन तस्य तथोक्तस्य इन्द्रायुधस्य दृष्टिनिरोधिनीं, कुङ्कुमवत् कपिलां पिङ्गलवर्णां, केसरस्य सटा गुच्छीभूतत्वाज्जटा तां, उत्सारयन् नेत्रादपसारयन्। खुरधारिण्यां इन्द्रायुधखुराधारभूतकाष्ठपट्टिकायां विन्यस्तौ चरणौ येन सः, तथा लीलया मन्दं शनैर्यथा स्यात्तथा मन्दुरादारुणि अश्वशालास्थकाष्ठविशेषे दत्तो देहभरो येन सः।

(ख) केयूरकेति। गन्धर्वराजपुत्री कादम्बरी, वासरं दिनं, अतिनीतवती अतिवाहितवती।

(ग) केयूरक इति। सर्वमाचचक्षे बालकत्वेन सरलचित्तत्वादिति भावः। कन्यकान्तःपुरे, नूपुरचरणस्य

গণের বেত্র-তাড়নের ভয়ে চকিত-নয়নে প্রণাম করিয়া সরিয়া গেলে, চন্দ্রাপীড় ইন্দ্রায়ুধের পিঠের আবরণ-বস্ত্রখানা একপাশে কিছু বেশী সরিয়া যাওয়ায় তাহা সমান করিয়া দিলেন এবং নয়নের উপর আসিয়া কেসর পড়ায় ইন্দ্রায়ুধ সেই নয়নের তৃতীয়ভাগ সঙ্কুচিত করিতেছিল; তাই চন্দ্রাপীড় দৃষ্টি-নিরোধী ও কুঙ্কুমের ন্যায় পিঙ্গলবর্ণ সেই কেসরগুলিকে সরাইয়া দিলেন; তাহার পর খুরের আধার কাষ্ঠফলকের উপরে চরণযুগল বিন্যস্ত করিয়া, লীলাসহকারে ধীরে ধীরে অশ্বশালার কোন কাষ্ঠখণ্ডে দেহের ভর রাখিয়া কৌতুকের সহিত বলিলেন—(খ) "কেয়ূরক! বল, আমি নির্গত হইয়া আসিলে পর গন্ধর্ব্বরাজ-বাটীতে কি ঘটনা হইয়াছিল! গন্ধর্ব্বরাজনন্দিনী কাদম্বরীই বা কোন্ কার্য্যে দিন অতিবাহিত করিলেন? মহাশ্বেতাই বা কি করিলেন? মদলেখাই বা কি বলিলেন? পরিজনবর্গেরই বা কি আলাপ হইল? তোমারই বা কোন্ কার্য্য ছিল? এবং আমার সম্বন্ধে কোন কথা হইয়াছিল কি না?"

(গ) কেয়ূরক কিন্তু বালক বলিয়া সকলই বলিয়া ফেলিল; বলিল—"রাজপুত্র! শ্রবণ করুন,—আপনি নির্গত হইলে, কন্যাগণের হৃদয় আপনার সহিত প্রস্থান করিতে লাগিল;

---

(१) इन्द्रायुधपृष्ठावगुण्ठनपटं किञ्चिदेकपार्श्वे गलितं। (२) कूणितनेत्रत्रिभागां।
(३) खुरधीरणी...। (४) अवसरमतिनीतवती।

प्रयाण-पटह-कलकलमिव नूपुरचक्र-(१) क्वणितेन कन्यकान्तःपुरे कुर्वति, (२) देवी कादम्बरी सपरिजना सौधशिखरमारुह्य तुरगधूलिरेखाधूसरं देवस्यैव गमन-मार्गमालोकितवती (ग)। तिरोहितदर्शने च देवे, मदलेखा-स्कन्धनिहित-मुखी प्रीत्या तं दिगन्तं दुग्धोदधिधवलैः प्लावयन्तीव दृष्टिपातैः, सितातपत्रापदेशेन शशिनेर्ष्यया निवार्यमाणरविकरस्पर्शा (३) सुचिरं तत्रैव स्थितवती (घ)। तस्माच्च कथमपि सखेदमवतीर्य क्षणमिवावस्थानमण्डपे (४) स्थित्वोत्थाय स्खलनभियेव निवेद्यमानोपहारकुसुमा शब्दायमानैर्मधुकरैः, जलधारा-धवल-

---

कन्यकानां मञ्जीरसमूहस्य क्वणितेन शब्देन, हृदयसहस्रस्य कन्यकानामिव चित्तसमूहस्य यत् प्रयाणं भवता सह प्रस्थानं तस्य पटहकलकलो टक्काशब्दकोलाहलस्तं कुर्वतीव सति। तुरगस्य भवदश्वस्य धूलिरेखया धूलिपटलेन धूसरं, देवस्यैव भवत एव। अत्र क्रियोत्प्रेक्षालङ्कारः।

(घ) तिरोहितेति। किञ्च, देवे भवति तिरोहितदर्शने सति, मदलेखायाः स्कन्धे निहितं स्थापितं मुखं यया सा तादृशी कादम्बरी, प्रीत्या भवदनुरागेण, दुग्धोदधिवत् क्षीरोदसागरवत् धवलैर्दृष्टिपातैस्तं दिगन्तं प्लावयन्तीव सती, तादृशदृष्टिपातानामविरतत्वादिति भावः। अत्र लुप्तोपमाक्रियोत्प्रेक्षयोरङ्गाङ्गिभावेन सङ्करः। तथा ईर्ष्यया रविं प्रति स्पर्द्धया हेतुना, सितातपत्रापदेशेन श्वेतच्छत्रच्छलेन शशिना चन्द्रेण, निवार्यमाणो रवि-करस्पर्शो यस्याः सा तादृशी च सती, तत्र सौधशिखर एव सुचिरं स्थितवती। अत्र श्वेतच्छत्रमपह्नुत्य चन्द्रस्थापनादपह्नुतिरलङ्कारः।

(ङ) तस्मादिति। किञ्च, तस्मात् सौधशिखरात्, कथमपि कष्टेन, सखेदं भवद्विरहेण सकष्टं अवतीर्य, अवस्थानमण्डपे वासगृहे क्षणमिव स्थित्वा, उत्थाय, स्खलनभियेव अत्यन्तोन्मनस्कतया अलत्यमाणत्वा-देषूपहारकुसुमेषु कादम्बरी स्खलित्वा पतिष्यतीति भयेनेव, शब्दायमानैर्मधुकरैः निवेद्यमानानि स्वकीयरवैरेव विज्ञाप्यमानानि उपहारकुसुमानि यस्यै सा। अत्र हेतूत्प्रेक्षालङ्कारः। तथा केकारवैष तेषां मयूराणामिव

তাই কন্যান্তঃপুরটি নূপুরসমূহের শব্দে ঢক্কার কোলাহলই যেন করিতে লাগিল;—এমন সময়ে কাদম্বরীদেবী পরিজনবর্গের সহিত অট্টালিকার উপরে আরোহণ করিয়া, অশ্বের ধূলিতে ধূসরবর্ণ আপনারই গমন পথ দেখিতে লাগিলেন। (ঘ) তাহার পর যখন আপনাকে আর দেখা যাইতে লাগিল না, তখন কাদম্বরীদেবী মদলেখার স্কন্ধে, মুখমণ্ডল সংস্থাপন করিয়া, আপনার প্রতি স্নেহবশতঃ, ক্ষীরোদসাগরের ন্যায় ধবলবর্ণ দৃষ্টিপাতে সেই দিক্‌টাকে যেন প্লাবিত করিতে লাগিলেন এবং সূর্য্যের প্রতি ঈর্ষ্যাবশতঃ চন্দ্র, শ্বেত-ছত্র-চ্ছলে তাঁহার রৌদ্র নিবারণ করিতে লাগিলেন—এই অবস্থায় তিনি, বহুকাল যাবৎ সেই অট্টালিকার উপরেই অবস্থান করিতে লাগিলেন। (ঙ) তাহার পর তিনি কোন প্রকারে কষ্টের সহিত অট্টালিকার উপর হইতে অবতীর্ণ হইয়া, কিছুকাল বাসগৃহে অবস্থান করিয়া উঠিলেন; তাহার পর 'কাদম্বরী অন্যমনস্ক

---

(१)…नव…। (२) कुर्वन्ती। (३)…किरणस्पर्शा। (४) आस्थानमण्डपे।